इतिहास

कक्षा-6 में तुमने जाना था ....
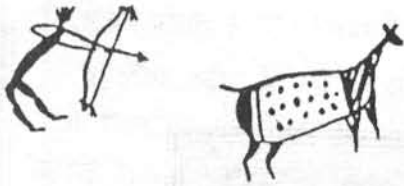
चित्र देखकर खाली स्थान भरो-

शुरू-शुरू में .... होते थे।

फिर कई जगहों पर उन्होंने .... शुरू की।

और कुछ जगहों पर .... ।

पिर कहीं-कहीं .... बसे।

सिन्धु नदी के मैदान में .... ।

फिर पशुपालक .... आए।
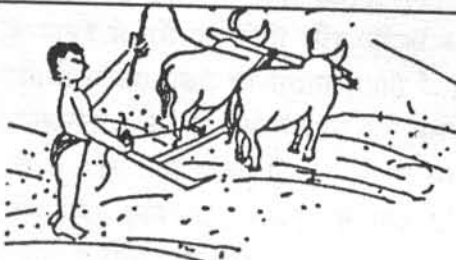
उन्होंने धीरे-धीरे ....

वे.............. करते थे।

मानचित्र 1 सोलह जनपद और अशोक का साम्राज्य

गांधार
कंबोज
कुरु
पांचाल
मत्स्य
यदु
कोसल
मल्ल
वज्जि
चेदी
वत्स
काशी
मगध
अंग
अवंती
अस्मक

Based upon Survey of India Outline map printed in 1979. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of 12 nautical miles measured from the appropriate baseline.

संकेत
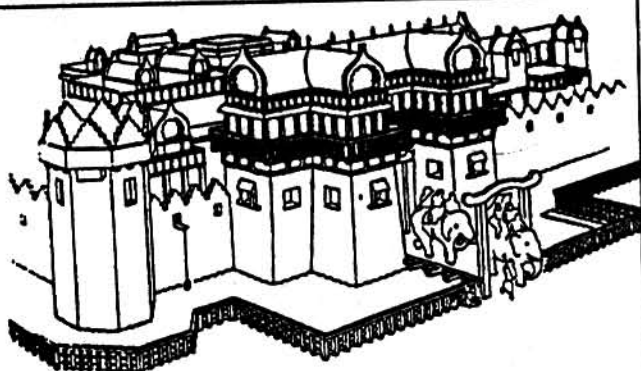
आज से 2500 साल पहले जनपद या राज्य गंगा यमुना नदियों के मैदान में व उसके आसपास बने थे। मानचित्र 1 में जनपदों का इलाका देखो। भारत में बाकी जगहों पर राजा नहीं थे। उन इलाकों में ज़्यादातर जंगल थे। कहीं-कहीं शिकारी लोग और कहीं-कहीं किसानों की छोटी-छोटी बस्तियां थीं।

मगध जनपद में अजातशत्रु और महापद्मनन्द जैसे राजा हुए। उन्होंने दूसरे जनपदों को हरा कर मगध का राज्य बहुत बड़ा बनाया। फिर मगध राज्य में मौर्य वंश के राजा हुए जैसे चन्द्रगुप्त, बिन्दुसार और अशोक। उन्होंने मगध के राज्य को बहुत दूर-दूर तक फैलाया। मानचित्र 1 में अशोक के समय में मगध राज्य की सीमा देखो। जनपदों के अलावा और कौन से इलाके मगध राज्य में आ गए थे?

1. महाराजाधिराज समुद्रगुप्त

(सन् 335 से सन् 375 तक शासन)

समुद्रगुप्त

राजा अशोक के लगभग 500 वर्षों बाद मगध में एक और बड़ा राजा हुआ। उसका नाम था समुद्रगुप्त। अशोक की तरह समुद्रगुप्त की राजधानी भी पाटलिपुत्र ही थी। मानचित्र - 2 में पाटलिपुत्र नगर पहचानो।

समुद्रगुप्त का सिक्का

समुद्रगुप्त द्वारा जारी किए गए सिक्कों में एक सिक्के का चित्र यहां देखो। इस सिक्के में राजा समुद्रगुप्त को वीणा बजाते दिखाया है। समुद्रगुप्त को संगीत में रुचि थी। उसके दरबार में अच्छे से अच्छे कवि और कलाकार हुआ करते थे। समुद्रगुप्त के बारे में जितनी ये बातें प्रसिद्ध हैं उतनी ही प्रसिद्ध हैं उसकी युद्ध विजय की बातें।

कवि हरिषेण

महाराजा समुद्रगुप्त ने किन राजाओं को युद्ध में हराया और उन राजाओं के साथ कैसा व्यवहार किया, यह पूरा वर्णन हमें हरिषेण देता है। हरिषेण समुद्रगुप्त के दरबार का एक अधिकारी और कवि था। उसने समुद्रगुप्त की प्रशंसा में एक लम्बी प्रशस्ति संस्कृत भाषा में लिखी।

इलाहाबाद का खम्भा

हरिषेण की लिखी गई प्रशस्ति एक लम्बे पत्थर के खम्भे पर खुदवाई गई। यह वह खम्भा था जिसके ऊपर राजा अशोक का संदेश भी खुदा हुआ था। यह खम्भा आजकल इलाहाबाद के किले में रखा हुआ है। इस तरह, इलाहाबाद के इस खम्भे से हमें दो बड़े राजाओं का परिचय मिलता है।

ऊपर दिए अंशों के 8 महत्वपूर्ण शब्दों को रेखांकित करो।

सन् 335 में समुद्रगुप्त राजा बना था। तब उसका राज्य बहुत छोटा था। आसपास बहुत सारे अन्य छोटे बड़े राज्य थे। इतने सारे राजाओं के बीच समुद्रगुप्त अपने मगध राज्य को मज़बूत बनाना चाहता था और अपना यश बढ़ाना चाहता था। इसके लिए उसने क्या प्रयत्न किया यह इलाहाबाद के खम्भे पर खुदा है।

आर्यावर्त के राज्य

प्रशस्ति में लिखा है-

"समुद्रगुप्त ने अपने अपार बाहुबल से आर्यावर्त के अनेक राजाओं को खत्म करके उनके राज्य को अपने राज्य में मिला लिया। ऐसे राजा थे - रुद्रदेव, मटिल, नागदत्त, चन्द्रवर्मन, गणपतिनाग, नागसेन, अच्युतनन्दिन और बलवर्म"

इन विजयों के कारण समुद्रगुप्त का राज्य आर्यावर्त में फैल गया। उन दिनों गंगा-यमुना नदियों के मैदान को आर्यावर्त कहा करते थे क्योंकि उस क्षेत्र में आर्य कबीले आकर बसे थे।

समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त के कितने राजाओं को हराया?

उन्हें हराकर क्या किया?

आर्यावर्त का क्षेत्र मानचित्र-2 में पहचानो।

इलाहाबाद के खंभे पर हरिषेण की लिखी प्रशस्ति

खम्भे की लिखाई पर ध्यान दो। क्या कोई अक्षर तुम्हारी पहचान का है?

इसमें संस्कृत भाषा में बातें लिखी हैं।

क्या आज भी संस्कृत इस लिखावट (लिपि) में लिखी जाती है?

दक्षिणापथ के राज्य

आर्यावर्त में सफल होने के बाद समुद्रगुप्त दक्षिण दिशा की ओर मुड़ा। नर्मदा नदी के दक्षिण में पड़ने वाला क्षेत्र उन दिनों दक्षिणापथ कहलाता था। तब क्या हुआ यह हरिषेण की लिखी प्रशस्ति के एक अंश मे पढ़ो। (गुरुजी यह अंश पढ़ कर सुनाएंगे। तुम मानचित्र-2 में उन जगहों को ढूंढते जाओ जिनका नाम इस अंश में आएगा)

"समुद्रगुप्त पराक्रमी होने के साथ-साथ उदार भी है। इस कारण उसने सारे दक्षिणापथ के राजाओं को युद्ध में हराकर उनके राज्य उन्हें लौटा दिए। ये दक्षिणापथ के राजा हैं - कोसल के राजा महेन्द्र, महाकान्तार के राजा व्याघराज, कुराल के राजा मण्टराज, पिष्टपुर के राजा महेन्द्रगिरि, कोट्टूर के राजा स्वामिदत्त, एरण्डपल्ल के राजा दमन, कांचीपुरम के राजा विष्णुगोप, अवमुक्त के राजा नीलराज, वेंगी के राजा हस्तिवर्मन, पालक्क के राजा उग्रसेन, देवराष्ट्र के राजा कुबेर और कुस्थलपुर के राजा धनंजय।"

इन विजयों के बाद दक्षिणापथ में भी समुद्रगुप्त से टक्कर लेने वाला कोई न बचा। समुद्रगुप्त सब राजाओं का राजा हो गया।

समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ के कितने राजाओं को हराया? गिनकर बताओ।

मौर्य राजाओं के समय में दक्षिणापथ

समुद्रगुप्त से 500 साल पहले मौर्य वंश के राजा भी इतनी दूर दक्षिण में राज्य बनाने आए थे (चन्द्रगुप्त, बिन्दुसार व अशोक), पर मौर्य वंश के राजाओं ने दक्षिणापथ क्षेत्र में इतने सारे राजाओं से लड़ाई नहीं की थी। उन दिनों, दक्षिणापथ में इतने सारे राजा थे ही नहीं। मौर्य वंश के राजा जब दक्षिणापथ आए तब वहां जो गांव और बस्तियां थीं उन पर वे अपने सैनिक और अधिकारी तैनात कर गए थे। पर, मौर्य राजाओं के 500 साल बाद, जब समुद्रगुप्त दक्षिणापथ में राज्य बनाने आया तो उसे इस इलाके में कितने राजाओं से युद्ध करना पड़ा!

समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ के राजाओं को हरा कर उनके साथ क्या नीति अपनाई? समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त के राजाओं के साथ क्या यही नीति अपनाई थी? स्पष्ट करो।

दक्षिणापथ में समुद्रगुप्त की नीति मौर्य राजाओं की नीति से कैसे फर्क थी? स्पष्ट करो।

Based upon Survey of India Outline map printed in 1979. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of 12 nautical miles measured from the appropriate baseline.

संकेत

(छायांकित)	समुद्रगुप्त का राज्य	⊙	शहर
△	गणसंघ	—·—	भारत की वर्तमान बाह्य सीमा
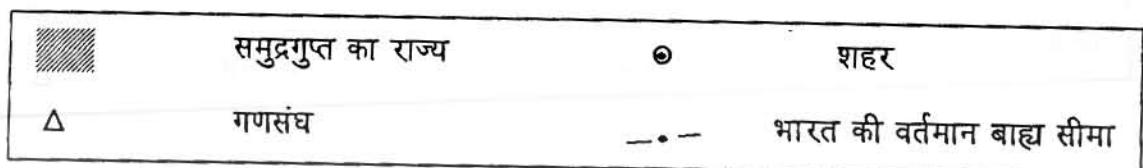
चित्र - 4 युद्ध के लिए तैयार सेना

पड़ोसी राजा और दूसरे देश के राजा

समुद्रगुप्त की विजय और सफलताओं के कारण उसका यश दूर-दूर तक फैलने लगा। वह बहुत पराक्रमी और बलवान राजा माना जाने लगा। दूसरे राजाओं पर इस बात का बहुत असर पड़ा। वे समुद्रगुप्त से बड़े प्रभावित हुए। इलाहाबाद के खम्भे पर खुदी प्रशस्ति में लिखा है-

"समुद्रगुप्त को खुश करने के लिए पड़ौसी राजा भेंट ले कर आते हैं। उसे प्रणाम करते हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं। ऐसे पड़ौसी राज्य हैं- समतट, डवाक, कामरूप, नेपाल और कर्त्रिपुर।"

इन पड़ौसी राजाओं को मानचित्र - 2 में ढूंढो।

मानचित्र-1 देखकर बताओ कि महाजनपदों के समय ये राज्य थे या नहीं।

इन राज्यों के राजा समुद्रगुप्त से युद्ध में हारे नहीं थे। फिर क्या सोच कर वे उसकी आज्ञा मानने लगे होंगे?

उस समय कई सारे गणसंघ भी थे। इन गणसंघों के लोग भी समुद्रगुप्त के लिए भेंट ले कर आने लगे। हरिषेण यह भी लिखता है कि दूर देश के राजा समुद्रगुप्त से दोस्ती करना चाहते थे, और उससे शादी ब्याह का संबंध बनाना चाहते थे।

यह सब पढ़ कर तो लगता है कि उन दिनों चारों तरफ समुद्रगुप्त का खूब रौब था, बहुत दबदबा था। पर इस बात से हमें ज़रूर सावधान होना चाहिए कि हरिषेण अपने राजा की प्रशंसा लिख रहा था तो शायद उसने कुछ बातें बढ़ा-चढ़ा कर लिखी होंगी। शायद समुद्रगुप्त का वास्तव में इतना प्रभाव न रहा हो।

अलग अलग नीतियां

पर, हरिषेण की प्रशस्ति हमें एक महत्वपूर्ण बात बताती है। हमें यह पता चलता है कि उस समय समुद्रगुप्त जैसा राजा अपने राज्य की ताकत बढ़ाने के लिए अलग-अलग नीतियों का उपयोग कर रहा था। उसने आर्यावर्त के राजाओं को हरा कर उनका राज्य अपने राज्य में मिला लिया। पर, दक्षिणापथ के राजाओं को हरा कर समुद्रगुप्त ने उनका राज्य उन्हें लौटा दिया।

इस बात का क्या तुम कोई कारण सोच सकते हो कि समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ के राजाओं का राज्य अपने राज्य में क्यों नहीं मिलाया?

क्या दक्षिणापथ के राज्य समुद्रगुप्त की राजधानी से ज़्यादा दूर थे?

हम देखेंगे कि समुद्रगुप्त के बाद आने वाले समय में भी राजा अपनी-अपनी ताकत बढ़ाने के लिए इस नीति का बहुत उपयोग करने लगे। दूसरे राजा को हराकर उसका राज्य लौटा देने की नीति महत्वपूर्ण बन गई।

समुद्रगुप्त ने एक अश्वमेघ यज्ञ किया। तब उसने ऐसे सिक्के जारी किये

गुप्त वंश के अन्य राजा

समुद्रगुप्त के बाद गुप्त वंश में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, कुमारगुप्त और स्कन्दगुप्त नाम के राजा हुए। उनके शासन काल में मध्य एशिया के हूण नाम के कबीलों ने कई बार हमला किया। गुप्त राजा हूणों से कई युद्धों में लड़े। पर धीरे-धीरे उनकी ताकत कमज़ोर होती गई। सन् 550 के लगभग गुप्त वंश का शासन खत्म हो गया।

अभ्यास के प्रश्न:

1. इलाहाबाद के खम्भे का परिचय दो। यह खम्भा क्यों महत्वपूर्ण है?
2. क-मौर्य राजाओं के समय दक्षिणापथ में क्या था- कई राज्य/ कुछ गांव व बस्तियां/ कई नगर? मौर्य राजाओं ने दक्षिणापथ में क्या किया?
   ख-समुद्रगुप्त के समय दक्षिणापथ में क्या था- कई राज्य/ कुछ गांव व बस्तियां/ कई नगर? उसने दक्षिणापथ में क्या किया?
3. क-हरिषेण के अनुसार समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ के राजाओं के राज्य क्यों लौटा दिये थे?
   ख-क्या तुम्हें समुद्रगुप्त की इस नीति का कोई और कारण समझ में आता है?
4. समुद्रगुप्त के बारे में वो छः बातें बताओ जो तुम्हें महत्वपूर्ण लगीं।
5. समुद्रगुप्त की कौन सी नीति, उसके बाद आने वाले राजा भी अपनाने लगे थे?

2 गांव ही गांव, खेत ही खेत

(सन् 100 से सन् 1000 तक की बात)

इस पाठ में दिए गए चित्रों को ध्यान से देखो। इनमें से क्या क्या बातें आज भी तुम अपने आसपास देख सकते हो?
किन किन इलाकों की खेती के बारे में इस पाठ में चर्चा होगी?

उन दिनों जब छोटे बड़े राजा महाराजा युद्ध क्षेत्र में लड़ रहे थे और अपने दरबार में कलाकारों और कवियों को बढ़ावा दे रहे थे- गांवों में किसान खेती सुधारने और बढ़ाने के परिश्रम में लगे थे। ये वो समय था जब लोग खेती फैला रहे थे। नए-नए खेतों के साथ नए-नए गांव बसा रहे थे। कई कबीले जो शिकार या पशुपालन किया करते थे वे भी खेती का काम अपनाने लगे थे। इन्हीं गांवों और खेतों पर अधिकार जमाने के लिए इतने सारे राजा लड़ रहे थे। इन्हीं खेतों की उपज से ली गई लगान से राजाओं के पास धन इकट्ठा हो रहा था। उस धन से ही दरबारों का ठाठ-बाठ था और कवियों व कलाकारों को बढ़ावा दिया जा रहा था।

तो चलो लड़ाई के मैदान और राज दरबारों की बातें छोड़कर हम यह बात करें कि उन दिनों खेतों में क्या हो रहा था, किसान क्या प्रयत्न कर रहे थे।

इस अंश में कही बातों को तीन वाक्यों में कहो।

शुरू में खेती-बाड़ी अक्सर नदियों के किनारे ही हुआ करती थी- ऐसी नदियों के किनारे जिनमें साल भर पानी रहता था। पर साल भर बहने वाले नदी-नाले तो बहुत कम थे। अधिकांश नदी-नाले बारिश के मौसम के बाद सूख जाते थे। ऐसे इलाकों में खेती फैलाना मुश्किल काम था। उन इलाकों में जब लोग खेती फैलाने की कोशिश करने लगे तो उन्होंने जहां तक संभव हो सिंचाई की व्यवस्था करने की कोशिश की।

चित्र-1 कई कबीले पहली बार खेती अपनाने लगे थे।

पठार में सिंचाई

जो लोग कर्णाटका, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु व महाराष्ट्र के पठारी इलाकों में खेती फैला रहे थे उन्होंने अपने यहां की ज़मीन के हिसाब से सिंचाई का एक उपाय ढूंढा। चित्र -2 में देख कर समझो कि पठारी इलाकों की ज़मीन कैसी थी और वहां किसानों ने सिंचाई की क्या व्यवस्था की।
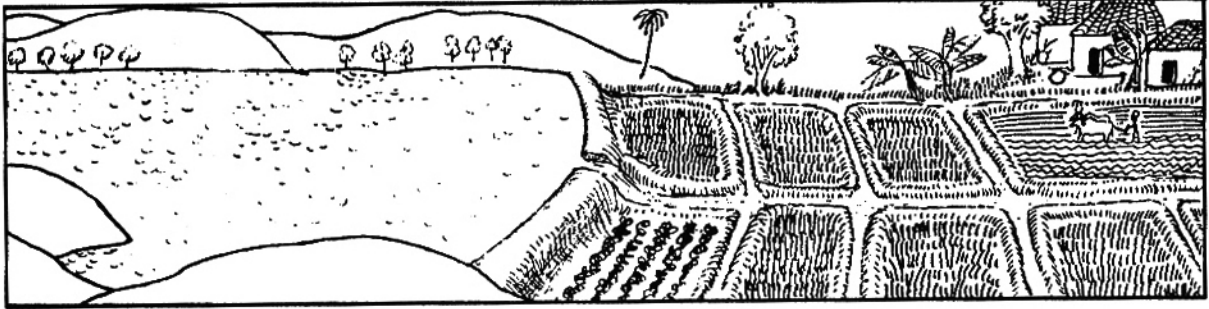
चित्र-2 पठार की ज़मीन और सिंचाई के तालाब।

भारत के मानचित्र में ऊपर बताए राज्यों को पहचानो।

मैदान में सिंचाई

भारत में सिर्फ पठार ही नहीं हैं। मैदानी इलाके भी हैं। मैदानी इलाकों में जो किसान खेती फैला रहे थे उन्होंने सिंचाई का क्या-क्या इन्तज़ाम किया - चित्र-3 में देखो।
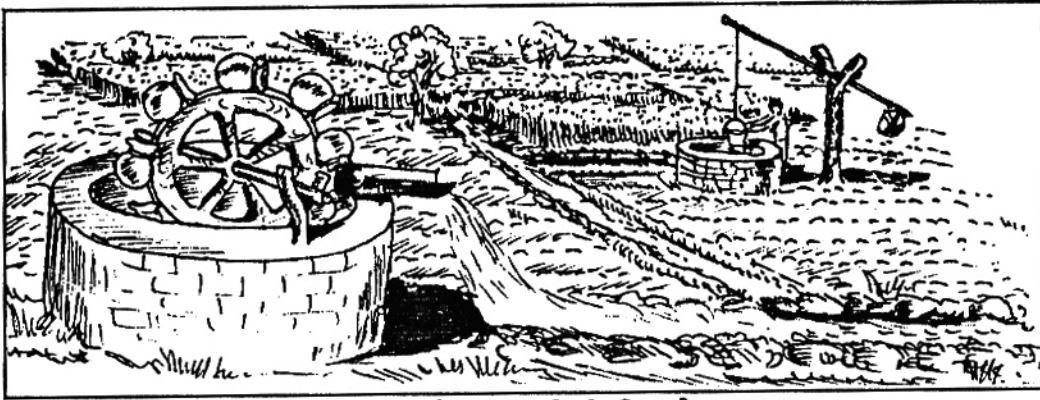
चित्र-3 मैदानी इलाके में सिंचाई।

मैदानी इलाकों में कौन से राज्य आते हैं, गुरुजी की मदद से, भारत के दीवार मानचित्र में देखो।

मैदानी इलाके के किसानों ने तालाब क्यों नहीं बनाए जबकि पठारी इलाके के लोगों ने बहुत तालाब बनाए थे? चित्र-2 और चित्र-3 में दिखाई ज़मीन की तुलना कर के उत्तर ढूंढो।

मैदानी इलाके के किसानों ने सिंचाई के लिए सैकड़ों कुएं व बावड़ियां खोदीं, पर पठारी भाग के लोगों ने ऐसा नहीं किया। पठार में कुआं खोदना कठिन होता है। मिट्टी के ठीक नीचे चट्टान होती है। चट्टान की दरारों में ही कहीं-कहीं

पानी भरा मिलता है। जबकि मैदानी इलाकों में ज़मीन के नीचे बालू व मिट्टी होती है। मिट्टी और बालू के बीच पानी भरा मिल जाता है। इसलिए कुएं बनाना आसान है। तुमने कक्षा-6 में "मैदान का एक गांव, कोटगांव" और "पठार का एक गांव, बालमपुर" के पाठ पढ़े थे। उन पाठों में तुमने यह बात विस्तार से समझी थी कि पठार और मैदान में सिंचाई के उपायों में क्या फर्क है।

उस पुराने समय के किसानों ने भी अपने अनुभव से अपने यहां की ज़मीन के अनुसार सिंचाई की विधियां ढूंढ ली थीं।

पानी खींचने के यंत्र

किसानों ने कुओं से पानी खींचने के तरीके भी ढूंढे। इसके लिए किसानों ने तरह-तरह के यंत्र बनाए। सबसे पहले शायद ढेंकली का उपयोग हुआ।

ढेंकली से पानी कैसे उठाया जाता है चित्र-4 से समझो।
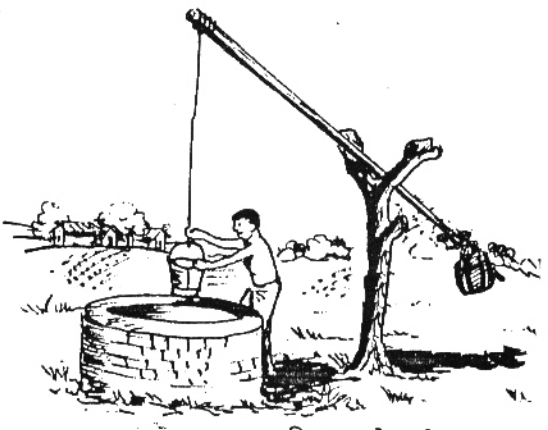
चित्र-4 ढेंकली

चित्र - 5 मोठ

फिर बैलों को जोतकर मोठ से पानी खींचा जाने लगा।

क्या तुम्हारे यहां ढेंकली और मोठ का उपयोग हुआ करता था? पता करो।

पुराने समय में तो ये ही सिंचाई के यंत्र थे। लोग लगातार बेहतर यंत्र बनाने की कोशिश करते रहे। एक नया यंत्र बना अरघट्ट।

अरघट्ट से पानी कैसे खींचा जाता था चित्र-6 देख कर समझो।

क्या तुम्हारे आसपास इस यंत्र का उपयोग होता था? इसे तुम्हारे क्षेत्र में क्या कहा जाता था?

सिंचाई के इन साधनों को बनाने और लगवाने में बहुत मेहनत और धन खर्च होता था। अधिकतर गांव के धनी लोग ही ये साधन जुटा पाते थे। बहुत से किसान बिना सिंचाई के ही खेती किया करते होंगे जैसे कि आज भी करते हैं।
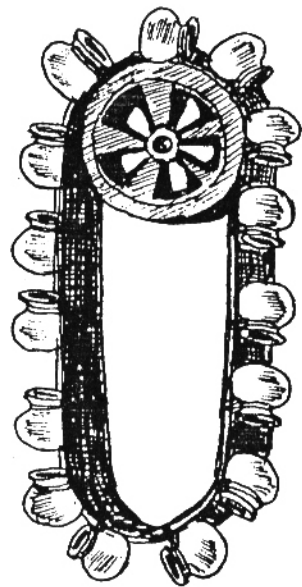
चित्र-6 अरघट्ट

चित्र-7 नदी के मुहाने पर बंधान और नहरों से सिंचाई

नदी का मुहाना

जो किसान नदियों के मुहानों पे रहते थे, उन्हें खेती फैलाने में पानी की बहुत सुविधा थी।

नदी समुद्र के पास आकर कई छोटी-छोटी धाराओं में फैलती हुई बहने लगती है। उसकी धाराओं में हमेशा काफी पानी रहता है। दूर से बह कर आई नदी बहुत सी मिट्टी साथ लाती है। यह मिट्टी नदी की धाराओं के पास बिछती जाती है। यह बहुत उपजाऊ मिट्टी होती है। नदी की धाराएं आगे जा कर समुद्र में मिल जाती हैं। यह इलाका नदी का मुहाना कहलाता है।

नदी के मुहाने पर जो किसान खेती फैला रहे थे उन्हें मिट्टी और खूब पानी का लाभ मिला था। लेकिन समस्या वहां भी थी। मुहाने पर इतना पानी जमा हो जाता था कि खेती करना मुश्किल हो जाता था। नदी की धाराओं में बाढ़ आती रहती थी।

भारत के नक्शे में तुम कुछ बड़ी नदियों के मुहाने ढूंढो। उन नदियों के नाम लिखो।

नदी के मुहानों के बारे में तीन सबसे महत्वपूर्ण बातें लिखो।

बंधान और नहरें

नदियों के मुहानों में बाढ़ पर काबू पाने के लिए किसानों ने धाराओं के किनारे बंधान बनाए ताकि खेतों में पानी न भरे। फिर बंधान में से नहरें निकालीं जिससे जितना पानी चाहिए उतना खेतों तक पहुंचे। (चित्र-7 देखो)

खेतों में फिर भी ज़्यादा पानी भर जाए तो उसके निकास के लिए गहरे नाले बनाए।

बड़े परिश्रम से इतने उपाय करने पर नदियों के मुहानों की उपजाऊ मिट्टी पर किसान साल में तीन-तीन फसलें भी लेने लगे। धान की फसल ऐसी जगहों पर बहुत होने लगी।

चित्र-8 पहाड़ी खेत

पहाड़ी इलाके

जो लोग पहाड़ी भागों में रहते थे वहां सिंचाई करना बड़ा कठिन था। क्योंकि, पानी तेज़ी से बह जाता था। पर वहां के लोगों ने भी खेती के प्रयास किए।

पहाड़ की ढलानों के बीच उन्होंने समतल ज़मीन ढूंढी और उसके जंगल व झाड़ साफ करके खेती की। जंगल में रहने वाले कबीलों ने ऐसी फसलें अपनाईं जो कम पानी में भी उग जाएं- जैसे कोदों, कुटकी, समा, ज्वार आदि। कई कबीलों के लोग इन फसलों की खेती करने लगे। खेती के साथ-साथ वे जंगल से शिकार और फल आदि भी लाते रहे। खेतों के आस-पास उनके छोटे-छोटे गांव भी बस गए।

तुमने कक्षा - 6 में पहाड़ पर बसे एक गांव 'पाहवाड़ी' का वर्णन पढ़ा था। पाहवाड़ी गांव में तुमने ऊपर बताई बहुत सी बातें पाई थीं।

क्या पहाड़ी इलाकों मे सिंचाई की व्यवस्था हो पाई थी?

वहां पर क्या-क्या फसलें उगाई जाने लगीं?

नए-नए गांव व शहर बने

इस तरह पुराने समय के किसानों के प्रयासों से कितने ही गांव बसे और खेतों की उपज बढ़ी। जिन इलाकों में एक समय घना जंगल रहा करता था वहां धीरे-धीरे, दो-तीन-चार सौ सालों में खेत और गांव नज़र आने लगे।लोगों की संख्या (जनसंख्या) पहले से ज़्यादा हो गई। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ी और गांवों की संख्या बढ़ी, वैसे-वैसे लोगों की ज़रूरत की चीज़ें बनाने वाले बहुत से कारीगर होने लगे। चीज़ें बेचने के लिए बहुत से व्यापारी होने लगे। तब गांवों के बीच छोटे-बड़े शहर भी उभर आए। शहरों में कारीगरों और व्यापारियों की चहल-पहल रहने लगी।

मानचित्र 1 में राजा अशोक के समय के शहर और गांव वाले इलाके दिखाए हैं। शहरों की बिन्दियों को लाल रंग करो। गांव के इलाकों को पीला रंग करो। जंगलों को हरा रंग करो।

अब मानचित्र 2 में सन् 1000 में भारत के जंगल, शहर और गांव वाले इलाके ध्यान से देखो। इस मानचित्र में भी नगरों की बिन्दियों को लाल रंग से रंगो। जंगलों को हरा और गांव के इलाकों को पीला रंगो।

दोनों मानचित्रों की तुलना कर के बताओ कि राजा अशोक के समय में भारत और सन् 1000 में भारत में क्या बदलाव दिख रहे हैं।
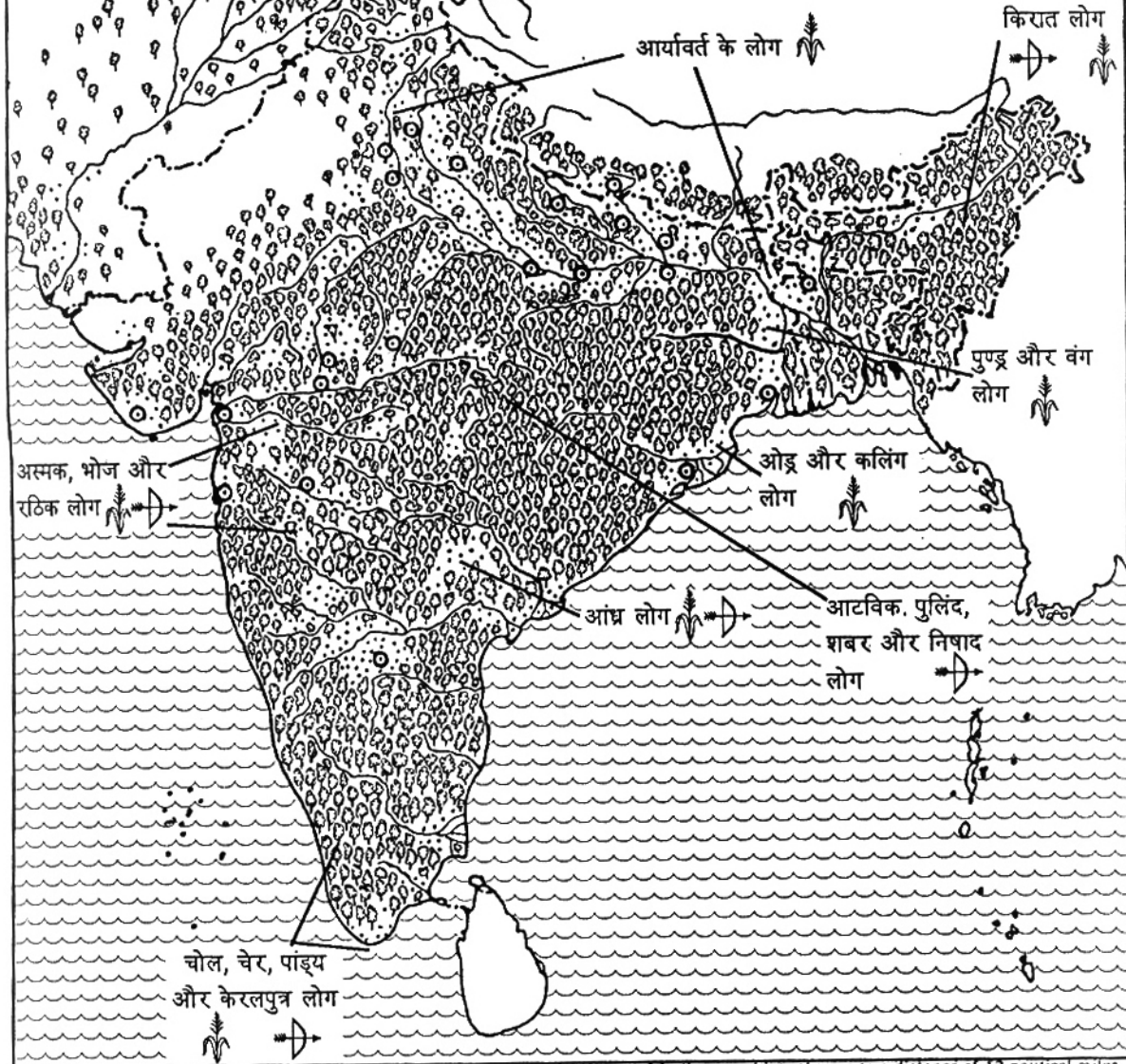
Based upon Survey of India Outline map printed in 1979. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of 12 nautical miles measured from the appropriate baseline.

संकेत

	भारत की वर्तमान बाह्य सीमा		गांव के इलाके
	जंगल		मुख्यतः खेती करते थे
⊙	शहर		मुख्यतः शिकार करते थे
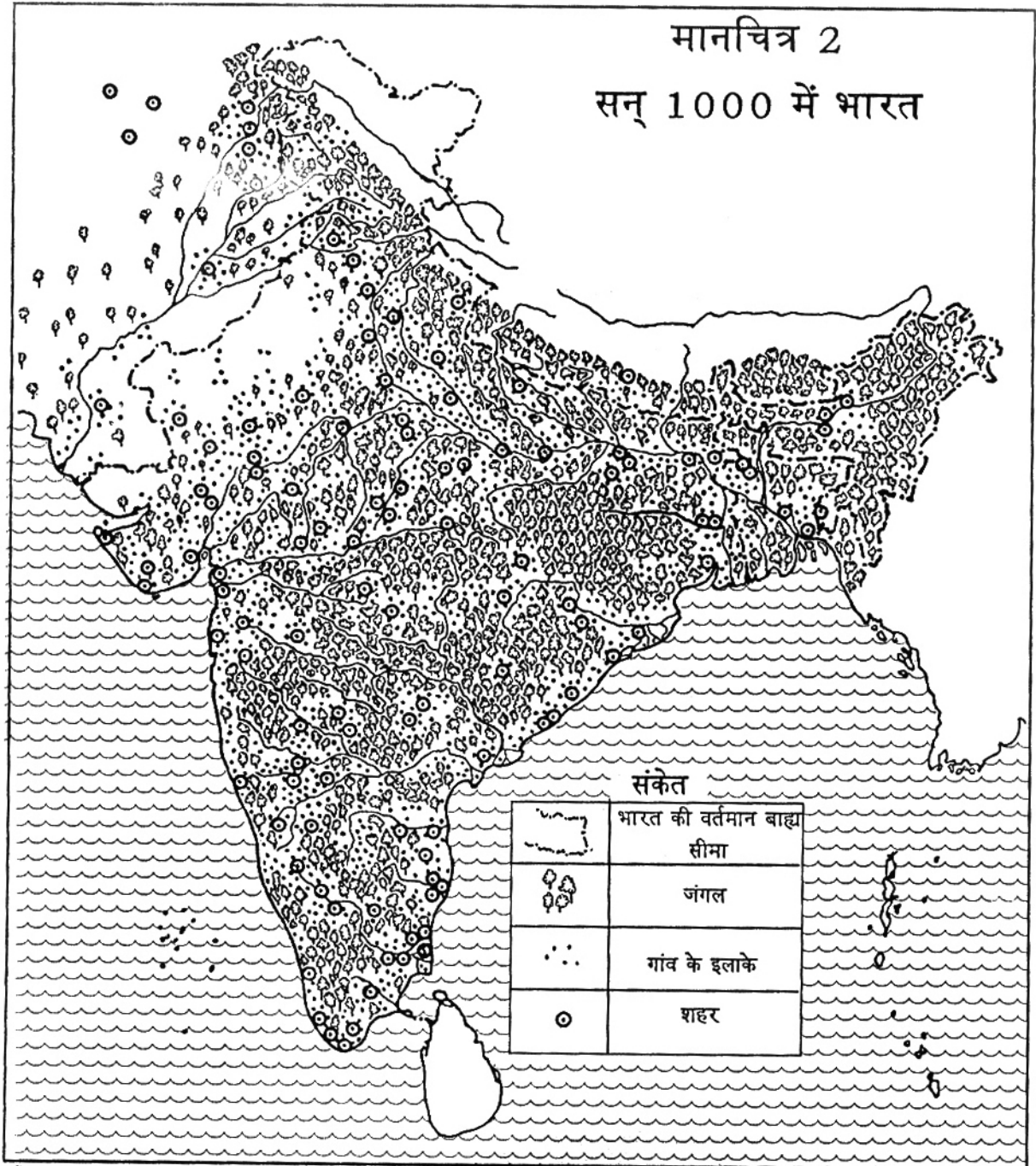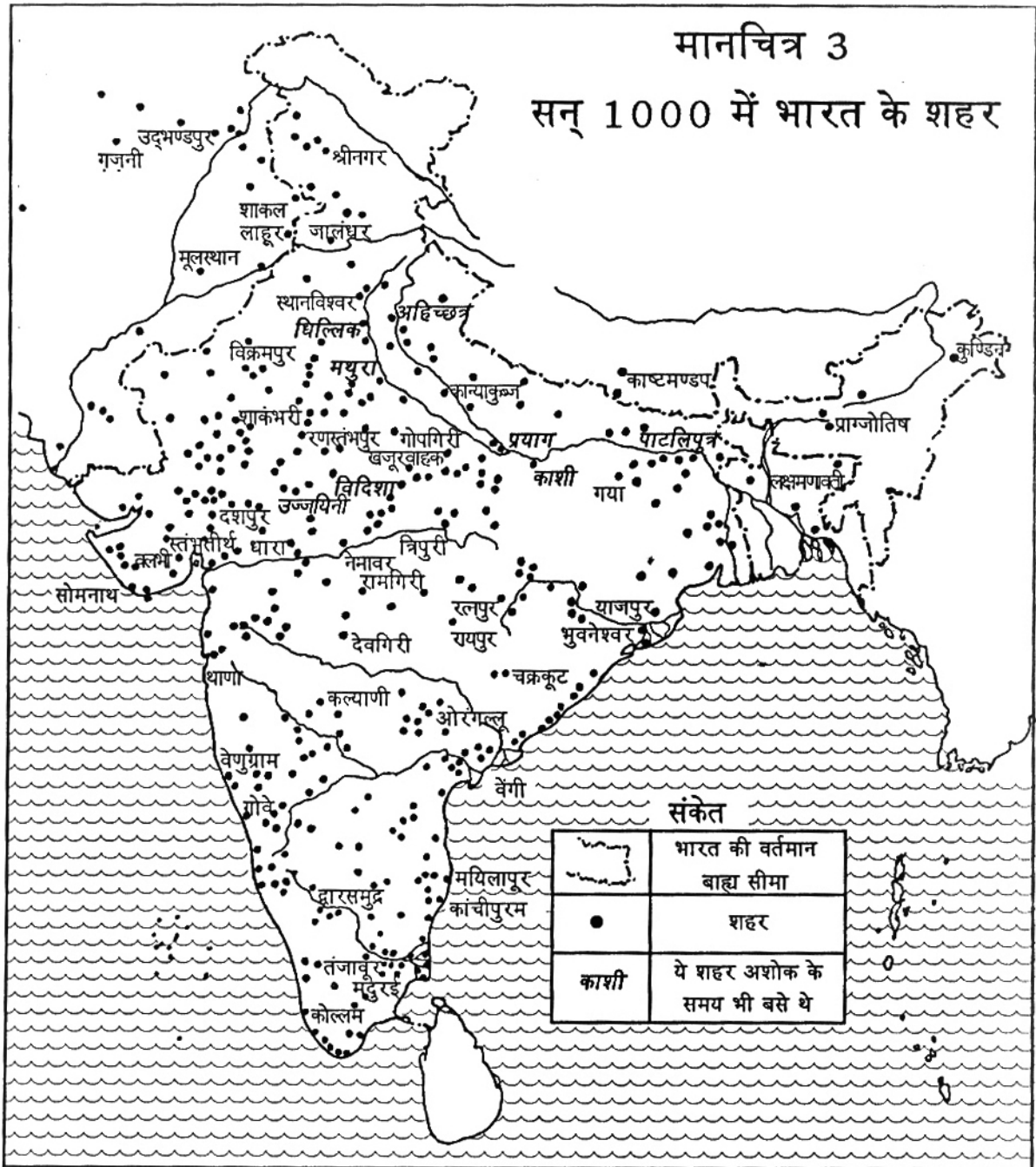
मानचित्र 2
सन् 1000 में भारत
संकेत
भारत की वर्तमान बाह्य सीमा
जंगल
गांव के इलाके
शहर

पैमाना : 1 से.मी. = 200 कि.मी.

मानचित्र 3 में उन शहरों के नाम लिखे हैं जो सन् 1000 में भारत में थे। इस मानचित्र में जंगल और गांव नहीं दिखाए हैं ताकि शहरों के नाम साफ-साफ लिखे जा सकें।

मानचित्र - 3 में नगरों के नाम देखो।

उन नगरों को पहचान कर सूची बनाओ जो राजा अशोक के समय में भी थे।

मानचित्र - 3 में दिख रहे बाकी सब नगर राजा अशोक के समय के बाद बसे। क्या इनमें से किसी नगर को तुम पहचानते हो? सन् 1000 में जो नगर बसे हुए थे उनमें से कई नगर आज भी बसे हैं।

मन करे तो पढ़ना......

हमें कैसे पता चलता है कि सचमुच हज़ार, डेढ़ हज़ार साल पहले कई तरह से सिंचाई की व्यवस्था की जाती थी? इस बात का प्रमाण उस समय के आलेखों से मिलता है- (आलेख का मतलब गुरुजी से समझो)।

जैसे: सन् 1209 में लिखे गये कर्णाटका राज्य से मिले एक आलेख का अंश-

"महाप्रधान कुमार पंडितैय के पुत्र बिट्टेय ने कालीदेव के उत्तर में एक तालाब बनवाया। और वहां अपने नाम से बिट्टेनहल्ली नाम का गांव बसाया। उसने एक और तालाब भी बनवाया- बिट्टेयसमुद्रम नाम का।"

अभ्यास के प्रश्न

1. पठारी इलाकों के किसानों ने सिंचाई का क्या इंतज़ाम किया ? पठार पर यह इंतज़ाम आसान क्यों था?
2. मैदानी भाग के किसानों ने सिंचाई का क्या इन्तज़ाम किया? मैदानों में यह इन्तज़ाम आसान क्यों था?
3. क) नदियों के मुहानों पर रहने वाले किसानों को क्या सुविधा थी और क्या कठिनाई थी?
   ख) उन्होंने खेती को सुधारने की क्या व्यवस्था की?
4. क) पहाड़ी इलाकों में कबीलों ने खेती किस तरह की?
   ख) क्या वे पूरी तरह खेती के सहारे जीने लगे?
5. सन् 1000 में नर्मदा नदी के दक्षिण में कितने शहर थे? राजा अशोक के समय में इस इलाके में कितने शहर थे?

3. राजवंशों का बनना

(सन् 400 से सन् 1200 की बात)

तुमने बहुत से राजाओं और राजपरिवारों के बारे में सुना होगा। पर सोचो, कोई राजा कैसे बनता होगा? अगर कोई परिवार यह कहे कि हम बाकी गांववालों पर राज करेंगे तो क्या लोग उनकी बात मानेंगे? इस विषय पर कक्षा में चर्चा करो। सब लोग अपनी अपनी राय दें। फिर इस पाठ को पढ़ना शुरू करो।

सन् 400 से सन् 1200 के बीच के समय में भारत में हर जगह पर राजा होने लगे थे। जिन जगहों पर पहले कभी राजा नहीं हुए थे वहां भी राजा बन गए थे। हर जगह पर राज़ा कैसे बने-आओ इसके बारे में कुछ सोचें और समझें।

धनी व ताकतवर परिवार

हर क्षेत्र में खेती फैल गई थी, हर क्षेत्र में घनी आबादी बस गई थी, खूब सारे गांव बस गए थे। जैसा कि होता है, हर इलाके में एक दो परिवार धनी और महत्वपूर्ण बनने लगे। शायद शुरू में उनका परिवार काफी बड़ा रहा होगा। उनकी खेती भी बड़ी रही होगी। ऐसे परिवारों की आसपास के क्षेत्र में धाक भी ज़रूर रही होगी। वे शायद लोगों को ज़रूरत के समय मदद कर देते थे और लोग अपने झगड़े व समस्याएं लेकर उनके पास आते थे।

ऐसे कई परिवार अपने क्षेत्र में सिंचाई के नए साधन लगा कर खेती भी फैलाते थे। वे अपने धन से कुएं, बावड़ियां, नहरें, तालाब बनवाते थे। वे नए इलाकों का जंगल साफ करके खेत बनवाते थे। नए गांव बसाते थे।

हर इलाके में एक दो परिवार धनी और ताकतवर बने।

धनी और ताकतवर लोगों ने राजा बनना चाहा।

वे दूसरे लोगों को इन नए गांवों में ला कर बसाते थे। इस तरह बसाए गए लोग ताकतवर परिवारों से दब कर रहा करते थे।

ताकतवर परिवारों की ज़मीन पर काम करने के लिए कई मज़दूर होते थे और उनकी सेवा में बहुत से नौकर चाकर रहा करते थे।

ऐसे बड़े परिवार आसपास के लोगों को डरा-धमका कर भी रखते होंगे ताकि सब लोग उनकी बातें सुनें।

इस तरह धीरे-धीरे हर क्षेत्र में वहां के बड़े परिवारों का स्थान मज़बूत होने लगा। शायद साधारण लोग ऐसे परिवारों को खुश रखने के लिए उन्हें खास मौकों पर भेंट भी लाकर देने लगे।

ताकतवर परिवारों की ताकत के दो कारण रेखांकित करो।

ताकतवर परिवारों का दूसरे लोगों पर क्या असर पड़ा-दो बातें रेखांकित करो।

धनी व ताकतवर परिवारों ने राजवंश बनने की कोशिश की

ऐसा लगता है कि धीरे-धीरे हर क्षेत्र के ताकतवर परिवार सोचने लगे- "क्यों न हम इस इलाके के राजा बनें? मौर्य वंश या गुप्त वंश की तरह हमारा भी वंश राजवंश बने? क्यों न हमारा परिवार इस क्षेत्र में राज्य करे और शासन चलाए और यहां के लोग हमें नियमित रूप से कर व लगान दें? फिर हम और धनी और ताकतवर हो जाएंगे।"

पर लोग किसी भी व्यक्ति को अपना राजा ऐसे ही तो नहीं मान लेते। लोग क्यों अपने बीच में से एक परिवार को राजवंश मानें? कई जगहों पर तो लोगों के बीच अपना कोई राजा पहले कभी हुआ ही नहीं था। इसलिए जब उनमें से कोई व्यक्ति पहली बार राजा बनने की कोशिश करने लगा तो उसे लोगों को मनवाने के लिए बहुत प्रयास करने पड़े।

ताकतवर परिवार चाहने लगे कि ....

उनके सामने समस्या थी कि ....

लोगों को मनवाने के लिए एक काम वे करने लगे। वे ऐसा बताने लगे कि वे महान ऋषियों, देवताओं और राजाओं के वंश के लोग हैं। इस समय भारत में हर क्षेत्र के राजा ऐसी बातें करने लगे। ऐसी बातों का एक उदाहरण पढ़ो। जबलपुर क्षेत्र में कलचूरी परिवार के लोग राजा बन रहे थे। वे अपने परिवार का परिचय इस प्रकार देते थे-

वंशों का परिचय अर्थात् वंशावलियां

"सबसे पहले विष्णु हुए। उनकी नाभी से ब्रह्मा का जन्म हुआ। उनसे जन्मे अत्री ऋषि। अत्री से जन्मे चन्द्रमा। चन्द्रमा से जन्मे बुध। उनसे जन्मे राजा पुरूरवस। पुरूरवस के कुल में भरत हुए। राजा भरत के कुल में हैहैय परिवार हुआ। हैहैय परिवार में राजा अर्जुन हुए। अर्जुन के कुल में कोक्कल का जन्म हुआ। कोक्कल ने कलचूरी वंश की शुरुआत की।"

कलचूरी वंश के लोग अपना संबंध किन देवताओं से बता रहे थे?

किस ऋषि से बता रहे थे?

किन राजाओं से बता रहे थे?

इसी तरह कई परिवार जो राज परिवार बनने की कोशिश कर रहे थे, अपने आपको चन्द्रवंशी पाण्डवों के वंश का बताते थे, कई लोग अपने आपको सूर्यवंशी
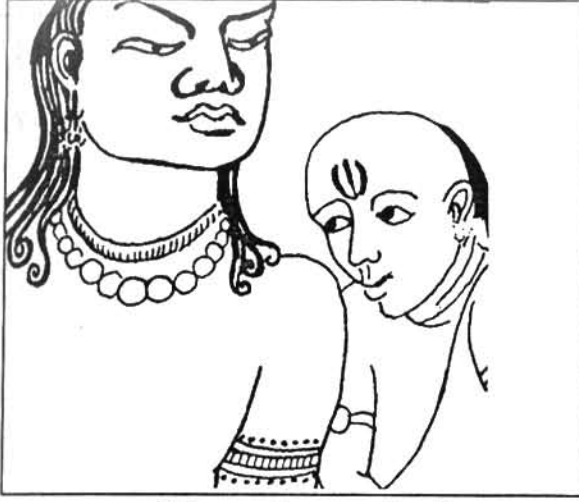
राजाओं ने ब्राह्मणों का सहयोग लिया

रामचन्द्र का वंशज बताने लगे तो कई परिवार यदुवंशी कृष्ण के वंश को अपना वंश बताने लगे। कुछ परिवार ये कहने लगे कि वे वशिष्ठ ऋषि के अग्नि कुण्ड से उत्पन्न हुए हैं।

हर क्षेत्र के धनी और महत्वपूर्ण परिवारों को ऐसी बातें कहने की ज़रूरत क्यों लग रही थी?

तुम्हारे विचार में वे इन बातों से लोगों पर क्या प्रभाव डालना चाहते थे?

शायद वे ताकतवर परिवार लोगों को विश्वास दिलाना चाहते थे कि वे बहुत ऊंचे और महान कुल के हैं। वे सोचते होंगे कि लोग तभी उन्हें राजा मानेंगे। तभी लोगों के मन में उनके प्रति भय और आदर का भाव बैठेगा। लोगों पर प्रभाव डालने की ज़रूरत रही होगी नहीं तो इस समय के सब नए-नए राजवंश अपने परिवार के बारे में ऐसी बड़ी-बड़ी बातें क्यों कहते?

ताकतवर परिवार अपने वंश का रिश्ता इन वंशों से बताने लगे थे ....

ब्राह्मणों का बसना

अपने परिवार के बारे में बड़ी-बड़ी बातें यूं ही नहीं कही जा सकती थीं। जब प्रतिष्ठित लोग उन बातों का समर्थन करें तभी लोगों पर इनका असर पड़ सकता था। राजाओं ने इस काम में ब्राह्मणों का सहयोग लिया।

ब्राह्मणों की बहुत प्रतिष्ठा थी। वे धर्म और ज्ञान को जानने वाले लोग थे। उन्हें राजकाज चलाने का भी लम्बा अनुभव था क्योंकि वे गंगा-यमुना के मैदान में रहते थे। गंगा-यमुना के मैदान में बहुत पहले से राजा हुआ करते थे। इसलिए ब्राह्मणों को राज्य की व्यवस्था करने का अनुभव था।

राजाओं ने दूर-दूर से प्रतिष्ठित ब्राह्मणों को बुलाकर अपने राज्य में बसाया। उन्हें अपने दरबार में बड़ा सम्मान दिया। बसने के लिए ब्राह्मणों को गांव और ज़मीन दान में दी।

जब राजा किसी ब्राह्मण को दान देते थे तो प्रमाण के लिए एक ताम्र-पत्र पर सारी बात लिखवा कर देते थे। (ताम्र-पत्र का अर्थ है तांबे का पट्टा) राजा ब्राह्मणों को दो तरह के दान देते थे - कभी-कभी वे दान में ज़मीन देते थे। इससे वह ब्राह्मण ज़मीन का पूरा मालिक बन जाता था।

कभी-कभी राजा ब्राह्मण को किसी गांव का लगान अपने पास रख लेने का अधिकार दे देते थे। यानी दान दिए गए गांव के किसान जो लगान राजा को देते थे, वे लगान राजा ब्राह्मण को दान कर देता था। इस तरीके से बहुत से ब्राह्मण बसाए गए।

राजाओं ने ब्राह्मणों को दान दे कर राज्य में बसाया
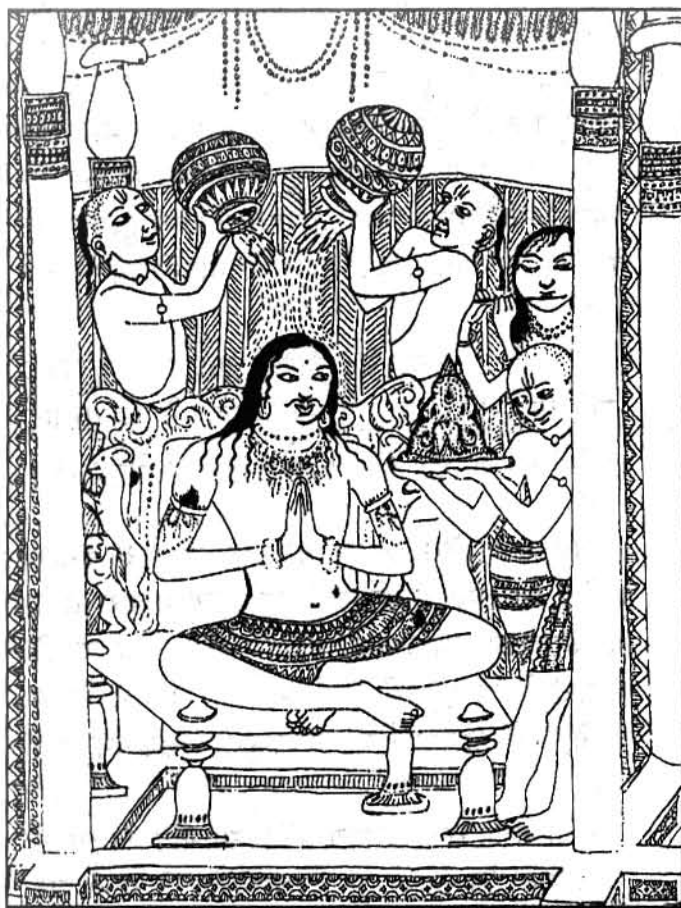
ब्राहम्ण मंत्रों के साथ राजा का अभिषेक करते हुए।

ब्राह्मणों का राजाओं को सहयोग

ब्राह्मणों ने राजाओं के लिए उनके परिवार का परिचय अर्थात् वंशावलियां तैयार कीं। ब्राह्मण जब किसी राजा को देवताओं और ऋषियों के कुल का बताते थे तो लोगों पर इस बात का असर पड़ता था।

ब्राह्मणों ने राजाओं को बड़े-बड़े यज्ञ करने में मदद की। ब्राह्मणों के सहयोग से उस समय के राजा अश्वमेघ और राजसूय जैसे बड़े यज्ञ करने लगे। ऐसे यज्ञ छोटे जनपदों के समय में ही होते थे। ब्राह्मण ऐसे प्राचीन यज्ञ फिर से करवाने लगे।

इससे भी लोगों पर ज़रूर असर पड़ा। राजाओं का दबदबा और रौब बहुत बढ़ा होगा।

ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा थी क्योंकि 1 ....
2. ....
ब्राह्मणों ने राजाओं को .... व ...... में सहयोग दिया।
ब्राह्मणों को दो तरह के दान मिले - पहले में वे .... के मालिक बने। दूसरे में उन्हें किसी गांव से राजा को मिलने वाला सारा .... मिलता था।

सेना

लोगों पर रौब जमाने के लिए हर जगह के ताकतवर परिवारों ने ये सब प्रयास किए। पर साथ ही साथ, वे अपनी सेना भी जुटाने लगे। उन्होंने हथियार, हाथी, घोड़े जुटाए और सैनिक रखे। लोग अगर उनकी बात न मानें तो उन्हें अस्त्र-शस्त्रों के बल पर डराया धमकाया जा सकता था।

जगह-जगह राजवंश हुए

इन तरीकों की सहायता से जब कोई धनी और महत्वपूर्ण परिवार 50-100 गांवों पर अपना अधिकार जमा लेता तो अपने आपको राजवंश कहने लगता था। उस परिवार का मुखिया राजा कहलाता था। राजा और उसके परिवार के लोग अपने अधिकार के गांव व शहरों पर हुकूमत करते। वे लोगों से लगान वसूल करने लगते, लोगों पर अपने आदेश चलाने लगते।

तुम आगे के पाठ में पढ़ोगे कि ये राजा और उनके परिवार के लोग किस तरह शासन चलाते थे।

कुछ परिवार या वंश सौ गांवों पर अपना अधिकार जमा पाए व राजा बन गए, तो कुछ परिवार 200-300 गांवों पर अपना अधिकार जमा पाए और अपने आपको महाराजा कहने लगे।

हर क्षेत्र में एक स्थानीय राजवंश उभर कर आ रहा था। इस सबका नतीजा तुम मानचित्र 1 में देखो। सन् 975 से 1250 के बीच भारत में जितने राजवंश थे यह उनका नक्शा है। देखो कि भारत के हर क्षेत्र में छोटे बड़े कई स्थानीय राजवंश थे।

मानचित्र 1
सन् 950 से1250 के बीच भारत के प्रमुख राजवंश

Based upon Survey of India Outline map printed in 1979. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of 12 nautical miles measured from the appropriate baseline.

पैमाना: 1 से. मी. = 200 कि. मी.
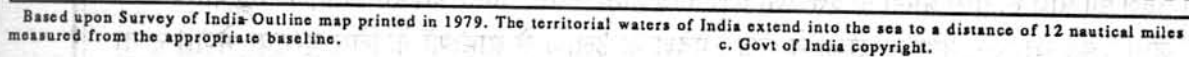
- भारत की वर्तमान बाह्य सीमा

गिन कर बताओ कि कुल कितने राजवंश थे?

(मानचित्र 1 में हर नाम के आगे नंबर डाल कर गिनो)

राजवंशों के नाम भी पढ़ो। तुम्हें कई राजवंशों के नाम जाने पहचाने लगेंगे क्योंकि उनके वंशज आज भी हैं और शायद तुम्हारी पहचान के लोगों में भी हों।

नक्शे में ढूंढो की तुम्हारी पहचान के ऐसे कौन-कौन से नाम हैं।

पहले से फर्क

राजा अजातशत्रु और राजा अशोक के समय की तुलना में यह समय कितना फर्क हो गया था। अजातशत्रु के समय में भारत के उत्तरी हिस्से में ही राजा हुए थे।

पर, सन् 1250 तक भारत के हर क्षेत्र में राजा हो गए थे। यह बात तुम पृष्ठ 98 के और पृष्ठ 117 के मानचित्रों की तुलना कर के जान सकते हो।

गुरुजी से चर्चा करो भारत के हर क्षेत्र में राजा बनने और हर क्षेत्र में खेती फैलने के बीच क्या संबंध हो सकता है?

ब्राह्मणों के इतिहास की कुछ बातें

दान की सहायता से कई सालों में भारत में हर जगह ब्राह्मण परिवार बस गए। शुरू में ब्राह्मण आर्य कबीलों के साथ हुआ करते थे। वे गंगा-यमुना नदियों के मैदान में रहा करते थे।

वे भारत के बाकी सब इलाकों को "पाप देश" समझते थे। उनका विचार था कि गंगा-यमुना के मैदान को छोड़कर बाकी जगहें ब्राह्मणों के बसने लायक जगहें नहीं हैं। जो ब्राह्मण कभी भूल से उन जगहों पर चला जाता तो उसे प्रायश्चित भी करना पड़ता था।

पर, सन् 400 से 1200 के बीच के समय में जब जगह-जगह के राजाओं से बुलावा आया, तो ब्राह्मण गंगा-यमुना का मैदान छोड़कर हर जगह बसने गए। जिन जगहों को एक समय में "पापदेश" मानते थे, वहां जा कर उन्होंने ज़मीन, गांव, धन और प्रतिष्ठा स्वीकार की।

उन ब्राह्मण परिवारों के वंशज शायद आज भी हमारे बीच हैं।

तुम जहां भी रहते हो वहां के ब्राह्मण परिवारों का इतिहास पूछो।

एक बार हमने अपने परिचय के एक दुबे जी से बातों-बातों में पूछा कि वे होशंगाबाद के पास कब व कैसे आ कर रहने लगे। उन्होंने अपने परिवार की कहानी बताई। वे बोले कि बहुत समय पहले की बात है। मध्य प्रदेश के इस इलाके में कोई ब्राह्मण नहीं रहता था। यहां गोंड, कोरकू आदिवासी लोग रहते थे। फिर यहां के राजा ने उत्तर प्रदेश के इलाके से ब्राह्मणों के लिए बुलावा भेजा। राजा के बुलावे पर दुबे जी के पूर्वज यहां आकर बसे। राजा ने उन्हें बसने के लिए ज़मीन दी।

तुम अगर पूछताछ करोगे तो शायद तुम्हें भी कुछ परिवारों की ऐसी कहानी पता चलेगी। हो सकता है तुम्हें किसी ब्राह्मण परिवार के पास दान का ताम्रपत्र ही मिल जाए!

मन करे तो पढ़ना......

ब्राह्मणों को दिए गए दान का उदाहरण

गुजरात में अलीना नाम की जगह से यह ताम्रपत्र मिला। यह सन् 766 में जारी किया गया था-

"परमभट्टारक महाराजधिराज परममाहेश्वर शीलादित्य ध्रुवभट ने महिलबलि नाम का गांव दान में दिया। यह गांव उपलहेट पाथक में बसा है और आनंदपुर के रहने वाले ब्राह्मण भट्ट आखण्डलमित्र को दान में दिया जाता है, ताकि वे बलि, चरू, वैश्वदेव, अग्निहोत्र व अतिथि सत्कार के यज्ञ कर सकें। यह दान उन्हें सब अधिकारों के साथ दिया जाता है। उन्हें गांव के किसानों से लगान लेने का हक है, उनसे बेगार करवाने का हक है, अपराधियों से जुर्माना लेने का हक है, भाग, भोग, कर, हिरण्य जैसे करों की वसूली करने का हक है। दान दिए इस गांव की तरफ कोई राजकीय अधिकारी हाथ भी नहीं उठाएगा। जब तक चांद और सूरज चमकेंगे तब तक आखण्डलमित्र और उसके वंशज इस गांव को भोग सकते हैं........यह दान पत्र ज्येष्ठ माह के शुक्लपक्ष की पंचमी को लिखा गया......"
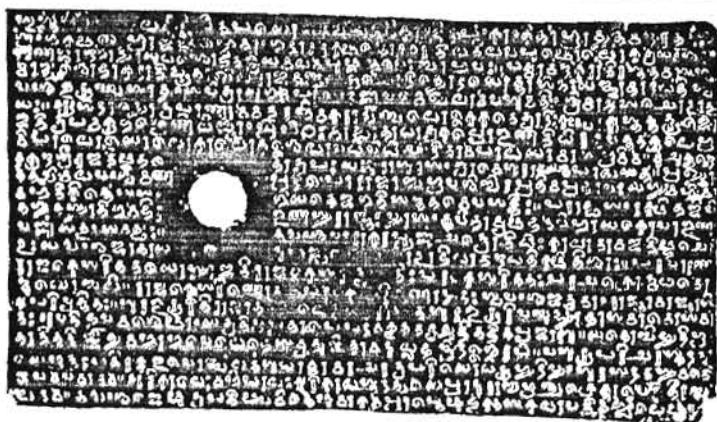
एक ताम्र-पत्र का चित्र

अभ्यास प्रश्न

1. हर क्षेत्र में कैसे परिवार तांकतवर बने? उनके बारे में तीन चार बातें लिखो।
2. अपने परिवार को महान और ऊंचा बताने के लिए ताकतवर परिवारों ने क्या कहा? इस काम में उन्होंने किस की सहायता ली?
3. राजाओं ने ब्राह्मणों को अपने राज्य में क्यों बुलाया?
4. राजाओं ने ब्राह्मणों को किस तरह का दान दे कर बसाया?
5. क) ताकतवर परिवारों ने राजवंश बनने के लिए कौन-कौन से तरीके अपनाए - तीन तरीकों का वर्णन करो।
   ख) क्या आज तुम्हारे गांव या शहर का कोई ताकतवर परिवार इन तरीकों को अपना कर राजा बन सकता है?

4. सामन्त राजा और अधिपति राजा

(सन् 400 से सन् 1200 की बात)

कई सारे युद्ध

सन् 400 और सन् 1200 के बीच के समय में भारत के हर क्षेत्र में बहुत सारे राजा हो गए थे। इन राजाओं के बीच आए दिन युद्ध हुआ करता था। जो राजा छोटे थे वे दूसरे छोटे राजाओं को हरा कर बड़ा बनना चाहते थे। और जो राजा बड़े थे वे दूसरे बड़े राजाओं कों झुकाना चाहते थे। जगह-जगह युद्ध का डंका बजने लगा। अपने देश के इतिहास में पहली बार हर जगह इतनी सारी लड़ाईयां हुई होंगी। युद्ध भूमि में हज़ारों लाखों सैनिक मारे जाते थे। पर इसके अलावा, विजयी सेनाएं हारे हुए राज्य के गांवों-शहरों को लूटती और जलाती जाती थीं। युद्ध से चारों ओर तबाही मचती रहती। गांवों व शहरों के साधारण लोग कई कष्ट झेलते थे।

युद्ध से चारों ओर तबाही मचती रहती थी

हारे और जीते राजाओं का रिश्ता

आओ यह जानें कि राजा, जिनके चाहने पर युद्ध लड़े जाते थे- वे जीतने पर क्या-क्या लाभ पाते थे, और हारने पर क्या-क्या नुकसान उन्हें भुगतना पड़ता था। तुम सोच रहे होगे कि जीतने वाले राजा को फायदा ही फायदा होता होगा। वह हारे हुए राजा के राज्य को अपने राज्य में मिला लेता होगा। वहां अपने अधिकारियों को भेजकर लगान इकट्ठा करवाता होगा। उसके पास इस तरह से बहुत धन जमा हो जाता होगा। पर आश्चर्य की बात है कि उन दिनों विजयी राजा हमेशा ऐसा नहीं करते थे। वे पराजित राजा का राज्य अपने राज्य में नहीं मिलाते थे। आमतौर पर वे हारे हुए राजा को उसका राज्य लौटा देते थे।

यह नीति तुमने किस राजा को अपनाते हुए पाया था?

सन् 400 से 1000 के बीच के समय में युद्ध में हारे हुए राजाओं को आमतौर पर अपने राज्य वापिस मिल जाते थे। पर, बदले में उन्हें कुछ शर्तें माननी पड़ती थीं। सबसे पहली बात, पराजित राजा को यह स्वीकार करना पड़ता था कि विजयी राजा उसका स्वामी है और वह विजयी राजा के चरणों में रहने वाला सेवक है। विजयी राजा अधिपति कहलाता था।

पराजित राजा उसका सामन्त कहलाता था। यह दिखाने के लिए कि वह किसी राजा का सामन्त है, पराजित राजा को अपने नाम के आगे यह बात लिखनी पड़ती थी।

उपाधियां

सामन्त राजा कैसे यह बात अपने नाम के आगे लिखते थे इसका एक उदाहरण पढ़ो। इस उदाहरण में सामन्त राजा का नाम क्षितिपाल है। क्षितिपाल भोजदेव नाम के राजा का सामन्त है। इनके नाम के पहले जो कुछ लिखा है वो इन राजाओं की उपाधि है।

उपाधि का अर्थ गुरुजी से समझो। उपाधि के कुछ उदाहरण अपने आस पास की बातों में से जानो।

आओ अब राजा क्षितिपाल और राजा भोजदेव की उपाधियों के उदाहरण पढ़ो-

"परमभट्टारक परमेश्वर महाराजाधिराज श्री भोजदेव के चरणों में रहने वाले महासामन्त महाराजाधिराज श्री क्षितिपाल का शासन था।"

भोजदेव की उपाधि क्या थी- उसके नीचे रेखा खींचो।

क्षितिपाल की उपाधि क्या थी- उसके नीचे रेखा खींचो।

इन दोनों राजाओं की उपाधियों से कैसे पता चलता है कि कौन अधिपति राजा है और कौन सामन्त राजा है?

उपाधियों में फर्क रखना बहुत महत्वपूर्ण बात समझी जाती थी। सामन्त राजा आमतौर पर अपने लिए छोटी उपाधि लगाते थे और अधिपति राजा के नाम के आगे लंबी चौड़ी उपाधि लगाई जाती थी। इसी से पता चलता था कि कौन सा राजा ज़्यादा शक्तिशाली माना जाता था। सामन्त राजा अपने राज्य में जब कोई हुकुम जारी करता तो वह अपनी घोषणा में यह ज़रूर कहता कि वह किस अधिपति राजा का सेवक है।

तुमने शुरू से अभी तक जो अंश पढ़ा उसमें चार महत्वपूर्ण वाक्य रेखांकित करो।

युद्ध क्षेत्र में राजा अपने सामन्तों के साथ

भेंट और सेना की सेवा

सामन्त बनने पर हारे हुए राजा को और भी कई शर्तें माननी पड़ती थीं। उसे अधिपति राजा के प्रति अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिए उसके दरबार में समय-समय पर मूल्यवान भेंट भेजनी पड़ती थी। मौके-मौके पर वह खुद अधिपति राजा के दरबार में हाज़िर होता था।

सामन्त राजा का यह कर्त्तव्य बनता था कि जब भी अधिपति राजा मांग करे तब उसे सेवा में हाजिर होना पड़ेगा। खास कर जब अधिपति राजा कोई युद्ध लड़ रहा हो तो वह अपने सामन्त को संदेश भेज सकता था कि आप अपनी सेना ले कर मेरे लिए लड़ने आइए। सामन्त राजा अपनी सेना ले कर अधिपति के लिए लड़ने जाता था।

राजा अजातशत्रु के समय और सन् 400 के बाद के समय में तुलना

सन् 400 से भी बहुत पहले के समय में जो राजा हुए थे- राजा अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त मौर्य आदि- वे जब युद्ध में किसी राजा को हराते थे तो उसे राज्य लौटा कर सामन्त नहीं बनाते थे। वे हारे हुए राजा को हटा देते थे और उसके राज्य को अपने राज्य में मिला लेते थे।

सन् 400 के बाद के समय में राजाओं के बीच व्यवहार बदल गया था। सन् 400 के बाद के समय में हारे हुए राजा को सामन्त बना दिया जाता था। विजयी राजा उसका राज्य अपने राज्य में मिलाता नहीं था।

फायदे और नुक्सान की जांच

सामन्त बनाने की नीति से विजयी राजाओं को क्या मिलता था- यह तुमने पढ़ा। पर क्या सामन्त बनाने से विजयी राजा का कुछ नुक्सान भी होता था? वे क्या सोच कर सामन्त बनाने का फैसला करते थे? आओ यह बात समझने के लिए एक कहानी पढ़ें।

चलो हम मान लें कि हम चालुक्य साम्राज्य की राजधानी कल्याणी के राजमहल में पहुंच गये। वहां राजा का दरबार लगा हुआ था। चालुक्य राजा सिंहासन पर बैठा था। उसके दोनों ओर उसके प्रमुख सामन्त, सेनापति, मंत्री और अधिकारी बैठे थे।

राज दरबार में चर्चा

राजसभा में इस विषय पर चर्चा चल रही थी कि कदंब वंश के राजा के साथ कैसा व्यवहार किया जाये। कुछ ही दिनों पहले चालुक्य राजा कदंब राजा को युद्ध में हराकर बंदी बनाकर लाया था।

सभा के कुछ लोग कह रहे थे कि कदंब राजा को मार डाल कर उसके राज्य को चालुक्य राज्य में मिला लेना चाहिए। जबकि दूसरों का कहना था कि कदंब राजा को सामन्त बनाकर उसे उसका राज्य वापिस कर देना चाहिए।

चालुक्य राज्य के एक कोषाध्यक्ष कह रहे थे, "महाराजाधिराज, मुझे लगता है कि हमें कदंब राज्य को अपने राज्य में मिला लेना चाहिये। कदंब राज्य में बहुत अच्छे संपन्न गांव हैं, वहां प्रसिद्ध बंदरगाह हैं जिनमें देश-विदेश के व्यापारी व्यापार करने आते हैं। इनसे खूब सारा कर वहां के राजा को मिलता है। अगर हम इस राज्य को अपने राज्य में मिला लें तो हमें यह सारा कर प्राप्त होगा। इससे हम बहुत धनी हो जायेंगे।"

एक सेनापति खड़े होकर बोले, "राजन् इस धन से हम खूब सारे घोड़े, और नए-नए शस्त्र खरीदकर अपनी सेना को और मज़बूत कर सकते हैं। इसलिए मुझे भी लगता है कि कदंब राज्य को अपने राज्य में मिला लेना चाहिये।"

अब एक उच्च अधिकारी उठकर बोले, "महाराज, मैं इनकी बात से सहमत नहीं हूँ। अगर हम कदंब राज्य को अपने राज्य में मिला लें तो हमें वहां का प्रशासन चलाने के लिए नए अधिकारियों को नियुक्त करना पड़ेगा। कर वसूली के लिए कर्मचारियों को नियुक्त करना पड़ेगा। वहां हमें अपनी सेना को भी तैनात करना पड़ेगा। ज़रा सोचिए इस सबसे कितना खर्चा बढ़ेगा। जो भी कर वहां के गांवों व बंदरगाहों से मिलता है, इसी खर्च में खप जायेगा।"

एक सामन्त खड़े होकर बोला, "महाराजाधिराज, यह बात सही है। अगर आप कदंब राज्य को अपने राज्य में मिलाएंगे तो आपका खर्च बढ़ेगा। पर अगर आप कदंब राजा को अपना सामन्त बना लें तो वह समय-समय पर आपको भेंट देता रहेगा। आपको बिना किसी खर्च के धन मिलता रहेगा।"

एक और मंत्री बोला, "राजन, एक खतरे पर ध्यान दीजिये। अगर हम कदंब राजा को सामन्त बनाकर उसका राज्य लौटा दें तो हो सकता है कि वह फिर से शक्तिशाली बनकर विद्रोह कर दे या फिर हमारे ही राज्य पर हमला कर दे। इसलिए उसे मार डाला जाए और उसका राज्य अपने राज्य में मिला लिया जाए।"

वह सामन्त फिर बोला, "नहीं महाराज, मुझे लगता है कि कदंब राज्य को अपने राज्य में मिलाने से हमारी

कठिनाईयां बढ़ जायेंगी। हम कदंब राजा को मार भी दें, फिर भी कदंब वंश तो बहुत बड़ा वंश है- पूरे कदंब राज्य में इस वंश के लोग फैले हैं। अगर हम उनके राज्य को अपने राज्य में मिला लेंगे तो इस बात की पूरी संभावना है कि कदंब वंश के लोग राज्य वापिस पाने के लिए बगावत शुरू कर देंगे। फिर हमारा टिकना मुश्किल हो जायेगा। हमारी भलाई इसी में है कि हम कदंब राजा को न मारें, उसे उसका राज्य लौटा दें और समय-समय पर उससे भेंट लेते रहें। ज़रूरत पड़ने पर वह हमारी सैनिक सहायता भी करेगा। जब कभी युद्ध होगा तो कदंब राजा हमारी मदद के लिए अपनी सेना के साथ आयेगा।"

कोषाध्यक्ष फिर उठकर बोले, "महाराज, मुझे अभी भी लगता है कि हमें कदंब राज्य को अपने राज्य में मिलाना चाहिए। कदंब राजा को सामन्त बनाने पर हमें जो भेंट मिलेगी या सेना की सहायता मिलेगी वह कितनी सी होगी? इस ज़रा सी भेंट और सैनिक सहायता के बदले में हम कदंब राज्य का सारा धन अपने हाथ से जाने दे रहे हैं। सामन्तों का क्या भरोसा, आज एक तरफ हैं तो कल दूसरी तरफ।"

एक और सामन्त बोला, "महाराजाधिराज पूरे भारत वर्ष में आपका नाम प्रसिद्ध है- सब ओर लोग कहते हैं चालुक्य सम्राट एक महान राजा है- अनेक प्रमुख राजवंश उसकी महानता को स्वीकार करते हैं। अगर आप कदंब राजा को भी अपना सामन्त बना लेंगे तो आपका यश और बढ़ेगा। लोग कहेंगे पुराने और जाने माने कदंब वंश के राजा भी चालुक्य राजा के सामन्त हैं।" इस तरह वाद-विवाद, चर्चा चलती रही।

अगर तुम चालुक्य राजा की जगह होते तो तुम क्या निर्णय लेते - सोचकर बताओ और साथ ही कारण भी चार वाक्यों में लिखो।

सन् 400 से 1200 के बीच के समय में जो कई सारे छोटे बड़े राजा थे- वे सामन्त बनाने की नीति ही अपनाते थे।

अभ्यास के प्रश्न

1. क) उपाधियों से कैसे पता चलता था कि कौन सा राजा सामन्त था और कौन सा राजा अधिपति था?
   ख) मान लो कि राजा जयसिंह राजा भरत सिंह का सामन्त था। इन दोनों के नाम के आगे इनकी उपाधियां लगाओ। और अब उन पर एक वाक्य बनाओ।
2. क) राजा अजातशत्रु के समय में एक राजा उससे हार गया। अजातशत्रु का उससे क्या रिश्ता रहा होगा?
   ख) सन् 800 की बात है। राजा गांगेय राजा भोज से हार गया। राजा भोज और गांगेय का रिश्ता कैसा होगा-वर्णन करो।
3. कहानी से तुम्हें दोनों बातें समझ में आईं। सामन्त बनाने के पक्ष वाली बातें और सामन्त बनाने के खिलाफ वाली बातें।

   कहानी के आधार पर यह तालिका भरो-

सामन्त बनाने में क्या फायदे थे	पर क्या नुकसान थे
1.	
2.	
3.	

अपने राज्य में मिलाने से क्या-क्या फायदे होते	पर क्या नुकसान होते
1.	
2.	
3.	

5. कुछ महत्वपूर्ण राजवंश और कुछ महत्वपूर्ण बातें

(सन् 600 से सन् 1100 के बीच)

एक चीनी यात्री

"यहां अनाजों में धान और गेहूं बहुत होता है। अदरक, सरसों, तरह-तरह की ककड़ी और लौकी होती है। प्याज़ और लहसन बहुत कम उगाया जाता है क्योंकि बहुत कम लोग उन्हें खाते हैं। आमतौर पर दूध, मक्खन, घी, चीनी, गुड़, सरसों का तेल और रोटी खायी जाती है। मछली, बकरी, हिरन आदि का मांस भी खाया जाता है। मगर गाय, गधा, हाथी, घोड़ा, सुअर आदि का मांस खाना सख्त मना है।"

ये सब बातें आज से 1350 साल पहले एक चीनी यात्री ने लिखी थीं। उसका नाम ह्यून् त्सांग था। वह भारत में सन् 630 में आया और कई वर्ष यहां के गांव व शहरों की यात्रा की।

ह्यून् त्सांग बौद्ध धर्म के बारे में अध्ययन करने के लिए हज़ारों मील की कठिन यात्रा करके भारत आया। हां! उस समय तक बौद्ध धर्म मध्य एशिया और चीन तक फैल गया था। उन देशों से कई ऐसे यात्री भारत आते थे। ह्यून् त्सांग ने कई वर्ष तक नालंदा के प्रसिद्ध बौद्ध विहार में अध्ययन किया।

भारत के विभिन्न प्रदेशों और राजाओं के बारे में उसने अपनी पुस्तक में लिखा है। उस समय यहां तीन प्रमुख राजा थे, हर्षवर्धन, पुलकेशिन और महेन्द्रवर्मन।

सन् 600 से सन् 750 के बीच

कन्नौज नगर में राजा हर्षवर्धन शासन करता था। उसने सन् 606 से 647 तक शासन किया। पूरे उत्तर भारत में उसका आधिपत्य बन चुका था। वह अनेकों राजाओं को युद्ध में हरा चुका था। वह दक्षिण भारत पर भी विजय पाना चाहता था। मगर वहां का राजा पुलकेशिन हर्ष को रोकने में सफल रहा।

पुलकेशिन चालुक्य वंश का था और वह वातापि शहर से शासन करता था। वह भी अपना राज्य बढ़ाना चाहता था। उसने सन् 608 से 642 तक शासन किया। वह अपनी सेना के साथ दक्षिण की ओर बढ़ा। उसने कई राजाओं को हराया। फिर वह कांचीपुरम पहुंचा।

ह्यून् त्सांग

एक ताम्रपत्र पर खुदा हर्ष का हस्ताक्षर। इसमें लिखा है- "स्वहस्तो मम महाराजाधिराज श्री हर्षस्य।"

कांचीपुरम में महेन्द्रवर्मन पल्लव वंश का राजा था। वह बहुत शक्तिशाली राजा था। पुलकेशिन ने उसे भी हरा दिया। महेन्द्रवर्मन सन् 600 से 630 तक शासन करता था। कुछ वर्षों के बाद महेन्द्रवर्मन के बेटे नृसिंहवर्मन ने पुलकेशिन को हराकर मार डाला और वातापि शहर को लूटकर जला डाला।

ये राजा लड़ाई में व्यस्त तो रहते थे, मगर साथ ही वे कला और साहित्य में भी रुचि रखते थे- हर्ष के दरबार में बाणभट्ट नामक संस्कृत का कवि रहता था और कांचीपुरम में दण्डिन नाम का कथाकार हुआ करता था।

हर्ष को बौद्ध धर्म से बहुत लगाव था। चीनी यात्री ह्यून् त्सांग से उसकी गहरी दोस्ती थी। उसने बौद्ध भिक्षुओं और विहारों को खूब धन दान में दिया।

तुम्हें याद होगा बौद्ध धर्म के साथ जैन धर्म भी विकसित हुआ था। सन् 600 तक जैन धर्म भी पूरे भारत में फैल चुका था और बहुत लोग उसे मानने लगे थे। राजा पुलकेशिन और महेन्द्रवर्मन दोनों जैन धर्म को मानते थे।

पर इस समय कुछ नए धर्म भी उभरकर आ रहे थे- जैसे वैष्णव धर्म (विष्णु की भक्ति) और शैव धर्म (शिव की भक्ति)। राजा महेन्द्रवर्मन ने अप्पर नामक एक शैव संत के प्रभाव में आकर जैन धर्म छोड़ दिया और शैव धर्म अपना लिया। उसने और उसके बेटे नृसिंहवर्मन ने बड़ी-बड़ी चट्टानों को खुदवाकर बहुत सुन्दर मंदिर भी बनवाये।

पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट वंश (सन् 750 से सन् 1000)

सन् 750 से 1000 के बीच भारत में तीन बड़े साम्राज्य बने- एक बंगाल में पाल वंश का साम्राज्य, दूसरा उत्तर भारत में प्रतिहार वंश का साम्राज्य और तीसरा महाराष्ट्र में राष्ट्रकूट वंश का साम्राज्य। तीनों शक्तिशाली साम्राज्य थे और इनका आपस में लगातार संघर्ष चलता रहा। तीनों भारत में सर्वे-सर्वा बनना चाहते थे। मगर हरेक को दूसरे दो राजाओं का सामना करना पड़ता था। कोई

मिट्टी के फलक पर बना युद्ध का चित्र

भी राजा बाकी दोनों को हराकर सर्वे-सर्वा नहीं बन सका। इन राज्यों की लड़ाई लगभग 250 वर्ष चलती रही और इसी के कारण तीनों की शक्ति नष्ट हो गयी।

सन् 1000 से 1200 के बीच

दूर दक्षिण में तमिलनाडु में एक बड़ा शक्तिशाली राज्य बना। चोल वंश के इस साम्राज्य के प्रमुख राजा थे- राजराज चोल (सन् 985 से 1014 तक) राजेन्द्र चोल (सन् 1014 से 1044) और कुलोत्तुंग चोल (सन् 1070 से 1118)। इन्होंने न केवल दक्षिण भारत के राजाओं को हराकर अपने साम्राज्य का विस्तार किया बल्कि श्रीलंका, मलेशिया, इंडोनेशिया के राज्यों को भी हराकर अपने अधिकार में किया। इन राजाओं ने बड़े ही खूबसूरत मंदिर बनवाए।

उसी समय मध्यप्रदेश में परमार वंश के राजाओं ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। इस वंश का सबसे प्रसिद्ध राजा था- भोज। भोज ने सन् 1000 से 1035 तक शासन किया। भोज एक पराक्रमी राजा होने के साथ-साथ विज्ञान और साहित्य और वास्तु कला (यानी इमारतें बनाने की कला) में गहरी रुचि रखता था। राजा भोज ने उस समय के यंत्रों (मशीनों) पर एक पुस्तक भी लिखी थी। उसने अपनी राजधानी धारा में सरस्वती का मंदिर बनवाया जहां आये दिन विद्वानों की चर्चा चलती रहती थी। यह इमारत आज भोजशाला के नाम से प्रसिद्ध है।

इसी समय अफगानिस्तान में एक शक्तिशाली राजा बना जिसका नाम था- महमूद गज़नी। वह सन् 997 से 1010 तक बार-बार उत्तर भारत के राज्यों पर आक्रमण करके धन लूटकर जाता था। महमूद के राज्य में एक बड़ा विद्वान था जिसका नाम था अलबिरूनी। वह गणित, खगोलशास्त्र, (यानी तारों और ग्रहों का ज्ञान) और अलग-अलग धर्मों का गहराई से अध्ययन करना चाहता था। उसने सुना था कि भारत में गुप्त राजाओं के समय में गणित और खगोलशास्त्र के बड़े विद्वान हुए थे। वह उनकी किताबों का अध्ययन करने के लिए भारत आया। यहां आकर अलबिरूनी ने संस्कृत सीखी और कई वर्ष जगह-जगह जाकर पुरानी पुस्तकों का अध्ययन किया। फिर अपने देश में लौटकर उसने सन् 1030 में एक किताब लिखी जिसमें उसने भारत के लोग, उनके धर्म, रीति-रिवाज़, विज्ञान, गणित, और खगोलशास्त्र आदि के बारे में लिखा।

एक नया शब्द सीखो

"समकालीन" : इसका अर्थ है "समान काल का" यानी "उसी समय का"। जैसे राजा हर्ष और चीनी यात्री ह्यून् त्सांग एक ही समय में थे।

हम कह सकते हैं- हर्ष और ह्यून् त्सांग समकालीन थे। तुम हर्ष के समकालीन नहीं हो - सही है ना?

इन वंशों का समकालीन कौन था- सूची में से छाँटो-

चालुक्य वंश का समकालीन -

पाल वंश का समकालीन -

परमार वंश का समकालीन -

सूची : अलबिरूनी, महेन्द्रवर्मन, ह्यून् त्सांग, राजेन्द्र चोल, राष्ट्रकूट वंश, हर्ष, प्रतिहार वंश, महमूद गज़नी।

अभ्यास के प्रश्न

1. सन् 600 से सन् 750 के समय में किन प्रमुख राजाओं के बीच युद्ध हुए?
2. सन् 750 से सन् 1000 के समय में किन प्रमुख वंशों के बीच युद्ध हुए?
3. क) सन् 600 से सन् 1000 के बीच किन पुराने धर्मों का प्रभाव था? किन नए धर्मों का प्रभाव बढ़ने लगा?
   ख) नए धर्मों का प्रभाव बढ़ने लगा था- इस बात का क्या उदाहरण तुमने पढ़ा?
4. सन् 600 से सन् 1200 के बीच किन देशों के यात्री भारत आए? उनके नाम क्या थे? वे भारत क्यों आए थे?
5. किस वंश के राजाओं ने भारत के बाहर भी अपना राज्य बनाया? कहां पर ?
6. राजा भोज का राज्य किस क्षेत्र में था? उसकी राजधानी क्या थी? वह किन बातों में रुचि रखता था?

6. उत्तर भारत के गांव व भोगपति

(सन् 700 से सन् 1200)

नए-नए राजवंश जिस समय बन रहे थे उस समय गांव वालों का जीवन कैसा रहा होगा? उन दिनों के गांव आज के गांवों से बहुत फर्क थे। तब गांवों में कहीं भी बिजली, ट्रैक्टर या मोटर देखने को नहीं मिलती थी। मगर इन बातों के अलावा एक और बड़ा अन्तर था। उन दिनों उत्तर भारत के अधिकांश गांवों पर भोगपतियों का अधिकार था। भोगपति कौन थे- वे गांव में क्या करते थे- चलो आगे पढ़कर देखें।

राजवंशों के समय में अधिकारी

उस समय राजा अपने सगे संबंधियों को ही ऊंचे पदों पर नियुक्त करता था। राज्य के बड़े अधिकारी व सेनापति राजा के वंश के लोग या उसके रिश्तेदार ही होते थे। इसलिए उन्हें राजपुत्र भी कहा जाता था। उन अधिकारियों को तरह-तरह की उपाधियां दी जाती थीं। जैसे, राणा, रावत, ठाकुर आदि।

राजा इन अधिकारियों व सेनापतियों को निश्चित वेतन नहीं देता था। वेतन के बदले में राजा उनसे कहता था, "तुम इन दस गांवों पर भोगपति बनकर भोग करो।" या "तुम इन चालीस गांवों पर भोगपति बनकर भोग करो।" इस तरह वेतन के बदले में राजा अपने अधिकारियों को यह अधिकार देता था कि वे कुछ गांवों व शहरों की लगान अपने पास रखकर भोगें।

भोगपति और गांव

जब राजा ऐसा कहता तो वह भोगपति अपने भोग के गांवों में जाकर अधिकार जमाता। वह उन गांवों के किसानों से उनकी फसल का एक बड़ा हिस्सा लगान के रूप में ले लेता था। साथ ही किसी न किसी बहाने नए-नए कर ज़बरदस्ती इकट्ठा करता था। शादी-ब्याह पर, पेड़ काटने पर, मछली मारने पर, ढोरों पर, घरों पर, अरघट्ट व कुओं पर, यात्रा करने पर, ऐसे किसी भी बहाने भोगपति गांव से कर वसूल करता था। वह गांव वालों से तरह-तरह के काम बिना वेतन दिए भी करवाता था।

राजा के अधिकारी उसके .... होते थे।

राणा, रावत, ठाकुर .... थीं।

उन्हें वेतन के रूप में .... मिलते थे।
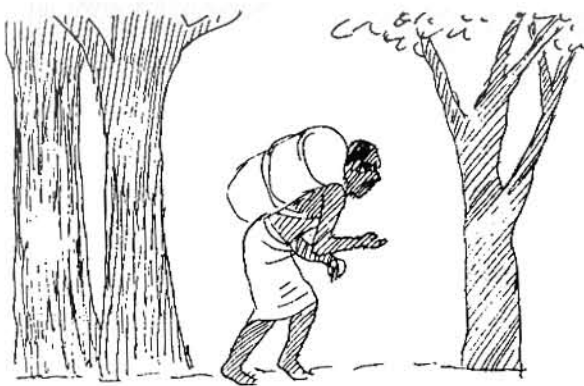
भोगपति गांव वालों से बेगार करवाते थे

तब और आज

ज़रा सोचो तुम्हारे गांव या शहर में कोई ऐसे आकर रौब जमाये तो क्या हो? लोगों को कितनी मुसीबत झेलनी पड़ेगी!

वो दिन आज से काफी फर्क थे। आजकल यह निश्चित होता है कि सरकार लोगों से कौन से कर लेती है और कर में कितने पैसे लेती है। इस बात का कानून संसद और विधान-सभा में बनता है। सरकार या सरकारी अधिकारी जब जो चाहें, लोगों से वसूल नहीं कर सकते। मगर उन दिनों ऐसा नहीं था। तब राजा, राणा व ठाकुर लोगों से मनमाने कर वसूलते थे।

गांव का मुखिया

राणा व ठाकुरों के लिए गांव से कर कौन इकट्ठा करता था? यह काम गांव के मुखिया का था। मुखिया गांव वालों से कर इकट्ठा करके भोगपतियों (राणा-ठाकुरों) तक पहुंचाता था। इस काम के बदले उसे कई फायदे मिले हुये थे। मुखिया को अपनी जोत पर कर देने से छूट थी। वह गांव वालों से अपने लिए अलग से कुछ कर भी इकट्ठा कर सकता था।

आजकल गांव से लगान (या तौजी) इकट्ठा करने का काम कौन लोग करते हैं? उन्हें इस काम के लिए क्या मिलता है?

लगान का उपयोग

कर में मिले धन व सामान का भोगपति क्या किया करते थे? क्या वे इस धन को राजा तक पहुंचा देते थे?

नहीं ! उन्हें अधिकार था कि वे अपने भोग के गांवों से मिले करों को अपने पास ही रखें। आखिर यही उनका वेतन था- राजा तो उन्हें अलग से कोई वेतन नहीं देता था। गांव से मिले धन को राणा व ठाकुर अपनी इच्छानुसार खर्च कर सकते थे।

वे इस धन से अपने लिए बड़े महल व किले बनवाते थे। अपने लिए कीमती व बढ़िया अस्त्र-शस्त्र व घोड़े खरीदते थे। बड़े-बड़े मंदिर बनवाते थे। इन सब कामों के लिए वे अपने भोग के गांववालों से बेगार करवाते थे। गांववालों को भोगपति के आदेश पर उसके महल, किले, मंदिर बनवाने पड़ते- इसके लिए उन्हें कोई मज़दूरी नहीं दी जाती थी।

जब भी कोई राणा या ठाकुर गांव से गुज़रता तो लोगों को उसकी खातिरदारी करनी पड़ती थी और उसका सामान ढोना पड़ता था।

कभी-कभी ये भोगपति गांव में कुएं, बावड़ी, अरघट्ट या तालाब भी बनवाते थे- ताकि सिंचाई बढ़े। इसके बदले में वे किसानों से खेती के उत्पादन का कुछ हिस्सा ले लेते थे।

राणा व ठाकुर मंदिरों व मठों को अक्सर "दान" दिया करते थे। पर दान के लिए वे हमेशा अपना धन खर्च नहीं करते थे। वे अपने भोग के गांव वालों से कहते- "आपके गांव के प्रत्येक हल पर या अरघट्ट पर कुछ सिक्के या अनाज मंदिर में मेरे नाम से हर साल जमा करिये।"

इस प्रकार के बहुत से शिलालेख हमें सन् 700 से लेकर सन् 1200 तक मिलते हैं।

भोगपति गांव वालों से किस तरह का व्यवहार करते थे- इस विषय में चार वाक्य रेखांकित करो।

राजा के अधिकारी और भोगपति में अन्तर

तुमने पिछले वर्ष अजातशत्रु और अशोक के बारे में पढ़ा था। इन राजाओं के समय में भोगपति नहीं थे। तब राजा अपने राज्य के कामकाज के लिए अधिकारी, सेनापति और मंत्रियों को नियुक्त करता था। वे लोगों से कर वसूल करके राजा को पहुंचाते थे। इसके बदले में उन्हें राजा नियमित वेतन देता था।

अधिकारियों के बारे में उन दो बातों को रेखांकित करो जो बाद के समय के भोगपतियों से भिन्न थीं।

अभ्यास के प्रश्न

1. सन् 700 से सन् 1200 के समय में उत्तर भारत के गांव से लगान इकट्ठा करने का अधिकार किसको था?
2. उन दिनों गांव का मुखिया अपनी जोत पर लगान नहीं देता था। उसे यह लाभ किस लिए मिला हुआ था?
3. राणा, ठाकुर आदि लोग दान किस तरह देते थे?
4. गांव के लोगों को भोगपतियों को क्या-क्या देना पड़ता था, और उनके लिए क्या-क्या करना पड़ता था?
5. अशोक के समय में राजा के पास राज्य का लगान अधिक पहुंचता होगा या राजवंशों के समय में? कारण समझाओ।
6. अशोक के समय में अधिकारियों की आमदनी निश्चित थी या राजवंशों के समय में ? कारण समझाओ।
7. राणा या ठाकुरों के व्यवहार की क्या बातें आज ग़ैरकानूनी हो गई हैं?
8. भोग में मिले धन का भोगपति क्या उपयोग करते थे?
9. राजा अधिकारियों को भोग करने के लिए गांव क्यों देता था?

भोगपति गांव वालों की बेगार से किले और महल बनवाते थे

7. दक्षिण भारत के गांव

(तलैच्छंगाडु गांव सन् 950 से 1250)

इस पाठ में हम एक बहुत पुराने गांव की कहानी पढ़ेंगे। उस गांव में पहले लोग कैसे रहते थे, फिर वहां क्या-क्या बदलाव आए, लोगों की क्या समस्याएं थीं, उन्होंने उसके लिए क्या किया .... आदि बातें पढेंगे। तुम पहले इस पाठ में दिए चित्रों को देखकर अंदाज़ लगाओ कि उस गांव मे क्या-क्या हुआ होगा।

राज्य की व्यवस्था में सबसे प्रमुख बात होती थी- प्रजा से लगान व कर वसूल करना। अजातशत्रु और अशोक जैसे पुराने राजाओं के समय में यह काम राजा के अधिकारी करते थे। ये अधिकारी लगान वसूल करके राज़ा को देते थे और राजा उन्हें नियमित वेतन देता था।

पाठ 6 में तुमने पढ़ा कि सन् 700 के बाद उत्तर भारत में राजा अपने रिश्तेदारों व अधिकारियों को गांव भोग करने के लिए देने लगे। ये भोगपति गांव वालों से लगान वसूल करके खुद रख लेते थे। उन्हें राजा से कोई नियमित वेतन नहीं मिलता था।

दक्षिण भारत में लोगों से लगान वसूल करने की एक और व्यवस्था थी। यह क्या व्यवस्था थी- चलो देखें।

"ऊर" और "नाडु"

आज से एक हज़ार वर्ष पूर्व तमिलनाडु के गांवों में एक व्यवस्था थी। वहां के हर गांव में किसानों की एक सभा (समिति) होती थी जिसे "ऊर" कहा जाता था। ऊर में गांव के प्रमुख किसान सदस्य थे। यही ऊर गांव के सब कामकाज चलाती थी- लोगों के बीच झगड़े निपटाना, अपराधियों को दण्ड देना, ज़मीन का लेखा-जोखा हिसाब-किताब रखना, नहर के पानी का बंटवारा करना आदि। ऊर का एक और महत्वपूर्ण काम था- किसानों से लगान वसूल करके राजा तक पहुंचाना। दक्षिण भारत में गांव के किसानों की सभा ऊर ही, किसानों से लगान वसूल कर के राजा को देती थी।

ऊर सभा की बैठक हो रही है

लगान वसूल करने के काम में दक्षिण भारत और उत्तर भारत में क्या अन्तर लगा दो वाक्यों में लिखो।

उस समय एक और समिति होती थी- जिसका नाम था - 'नाडु'। 20-25 गांवों के बीच एक नाडु समिति होती थी जिसमें उन गांवों के प्रमुख परिवार सदस्य थे। उन गांवों की देख रेख करना, गांवों के बीच झगड़े निपटाना, आदि काम नाडु समिति करती थी।

अगर राजा को गांव में कोई काम करवाना होता था तो वह ऊर या नाडु को आदेश देता था। उस आदेश का पालन ऊर और नाडु करती थीं।

राजा अशोक के समय में राजा अपने अधिकारियों से लगान इकट्ठा करवाते थे व अन्य काम करवाते थे। पर सन् 700 से 1200 के समय में दक्षिण भारत के राजा अपनी सेवा में बहुत कम अधिकारी रखते थे। गांवों में ज़्यादातर कामकाज ऊर और नाडु ही करती थीं। ऊर या नाडु के सदस्यों को राजा कोई वेतन नहीं देता था। उनकी नियुक्ति भी राजा नहीं करता था।

नाडु के काम के बारे में जिन वाक्यों में बताया गया है- उन वाक्यों को रेखांकित करो।

एक गांव की समिति .... थी।

कई गांवों की समिति .... थी।

राजा के अधिकारी और ऊर के सदस्यों के बीच क्या अंतर था?

ऊर के सदस्यों का जीवन .... पर निर्भर था।

वेल्लाल किसान और परैयर मज़दूर

ऊर, नाडु जैसी समितियां कावेरी नदी के किनारे बसे गांवों में पायी जाती थीं। इन गांवों में अधिकतर वेल्लाल जाति के किसान रहते थे। इन किसानों के खेतों में परैयर जाति के मज़दूर काम करते थे। परैयर मज़दूर अछूत माने जाते थे और उन्हें गांव के बाहर ही रहना पड़ता था।

कावेरी नदी के आसपास के गांवों की मिट्टी अच्छी और उपजाऊ थी। इससे वहां हर साल धान की दो-तीन फसलें भी हो जाती थीं।

इस कारण कई वेल्लाल किसान बहुत धनी व ताकतवर थे। ऊर व नाडु में उनका ही बोल-बाला था।

पर, कभी-कभी ऐसी भी परिस्थिति बन जाती थी जब वेल्लाल किसानों और ऊर का महत्व कम हो जाता था। यह स्थिति तब बनती भी जब राजा कोई गांव ब्राह्मणों को दान कर देता था।

तुम्हें याद होगा, उन दिनों राजा ब्राह्मणों को बुला-बुलाकर बसा रहे थे- उन्हें गांव दान में दे रहे थे। कावेरी नदी के मुहाने में ऐसे बहुत से ब्राह्मण बसाये गये।

राजा जब कोई गांव ब्राह्मणों को दान कर देता था तब क्या व्यवस्था होती थी? यह बात एक गांव तलैच्छंगाडु के उदाहरण से पढ़ो।

वेल्लाल .... थे और परैयर .... थे।

तलैच्छंगाडु ब्राह्मणों का हुआ

सन् 950 के लगभग चोल वंश के राजा ने तलैच्छंगाडु नाम का एक संपन्न गांव कई ब्राह्मणों को दान में दे दिया। राजा ने उस इलाके की नाडु समिति के नाम आदेश भेजा कि तलैच्छंगाडु ब्राह्मणों को दान में दिया जा रहा है। नाडु समिति ऐसी व्यवस्था करे कि उक्त गांव इन ब्राह्मणों को प्राप्त हो जाये।

नाडु ने आदेश का पालन किया और तलैच्छंगाडु ब्राह्मणों का हो गया। वेल्लाल किसान अब ज़मीन के मालिक नहीं रहे। ब्राह्मण ज़मीन के मालिक बन गये। कई ब्राह्मण परिवार तलैच्छंगाडु में आकर बस गये। इन परिवारों ने ज़मीन आपस में बांट ली। वेल्लाल किसान अब इन ब्राह्मणों के बटाईदार बन गये।

वेल्लाल बटाईदारों को अब अपनी फसल का एक बड़ा हिस्सा उन ब्राह्मणों को देना पड़ता था। नहर से सिंचित ज़मीन पर ब्राह्मण फसल का दो तिहाई भाग लेते थे और असिंचित ज़मीन पर आधी फसल ब्राह्मणों की हो जाती थी। ब्राह्मण वेल्लालों से अब बेगार (बिना पैसे दिये काम) भी करवा सकते थे।
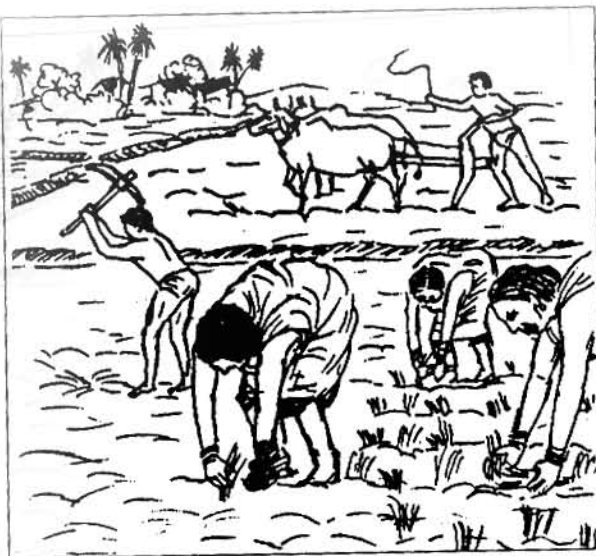
तलैच्छंगाडु में जो परिवर्तन हुये, वे इन दो चित्रों में दिखाये गये हैं। इन दो चित्रों में क्या परिवर्तन तुम्हें नज़र आते हैं?

तुम्हारे गांव में बटाईदार को फसल का कितना मिलता है?

ब्राह्मण गांव के कामकाज की देख-रेख भी खुद करने लगे। वेल्लालों की ऊर समिति भंग (खत्म) हो गई। उसकी जगह ब्राह्मणों ने अपनी एक सभा बनाई जिसे मूलपुरुष सभा कहते थे।

मूलपुरुष सभा में गांव के प्रमुख ब्राह्मण बारी-बारी से सदस्य बनते थे। मूलपुरुष सभा ही अब गांव से लगान वसूल करके राजा को पहुंचाने का काम करने लगी।

ब्राह्मणों को दान में मिलने के बाद तलैच्छंगाडु में क्या-क्या परिवर्तन आये- इसके बारे में चार महत्वपूर्ण वाक्य रेखांकित करो।
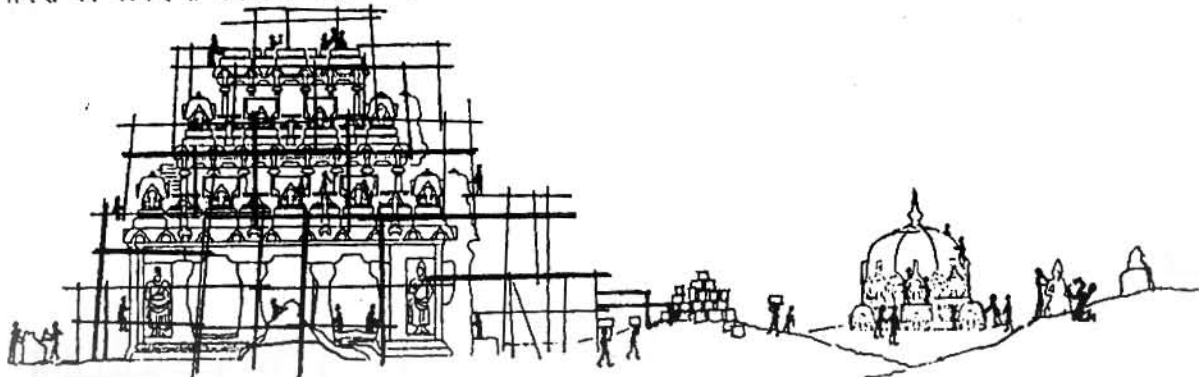
तलैच्छंगाडु के मंदिर

उस समय तलैच्छंगाडु में तीन बड़े और प्रसिद्ध मंदिर थे- दो शिव मंदिर और एक विष्णु मंदिर। उन दिनों कई लोग इन मंदिरों को सोना, चांदी या ज़मीन दान में देते थे। इस प्रकार मंदिरों के पास खूब सारा धन इकट्ठा होता गया। सन् 1000 के लगभग इन मंदिरों को पत्थर से बनवाया गया। समय के साथ मंदिर बड़े होते गये। उनमें तरह-तरह के लोग, पुजारी, नाच गान करने वाले, ढोलक बजाने वाले, पानी भरने वाले, खाना पकाने वाले, माली, आदि काम करने लगे। इन सबका खर्चा मंदिर की ज़मीन से आता था। मंदिर की ज़मीन से राजा को भी लगान मिलता था। मूलपुरुष सभा ही मंदिर से लगान वसूल करके राजा को देती थी।

मंदिरों को पत्थर से बनवाया गया

मूलपुरुष सभा और गांव

एक बार सन् 1006 की बात है। ब्राह्मणों ने चाहा हर साल चैत के महीने में गांव के शिव मंदिर में एक बड़े त्यौहार का आयोजन हो। त्यौहार के खर्च के लिए मंदिर को हर साल धन कहां से मिलेगा? मूलपुरुष सभा ने तय किया कि मंदिर की कुछ ज़मीन पर वे लगान माफ कर देंगे। मूलपुरुषों ने कहा- "हम खुद, अपनी तरफ से उस ज़मीन पर राजा को हर वर्ष लगान देंगे। मंदिर को लगान नहीं देनी पड़ेगी। इससे जो धन बचेगा उससे हर साल मंदिर में त्यौहार मनाया जाए।"

एक और बार की बात है। तलैच्छंगाडु की मूलपुरुष सभा ने तय किया कि गांव के विष्णु मंदिर में रोज़ दस ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये। इस खर्च के लिए मूलपुरुषों ने मंदिर को सौ 'काशु' (सोने के सिक्के) दिये। सौ काशु जुटाने के लिए मूलपुरुष सभा ने गांव के कारीगरों से वसूली की- बढ़ई से सात काशु लिए, सुनार से भी सात काशु लिए, और लोहार से भी, धोबी से साढ़े तीन काशु लिए, शराब बनाने वालों से 35 काशु लिए। बचे हुए पैसे अपनी तरफ से जोड़कर सभा ने मंदिर को दान दिया।

ऊपर के अंश में किन दो वाक्यों से मूलपुरुष सभा का गांव पर अधिकार पता चलता है, रेखांकित करो।

उत्तर भारत के गांवों में इस तरह के अधिकार किसे मिले हुए थे?

झगड़े सुलझाना, दण्ड देना

मूलपुरुष सभा गांव के झगड़े, विवाद सुलझाने और दण्ड देने का काम भी करती थी। एक बार तो कुछ ब्राह्मणों और मंदिर के बीच ही ज़मीन को लेकर झगड़ा हो गया। गांव की ज़मीन के एक टुकड़े पर चार ब्राह्मण खेती करवाते थे। एक दिन शिव मंदिर की समिति ने दावा किया कि वो ज़मीन वास्तव में मंदिर की है। उन्होंने कहा कि उस खेत की सीमा पर एक पत्थर गढ़ा हुआ था जिस पर मंदिर का त्रिशूल बना था। उन चार ब्राह्मणों ने चोरी छिपे उस पत्थर को उखाड़ फेंका और खुद उस खेत पर अधिकार जमा लिया। वे चार ब्राह्मण इस आरोप को झूठा कह रहे थे। काफी विवाद हुआ।

मंदिर के हक को सिद्ध करने के लिए मंदिर में एक नौकर ने खुद को आग लगा कर आत्म-बलिदान किया। उस समय की मान्यता थी कि जो व्यक्ति अपने कथन को सिद्ध करने के लिए मरने तक को तैयार हो वह सच ही कह रहा होगा। जब बात यहां तक पहुंची तो मूलपुरुष सभा ने अपने दस्तावेज़ निकाल कर देखे। दस्तावेज़ों से पता चला कि खेत मंदिर का ही था।

तब मूलपुरुष सभा ने उन चार ब्राह्मणों को दण्ड के रूप में यह आदेश दिया कि वे खेत मंदिर को सौंप दें। साथ ही, जिस नौकर ने आत्म-बलिदान दिया था उसकी एक कांसे की मूर्ति बनवा कर मंदिर में रखवाएं। उस मूर्ति की पूजा के लिए वे चार ब्राह्मण अपनी कुछ ज़मीन मंदिर को दान करें।

मूलपुरुष की बैठक

ब्राह्मणों की सभा पर नाडु का दबाव

असल में यद्यपि गांव के स्तर पर ब्राह्मणों की मूलपुरुष सभा को सब अधिकार थे, पर ऐसा नहीं था कि मूलपुरुष सभा अपनी हर बात मनवा सकती थी। तलैच्छंगाडु को छोड़कर उस इलाके के बाकी गांव तो वेल्लाल किसानों के ही थे। उस इलाके की नाडु सभा भी पहले की ही तरह कामकाज संभालती थी। नाडु अगर कोई बात का दबाव डाले तो ब्राह्मणों की मूलपुरुष सभा आसानी से अपनी मनमानी नहीं कर सकती थी।

एक बार ऐसी ही स्थिति बन गई। तलैच्छंगाडु गांव के ब्राह्मण अपने बटाईदारों को खेत की उपज का जो हिस्सा देते थे, वो उन्होंने कम कर दिया। वेल्लाल जाति के किसान जो उनके बटाईदार थे, बहुत क्रोधित हुए और कई वेल्लालों ने ब्राह्मणों की बात नहीं मानी। तब ब्राह्मणों ने अपने.नौकरों को बटाईदारों के घर भेजकर तोड़-फोड़, मारपीट मचानी शुरू कर दी।

जब कई वर्षों तक यह तनातनी चलती रही तो तलैच्छंगाडु के किसानों ने नाडु की सभा में अपनी समस्या रखी। नाडु सभा ने विचार करके तय किया कि ब्राह्मण भूस्वामियों (ज़मीन के मालिकों) की ज़ोर ज़बरदस्ती चुपचाप सहन नहीं की जाएगी। नाडु ने आसपास की सब ब्राह्मण सभाओं को चेतावनी दी कि अगर वे अपने बटाईदारों के साथ ठीक समझौता नहीं करेंगे तो बटाईदार उनके खेत नहीं जोतेंगे और गांव छोड़कर चले जाएंगे।

आखिरकार ब्राह्मणों ने वेल्लाल किसानों के साथ फसल के हिस्से पर समझौता कर लिया। वे बटाईदारों को पहले जितना हिस्सा देना मान गये।

इन उदाहरणों से हम जान सकते हैं कि दक्षिण भारत के गांवों में किसानों, ब्राह्मणों आदि की समितियां समाज के कई कामकाज संभालती थीं। राजा के अधिकारियों या राजा द्वारा नियुक्त किए गए भोगपति जैसे लोगों का उन गांवों पर प्रभाव नहीं था।

पुराने समय के गांवों के बारे में कई किस्से मालूम पड़ते हैं। दक्षिण भारत में यह प्रथा थी कि लोग गांव में होने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं को मंदिर की दीवार पर खुदवा देते थे। तुम अगर आज भी तलैच्छंगाडु जाओ तो वहां तुम्हें वही शिव मंदिर मिलेगा जो 1000 साल पुराना है- और उसकी दीवार पर वे बातें खुदी हुई मिलेंगी, जो हमने यहां तुम्हें बताई हैं। अगर तुम तमिल भाषा जानते हो तो उन बातों को पढ़ सकते हो।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. ऊर के सदस्य कौन थे? ऊर का क्या काम था?
2. नीचे दो घटनायें दी गयी हैं। इनमें से कौन सी उत्तर भारत की है और कौन सी दक्षिण भारत की है- पहचानो और कारण बताओ।

क) राजपुत्र लाखणपाल, एक दिन नड्डुलै गांव में पहुंचा और गांव वालों को बुलाकर कहा- "यहां के मंदिर में पूजा के खर्च के लिए, गांव के प्रत्येक हल पर एक पाई गेहूं दिया जाए।"

ख) एक दिन राजा के दरबार से एक संदेशक गांव में आया। किसानों की सभा में जाकर उसने राजा का संदेश बताया। संदेश था- "आप के गांव के मंदिर में पूजा ठीक से नहीं हो रही है। आप ऐसी व्यवस्था करें कि मंदिर को पूजा के लिए पर्याप्त धन मिले।" किसानों की सभा ने तय किया कि गांव के हर हल पर एक चांदी का सिक्का मंदिर को दिया जायेगा।

3. मूलपुरुष सभा ही गांव से लगान वसूल करके राजा को पहुंचाती थी। यह बात कौन सी घटना से पता चलती है? उस घटना के बारे में तीन वाक्य लिखो।
4. गांव के कारीगरों पर मूलपुरुष सभा का अधिकार था। यह बात कौन सी घटना से पता चलती है?
5. आजकल ज़मीन जायदाद के मामले दीवानी अदालत में तय होते हैं- पुराने समय में दक्षिण भारत के गांवों में ज़मीन के झगड़ों को कहां सुलझाया जाता था?
6. तलैच्छंगाडु में ब्राह्मण भूस्वामी, वेल्लाल बटाईदारों पर क्यों मनमानी नहीं कर सके?
9. तलैच्छंगाडु में सन् 950 से 1250 तक हुई घटनाओं के बारे में हमें कैसे पता चलता है?

ब्राह्मणों की सभा पर नाडु का दबाव

असल में यद्यपि गांव के स्तर पर ब्राह्मणों की मूलपुरुष सभा को सब अधिकार थे, पर ऐसा नहीं था कि मूलपुरुष सभा अपनी हर बात मनवा सकती थी। तलैच्छंगाडु को छोड़कर उस इलाके के बाकी गांव तो वेल्लाल किसानों के ही थे। उस इलाके की नाडु सभा भी पहले की ही तरह कामकाज संभालती थी। नाडु अगर कोई बात का दबाव डाले तो ब्राह्मणों की मूलपुरुष सभा आसानी से अपनी मनमानी नहीं कर सकती थी।

एक बार ऐसी ही स्थिति बन गई। तलैच्छंगाडु गांव के ब्राह्मण अपने बटाईदारों को खेत की उपज का जो हिस्सा देते थे, वो उन्होंने कम कर दिया। वेल्लाल जाति के किसान जो उनके बटाईदार थे, बहुत क्रोधित हुए और कई वेल्लालों ने ब्राह्मणों की बात नहीं मानी। तब ब्राह्मणों ने अपने.नौकरों को बटाईदारों के घर भेजकर तोड़-फोड़, मारपीट मचानी शुरू कर दी।

जब कई वर्षों तक यह तनातनी चलती रही तो तलैच्छंगाडु के किसानों ने नाडु की सभा में अपनी समस्या रखी। नाडु सभा ने विचार करके तय किया कि ब्राह्मण भूस्वामियों (ज़मीन के मालिकों) की ज़ोर ज़बरदस्ती चुपचाप सहन नहीं की जाएगी। नाडु ने आसपास की सब ब्राह्मण सभाओं को चेतावनी दी कि अगर वे अपने बटाईदारों के साथ ठीक समझौता नहीं करेंगे तो बटाईदार उनके खेत नहीं जोतेंगे और गांव छोड़कर चले जाएंगे।

आखिरकार ब्राह्मणों ने वेल्लाल किसानों के साथ फसल के हिस्से पर समझौता कर लिया। वे बटाईदारों को पहले जितना हिस्सा देना मान गये।

इन उदाहरणों से हम जान सकते हैं कि दक्षिण भारत के गांवों में किसानों, ब्राह्मणों आदि की समितियां समाज के कई कामकाज संभालती थीं। राजा के अधिकारियों या राजा द्वारा नियुक्त किए गए भोगपति जैसे लोगों का उन गांवों पर प्रभाव नहीं था।

पुराने समय के गांवों के बारे में कई किस्से मालूम पड़ते हैं। दक्षिण भारत में यह प्रथा थी कि लोग गांव में होने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं को मंदिर की दीवार पर खुदवा देते थे। तुम अगर आज भी तलैच्छंगाडु जाओ तो वहां तुम्हें वही शिव मंदिर मिलेगा जो 1000 साल पुराना है- और उसकी दीवार पर वे बातें खुदी हुई मिलेंगी, जो हमने यहां तुम्हें बताई हैं। अगर तुम तमिल भाषा जानते हो तो उन बातों को पढ़ सकते हो।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. ऊर के सदस्य कौन थे? ऊर का क्या काम था?
2. नीचे दो घटनायें दी गयी हैं। इनमें से कौन सी उत्तर भारत की है और कौन सी दक्षिण भारत की है- पहचानो और कारण बताओ।

क) राजपुत्र लाखणपाल, एक दिन नड्डुलै गांव में पहुंचा और गांव वालों को बुलाकर कहा- "यहां के मंदिर में पूजा के खर्च के लिए, गांव के प्रत्येक हल पर एक पाई गेहूं दिया जाए।"

ख) एक दिन राजा के दरबार से एक संदेशक गांव में आया। किसानों की सभा में जाकर उसने राजा का संदेश बताया। संदेश था- "आप के गांव के मंदिर में पूजा ठीक से नहीं हो रही है। आप ऐसी व्यवस्था करें कि मंदिर को पूजा के लिए पर्याप्त धन मिले।" किसानों की सभा ने तय किया कि गांव के हर हल पर एक चांदी का सिक्का मंदिर को दिया जायेगा।

3. मूलपुरुष सभा ही गांव से लगान वसूल करके राजा को पहुंचाती थी। यह बात कौन सी घटना से पता चलती है? उस घटना के बारे में तीन वाक्य लिखो।
4. गांव के कारीगरों पर मूलपुरुष सभा का अधिकार था। यह बात कौन सी घटना से पता चलती है?
5. आजकल ज़मीन जायदाद के मामले दीवानी अदालत में तय होते हैं- पुराने समय में दक्षिण भारत के गांवों में ज़मीन के झगड़ों को कहां सुलझाया जाता था?
6. तलैच्छंगाडु में ब्राह्मण भूस्वामी, वेल्लाल बटाईदारों पर क्यों मनमानी नहीं कर सके?
9. तलैच्छंगाडु में सन् 950 से 1250 तक हुई घटनाओं के बारे में हमें कैसे पता चलता है?

8. हर्ष के समय शबर वनवासी

विंध्याचल के पर्वत व वन

खेतिहर गांव और जंगल की बस्तियां

उत्तर भारत और दक्षिण भारत के गांवों के बारे में तुमने पिछले दो पाठों में पढ़ा था। ऐसे गांव अधिकतर नदियों के मैदान व पठारी इलाकों में बसे थे। वहां के अधिकतर किसान हल-बैल से खेती करते थे। वे नए-नए सिंचाई के साधनों का उपयोग कर रहे थे। इस कारण उनके गांव संपन्न थे। वहां घनी आबादी होती थी। घर पास-पास सटे हुये बना करते थे। उन्हीं गांवों से राजा व भोगपतियों को लगान मिलता था। उन गांवों में ही ब्राह्मण आकर बसते थे और वहीं छोटे-बड़े मंदिर बने थे। वहां कई कारीगर व मज़दूर भी रहते थे।

मगर उन गांवों से भिन्न कई गांव थे। ये जंगलों के बीच बसी बस्तियां थीं। राजवंशों और सामंतों के समय में आज से काफी अधिक जंगल थे। बहुत से कबीले पहाड़ों और जंगलों में रहते थे। जंगल की चीज़ों के सहारे अपनी गुज़र बसर करते थे।

पहाड़ों और जंगलों में रहने वाले लोगों के बारे में तुमने पाठ 2 में क्या जाना था?

हर्षचरित और बाणभट्ट

विंध्याचल पर्वत के जंगलों में रहने वाले शबर नाम के वनवासियों का वर्णन हमें हर्षचरित में मिलता है। हर्षचरित उसी राजा हर्षवर्धन की जीवनी है जिसके बारे में तुम पढ़ चुके हो। हर्ष की यह जीवनी कवि बाणभट्ट ने लिखी थी।

बाणभट्ट लिखता है कि जब हर्ष की बहन राज्यश्री के पति की युद्ध में मृत्यु हुई तो वह दुख न सह सकी और कहीं चली गई। हर्ष उसे ढूंढते-ढूंढते विंध्य पर्वतों पर पहुंचा। हां वही विंध्य पर्वत जो भोपाल से होशंगाबाद के रास्ते में पड़ते हैं। इन पर्वतों के जंगल में हर्ष अपनी बहन को ढूंढता रहा। यूं तो अक्सर हम भी इन जंगलों से गुज़रते हैं। पर राजा हर्ष ने आज से 1400 साल पहले इन जंगलों में क्या देखा?

विंध्याचल पर्वत के वन में शिकार

राजा हर्ष ने देखा कि जंगल में कोई सड़क नहीं बनी है- केवल पगडंडियां हैं। मगर ये पगडंडियां भी साफ नज़र नहीं आती हैं- जंगलों से गुज़रने वाले बहुत कम हैं- शायद इसलिये। इन्हीं पगडंडियों पर चलते-चलते उसे कई दृश्य देखने को मिले। कहीं उसने देखा शेर को पकड़ने के लिए पेड़ों के बीच जाल बिछे हैं। जगह-जगह लोग लकड़ी जलाकर काठकोयला बना रहे हैं।

जंगल में बीच-बीच में कुछ शिकारी भी उसे दिखाई दिये। जानवरों और पक्षियों को पकड़ने के लिए वे तरह-तरह के जाल व फन्दे लिए हुये हैं। ये जाल व फन्दे

वनों में शिकार

जानवरों की शिराओं और तंतुओं से बने हैं। कुछ बहेलिये भी मिले। उनके पास पिंजरे में तीतर और शाहबाज़ बंद हैं। यहां वहां छोटे बच्चे भी टहनियों में गोंद लगाकर छोटी चिड़ियों को मारने की कोशिश कर रहे हैं।

बेचने जाते हुए

पगडंडियों पर जंगल के लोग जंगल से मिली चीज़ों का गट्ठर सर पर लादकर उन्हें बेचने जाते मिले। कई चीजें ले जा रहे थे- सिधु पेड़ की छाल, फल, सन के गट्ठे, शहद, मोरपंख, मोम, खदीर पेड़ की लकड़ी, खस, छाल, जड़ें, गुग्गल (धूप), सेमल की रूई आदि।

क्या इनमें से कोई चीज़ तुम्हारे आसपास मिलती है? क्या लोग उसे इकट्ठा करते हैं?

बेचने जाते हुए

जंगल के बीच खेती

बस्तियों के आसपास बरगद पेड़ के चारों तरफ सूखी लकड़ी से घेरा बना है। इनमें लोगों के पशु रहते हैं। कहीं दूर-दूर पर खेत दिख जाते हैं। हां- यहां के जंगलों में खुली जगह की कमी है- इसलिए खेत बहुत कम हैं और बिखरे हुए हैं।

यहां ज़मीन साफ कर के हाल ही में खेत बनाए गए हैं। कटे हुए पेड़ों के ठूंठ दिख रहे हैं। कुछ ठूंठों में तो पत्ते फिर से फूटने लगे हैं।

खेत जोतने के लिए ये लोग हल बैल का उपयोग नहीं करते हैं। यहां की मिट्टी लोहे की तरह काली और कठोर है। इसे वे कुदाल से खोदते हैं।

खेतों के बीच मचान बने हुए दिख रहे हैं- निश्चय ही यहां जंगली जानवरों का फसलों को खतरा रहता होगा।
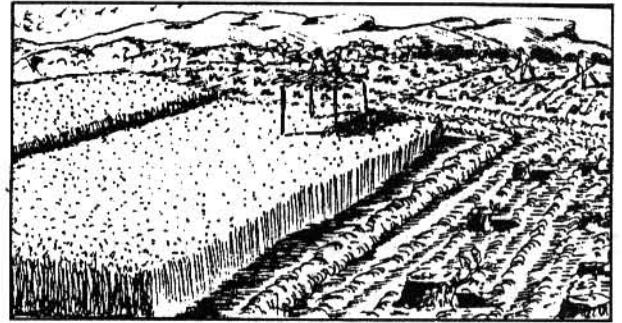
शबरों के खेत

वनवासियों की खेती के बारे में पांच महत्वपूर्ण शब्द रेखांकित करो।

बस्ती, बाड़े, घर

ऐसे चलते-चलते शाम हो रही थी, तो हर्ष एक बस्ती में आ पहुंचा। उसने देखा कि वनवासियों के घर एक-दूसरे से कुछ दूर-दूर बने हैं। हर घर के चारों तरफ झाड़ियों और कांटों का बाड़ा बना है। कहीं-कहीं बांस का झुरमुट भी है। इन्हीं से शायद वे अपने धनुष बनाते होंगे।

बाड़े में कुछ न कुछ उगता रहता है। अरण्डी, बैंगन, तुलसी, सिगरू (प्याज़ जैसी सब्ज़ी), सरकण्डा, कोदों, कुटकी, लौकी आदि। लम्बे डंडों पर लौकी की बेलें चढ़ी हैं। बाड़े में एकाध खदिर या बेर के पेड़ भी हैं। इनके नीचे बछिये बंधे हैं। घरों की छतों पर मुर्गे आवाज़ लगा रहे हैं।
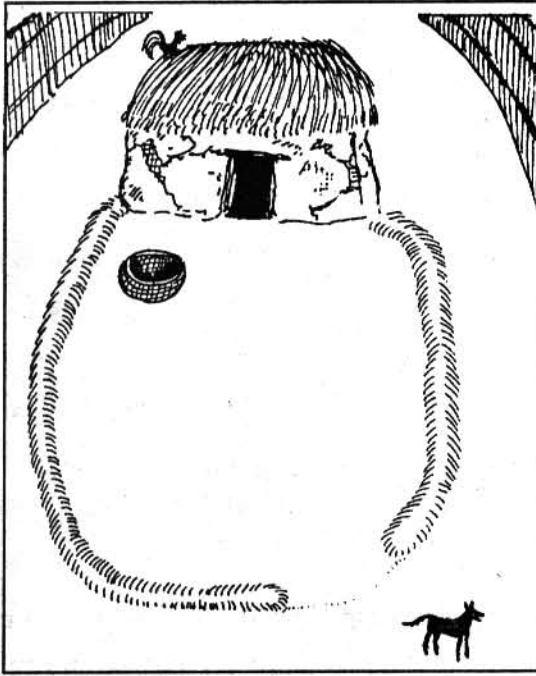
घर का आंगन

हर्ष ने देखा कि वनवासियों के घर बांस की खपच्चियों, पत्तों, व सरकण्डों के बने हैं। घरों में यहां वहां बहुत सी चीज़ें रखी हुयी हैं। इनमें से कई चीज़ें औरतों ने जंगल से इकट्ठी की हैं। वाकई कितनी सारी चीज़ें हैं! सेमल की रूई, जंगली धान, सिंघाड़े, गुड़, मखाने, बांस, चटाई, दवाई की जड़ी-बूटियां, खिरनी के बीज, महुआ आदि। बड़ी मात्रा में महुआ की शराब भी जमा की हुई है।

ये चीज़ें ऊपर दिए गए घर के चित्र में बनाओ या लिखो।

शबर युवक

हर्ष उस रात इसी गांव के पास रुका। अगले दिन सुबह उठ कर फिर अपनी बहन को ढूंढने निकला। चलते-चलते उसकी भेंट शबर कबीले के एक युवक से हुई। वह शबर कबीले के मुखिया का बेटा था। शबर युवक काले रंग का था। उसकी नाक चपटी और होंठ मोटे थे। उसके कानों में तोते के पंख लगे थे। कांच के मनके की बालियां वह कानों में पहने था। उसकी कलाई पर सुअर के बालों में सांप के ज़हर की काट बंधी हुई थी। हाथों में उसके टिन के कड़े थे। उसकी तलवार का हत्था किसी जानवर के सींग का बना था। तलवार खाल की म्यान में बंद थी।

शबर युवक की पीठ पर भालू और चीते की खाल से बनी तरकश लटक रही थी। उसमें ज़हरीले बाण रखे थे। उसके बाएं कंधे पर धनुष टंगा था। धनुष से एक तीतर और एक खरगोश लटक रहा था।

शबर युवक के चित्र में वो सब चीज़ें नहीं बनी हैं जो वह पहने था। उन्हें बनाओ।

शबर युवक के शरीर पर किन-किन जानवरों की चीज़ें थीं- सूची बनाओ।

शबर युवक ने हर्ष को प्रणाम किया और उसे तीतर और खरगोश भेंट में दिया। हर्ष ने उससे पूछा- "क्या तुमने मेरी बहन को इस जंगल में देखा है?" शबर युवक ने कहा,
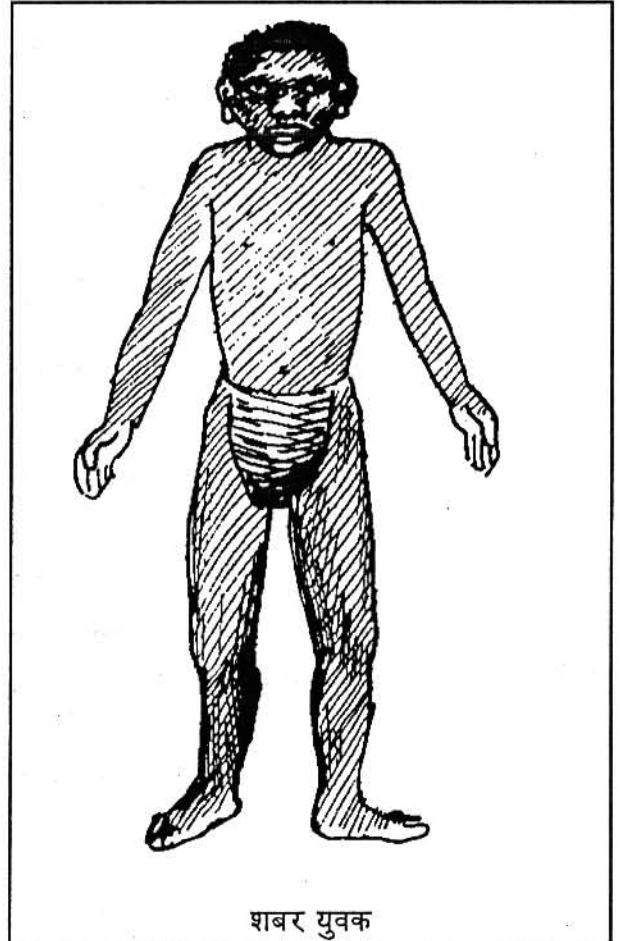
शबर युवक

"महाराज हम इस जंगल का चप्पा-चप्पा पहचानते हैं। मगर हमने आपकी बहन को नहीं देखा। यहीं पास में एक नदी है। उसके किनारे कुछ मुनि रहते हैं। उनके आश्रम में शायद आपको कोई खबर मिलेगी।"

हर्ष जब उस आश्रम में पहुंचा तो मुनियों ने उसका स्वागत किया। उन्होंने बताया कि "पास में एक भद्र महिला आग जलाकर उसमें जलकर मरने की तैयारी कर रही है। शायद वह आपकी बहन हो।" हर्ष भागता-भागता उस अग्निकुण्ड के पास जा पहुंचा। वहां उसने पाया कि वास्तव में वह उसकी बहन राज्यश्री ही थी जो जीवन से निराश होकर आत्महत्या कर रही थी। हर्ष और मुनियों ने राज्यश्री को खूब समझाया और रोकने में सफल हुए। फिर हर्ष अपनी बहन के साथ अपनी राजधानी लौट आया।

यह कहानी पढ़ते-पढ़ते आज से तेरह-चौदह सौ साल पहले विंध्य पर्वत के जंगलों में रहने वालों का जीवन हमारी आंखों के सामने तैर आया है। उन लोगों के जीवन की कितनी सारी छोटी-छोटी बातों पर बाणभट्ट का ध्यान गया था और कैसे बड़ी बारीकी से उसने विंध्यवासियों के जीवन का वर्णन लिखा है, पढ़कर आश्चर्य होता है।

तब और आज

आज भी अगर तुम विंध्य और सतपुड़ा पर्वतों के जंगलों में जाओ या बस्तर के जंगलों में तो तुम्हें ऐसे बहुत से दृश्य देखने को मिल जाएंगे।

तुमने कक्षा 6 में पाहवाड़ी गांव का वर्णन पढ़ा था। पाहवाड़ी सतपुड़ा पर्वत के जंगलों में बसा गांव है। आज के पाहवाड़ी गांव की बातों और हर्ष के समय के शबर वनवासियों की बातों में तुम्हें क्या कुछ समानताएं नज़र आईं?

1. खेत में 2. बस्ती व घरों में 3. बाड़े में 4. जंगल से लाई चीज़ों में

पर अब इन वनवासी लोगों का जीवन भी काफी बदलने लगा है। अब उनका जीवन पूरी तरह वैसा नहीं रहा जैसा हर्ष के समय में था।

उनके जीवन में क्या बदलाव आए हैं शायद तुम्हें इन बातों का कुछ ज्ञान हो। गुरुजी की मदद से इन बातों पर चर्चा करो और 6-7 वाक्य लिखो।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. इनमें से कौन सी बातें जंगलों में बसे वनवासियों के बारे में हैं और कौन सी बातें दूसरे खेतिहर गांवों की हैं? सूची में से अलग-अलग छांटकर तालिका में भरो।
   सूची- कुदाल से खेती, पहाड़ी खेत, सटे-सटे घर, हल बैल से खेती, दूर-दूर बने घर, अरघट्ट, ब्राह्मण, शिकार करके भोजन जुटाना, मंदिर, जंगलों की चीज़ों को इकट्ठा करके बेचना, कारीगर, राजा को कर देना।

वनवासी लोग	खेतीहर गांव

2. क- हर्ष के समय में वनवासी लोग क्या उगाते थे?
   ख- क्या बेचते थे?

९. एक पुराना शहर - सीयडोणि

पुराने समय के लोग, उनकी चीज़ें व बातें- सब गुज़र गई हैं। सब खत्म हो गये हैं। फिर भी इतिहास की पुस्तकों में लिखा होता है कि पुराने समय में ऐसा होता था, वैसा होता था। यह सब बातें पुराने ज़माने की बची हुयी निशानियों से ही पता चलती हैं।

राजवंशों और सामंतों के समय की बची हुयी निशानियों में से शिलालेख बड़े काम की चीज़ें हैं। शिलालेख का मतलब है पत्थर (शिला) पर कोई बात खोद कर लिखी गयी है। इन शिलालेखों में लिखी बातों को पढ़कर और समझकर ही इतिहासकार बताते हैं कि पहले के दिनों कैसा होता था।

लेकिन इसमें एक दिक्कत भी होती है। शिलालेखों में पुराने समय की बातें उस तरह से नहीं लिखी होती हैं जैसे तुम्हारे पाठ में तुम्हें लिखी मिलती हैं। आओ इस पाठ में एक नया अभ्यास करें। एक पुराने शहर के शिलालेख पढ़ें और पता करें कि उस समय शहरों में क्या होता था, कैसे होता था।

एक पुराना शहर

जब हम भोपाल से झांसी जाते हैं तब रेलगाड़ी ललितपुर नाम के स्टेशन पर रुकती है। ललितपुर के पास आज एक छोटा सा गांव बसा है, जिसका नाम सीरोनखुर्द है। वहां आज से लगभग एक सौ साल पहले सन् 1887 में एक बड़ा लम्बा शिलालेख मिला। उसको जब लोगों ने पढ़कर देखा तो पता चला कि वहां सन् 900 के लगभग एक बड़ा शहर बसा हुआ था। शिलालेख से ही पता चलता है कि उस शहर का नाम सीयडोणि था।

मगर आज तो वहां केवल एक छोटा सा गांव मात्र है। इस पुराने शहर का कोई नामोनिशान नहीं है। शायद पूरा शहर समय के साथ नष्ट होकर मिट्टी में दब गया है। इस शहर का केवल एक निशान बचा है - यह शिलालेख। इसमें सीयडोणि के राजा, व्यापारी, कारीगर, मंदिर, सड़क, घर, बाज़ार - इन सबके बारे में कई बातें लिखी हैं। चलो हम भी इसे पढ़ कर उस खोये हुए शहर के बारे में पता करें। इस शिलालेख में सन् 902 से लेकर सन् 967 तक की कई घटनाओं का ज़िक्र है।

यह कितने साल पुरानी बात हुई?

सबसे पहले सन् 902 की बात है। सन् 902 के शिलालेख में लिखा है-

"सांगट के पुत्र, चण्डूक नामक एक नमक व्यापारी ने शहर के दक्षिणी भाग में श्री नारायण भट्टारक के लिए एक मंदिर बनवाया। पूरे शहर के लोगों ने मिलकर इस मंदिर को एक खेत दान में दिया। खेत से श्री नारायण भट्टारक के लिए चन्दन, स्नान, धूप, दीप, नैवेद्य (भोग) का इन्तज़ाम हो सकेगा।"

ऐसी बहुत घटनाओं का ज़िक्र सीयडोणि नगर के शिलालेख में मिलेगा।

आगे पढ़ने से पहले एक मिनिट रुको। पाठ के अंत में सीयडोणि का एक नक्शा आधा बना हुआ है। इसमें नारायण भट्टारक के मंदिर को पहचानो।

नारायण भट्टारक का मतलब है, नारायण भगवान। नारायण भट्टारक का मंदिर किसने बनवाया था?

मंदिर

सामंत और मण्डी

सन् 906 की एक घटना के बारे में पढ़ो। शिलालेख में लिखा है-

"सीयडोणि में रहने वाले महाप्रतिहार महासामंताधिपति श्री उन्दभट ने सारे अधिकारियों को सूचित किया - नारायण भट्टारक के मंदिर में पूजा पाठ के लिए यह व्यवस्था की जा रही है कि सीयडोणि के मण्डपिक (यानी मण्डी) में से रोज़ मंदिर को कुछ सोने के सिक्के दिए जायेंगे। जब तक चांद और सूरज रहेंगे तब तक यह व्यवस्था जारी रहेगी। अगर कोई इसका विरोध करे (बाधा डाले) तो उसे पांच महापाप लग जायेंगे। यह उन्दभट के हस्ताक्षर हैं।"

सीयडोणि में किस नाम का सामन्त रहता था?

उसने मंदिर में पूजा पाठ के लिए क्या व्यवस्था की?

नक्शे में देखो कि मण्डी की सबसे उचित जगह कौन सी होगी? वहां तुम सीयडोणि की मण्डी बना दो।
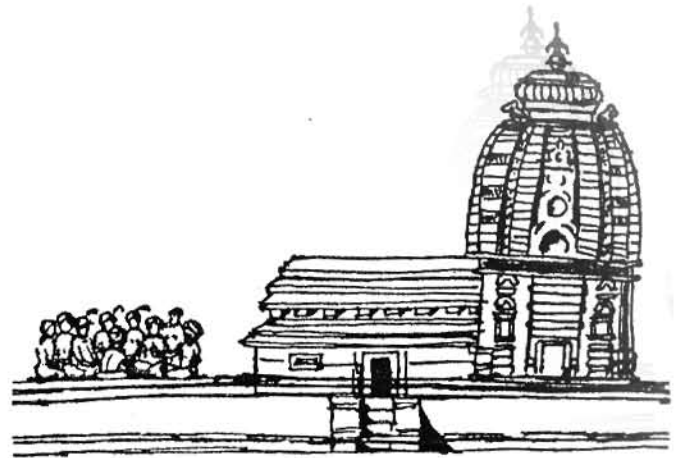
मण्डी

जब सीयडोणि में सामन्त रहता था तो उसका महल भी तो रहा होगा। ठीक जगह सोच कर नक्शे में सामन्त का महल भी दिखाओ।

शक्कर बनानेवाले कंदुक

सन् 907 में,

"शहर के व्यापारियों की समिति के प्रमुखों और सारे कन्दुकों (शक्कर बनाने वालों) के सामने यह व्यवस्था की जा रही है। नमक व्यापारी नागक ने, जो कि चण्डूक का पुत्र है, बहुत कीमत चुकाकर चार-पांच कन्दुकों से यह इन्तज़ाम किया है। ये शक्कर बनाने वाले रोज़ अपने उत्पादन का एक हिस्सा मंदिर को देते रहेंगे। यह नागक के हस्ताक्षर हैं।"

सन् 907 में चण्डूक नहीं, बल्कि उसका बेटा दान कर रहा था। इस आलेख में तुमने कुछ नए लोगों के बारे में भी पढ़ा। ये शक्कर बनाने वाले शायद एक साथ एक ही गली या मोहल्ले में रहते होंगे।

कन्दुक

अब तुम नक्शे में शहर के एक कोने में कन्दुकों का मोहल्ला दिखाओ।

नागक कौन था? नागक ने मन्दिर को दान देने का इन्तज़ाम किस के साथ किया और क्या इन्तज़ाम किया? नागक ने दान की व्यवस्था किस के सामने की?

बाज़ार और दुकानें

सन् 909 में,

"चण्डूक वणिक (व्यापारी) ने प्रसन्नहट्ट (प्रसन्न बाज़ार) में अपनी वीथी (दुकान) नारायण मंदिर को दान में दी। इस वीथी के पूर्व में सुभादित्य की वीथी है, दक्षिण में भट्टदेव का घर है, पश्चिम में चूंआ की वीथी है और उत्तर में हट्टरथ्य (बाज़ार की सड़क) है।"

सन् 909 में ही,

"ताम्बूलिक (पान बेचने वाला) केशव जो कि बटेश्वर का पुत्र है ने चतुर्हट्ट (चतुर बाज़ार) में अपनी वीथी नारायण मंदिर को दान में दी।"

सन् 909 में नारायण मंदिर को किस-किस की दुकानें दान में मिलीं? ये दुकानें किन बाज़ारों में थीं?

नक्शे में किसी जगह पर चतुर्हट्ट बनाओ।

प्रसन्नहट्ट में चण्डूक की दुकान बनाओ। दुकान के चारों तरफ जो चीज़ें थीं उन्हें भी सीयडोणि के नक्शे में दिखाओ।

चण्डूक ने जब अपनी दुकान दान में दी तो आलेख में यह क्यों लिखवाया कि दुकान के चारों तरफ क्या था?

सिलाकूट

सन् 947 में,

"सूत्रधार जेजक, विसिआक, भलुआक और जागूक नाम के सिलाकूटों (पत्थर की सिलायें बनाने वाले) व अन्य सिलाकूटों ने निश्चय किया कि वे नारायण भट्टारक को प्रत्येक पत्थर पर कुछ द्रम्म (पैसे) दान में देंगे।"

शायद उस समय सीयडोणि के घर, महल, मंदिर पत्थर के बनते थे- ये सिलाकूट पत्थरों को तोड़कर इमारत बनाने में मदद करते होंगे।

"पुरन्दर ने नारायण भट्टारक के मंदिर के अन्दर चक्रस्वामि (विष्णु) की मूर्ति की स्थापना की। उस मूर्ति के सामने दिया जलाने के लिए केसव, दुर्गादित्य, केसुलाक, उजोणेक, तुण्डिय आदि सारे तैलिकों (तेल बनाने वालों) ने तय किया कि वे तेल निकालने के हर कोलू पर कुछ तेल दिए के लिए दान में देंगे।"

सिलाकूटों व तैलिकों का मोहल्ला भी नक्शे में दिखाओ।

सीयडोणि के सिलाकूटों और तैलिकों ने मंदिर को किस प्रकार दान दिए?

तो तुमने हज़ार साल पहले के एक शहर में झांक कर देख लिया। उन बीते हुए लोगों के काम धाम और उस शहर की रौनक और चहल-पहल भी तुम्हारे मन में छायी होगी। क्या कुछ होता रहता था उन दिनों! क्या तुम्हारे आसपास कोई शहर है जो हज़ार साल पुराना है? शायद उस शहर में भी कभी वही नज़ारे देखने को मिलते होंगे जो तुमने सीयडोणि में झांक कर देखे। अब कोई तुमसे पूछे क्यों भई तुमने क्या देखा तो क्या बताओगे?

हम पूछते हैं और तुम बताओ।

** तुम्हें सीयडोणि नगर का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति कौन लगा? यानी बहुत जाना माना व्यक्ति जिसकी शहर में बड़ी धाक हो? उसके बारे में कुछ बताओ।*

** बताओ कि सीयडोणि नगर की बनावट कैसी थी? वहां कितने बाज़ार थे? एक या अधिक? बाज़ारों के नाम भी थे क्या? (जैसे आज भी शहरों में बाज़ारों के नाम होते हैं - इतवाराबाज़ार, शास्त्री मार्केट।)*

** वे लोग उस समय बाज़ार को क्या कहते थे? बाज़ार शब्द तो फारसी भाषा का शब्द है। भारत में इसका उपयोग तुर्की लोगों के आने के बाद ही होने लगा। अंग्रेज़ों के भारत आने के बाद बाज़ार के लिए कौन सा शब्द इस्तेमाल होने लगा?*

** सीयडोणि के बाज़ारों में क्या सिर्फ दुकानें ही थीं - और लोगों के घर कहीं अलग थे - या दुकानों के बीच घर थे?*

** "दुकान" भी फारसी शब्द है। दुकानों को तब क्या कहा जाता था?*

** सीयडोणि के किन व्यापारियों से तुम मिले? उनके नाम बताओ। वे किन चीज़ों का व्यापार करते थे?*

** सीयडोणि में कौन-कौन सी चीज़ें बनाने वाले लोग थे?*

** कौन-कौन से कारीगर सीयडोणि में थे?*

* उस समय के कई लोगों के नाम आजकल के लोगों के नामों से फर्क नज़र आते हैं क्या?
* सीयडोणि के मंदिरों को दान क्या नगद सिक्कों में दिया जाता था? कुछ उदाहरण बताओ।
* उन दिनों पैसे को रुपया तो नहीं कहते होंगे। तो क्या कहते थे?
* क्या मंदिरों को ज़मीन जायदाद भी दान में दी जाती थी? कुछ उदाहरण दो। देवता की पूजा के लिए इससे कैसे लाभ मिलता होगा?
* शहर के कारीगर किस-किस तरह से मंदिर को दान देते थे?
* शहर का भोगपति किस तरह से दान देता था?
* क्या ऐसा लगता है कि आसपास के गांव के लोग सीयडोणि आते थे?
* सीयडोणि के बारे में तुम्हें कौन से सन् से कौन से सन् तक की बातें पता चलीं?
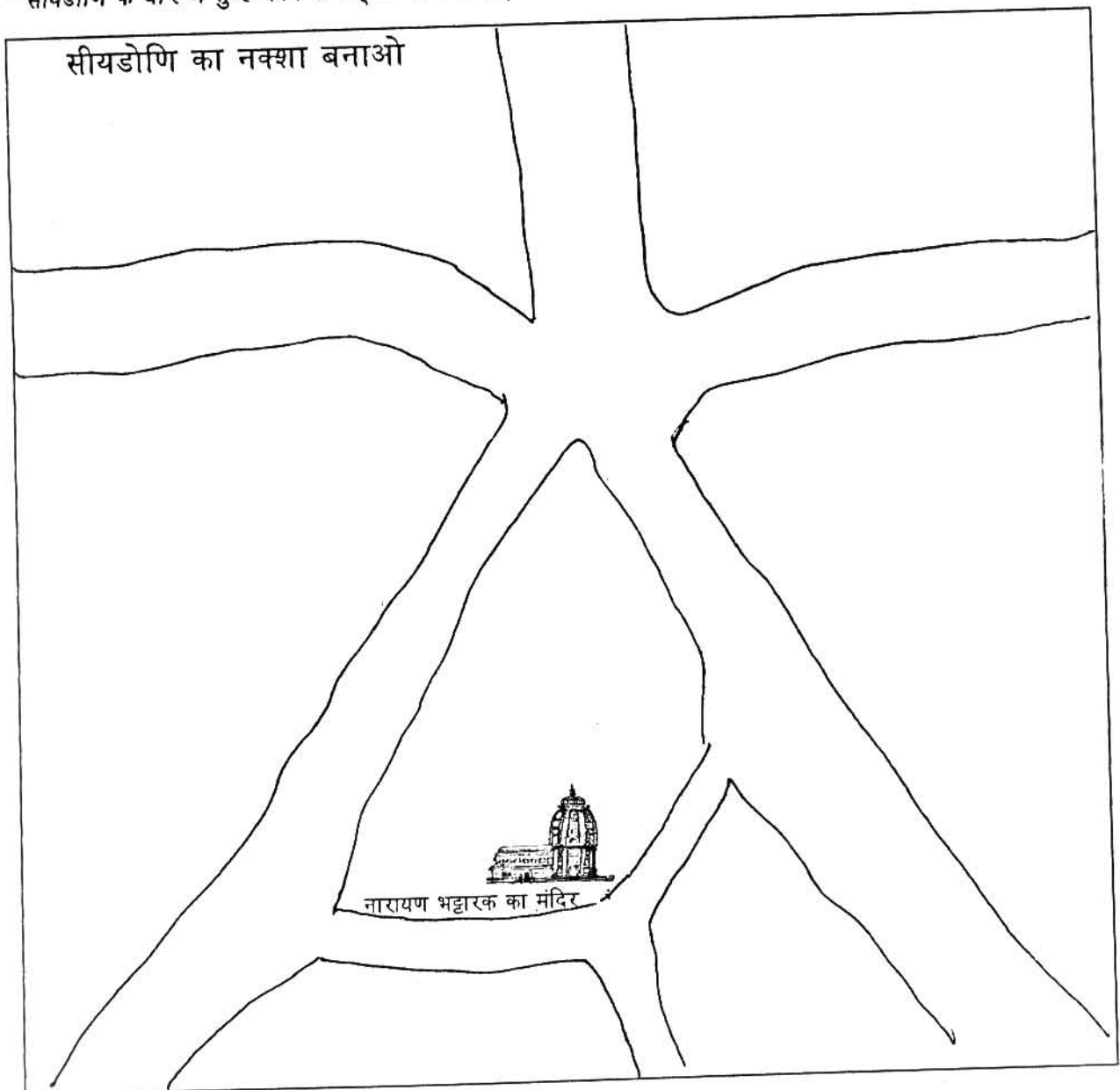
सन् 900 के लगभग अपने देश के कोने-कोने में शहर बस रहे थे। इनमें से कई सीयडोणि की तरह नष्ट हो गए- मगर बहुत सारे आज भी आबाद हैं। मध्यप्रदेश में ही ऐसे बहुत सारे शहर थे।

राजा अशोक के समय में मध्यप्रदेश में केवल तीन शहर थे- कौन-कौन से- बता सकते हो?

सन् 1000 तक आते-आते मध्यप्रदेश में ही कितने सारे शहर हो गए। साथ दिए नक्शे में देखो।

इनमें से कई शहर सीयडोणि जैसे नष्ट हो गए हैं। आज वहां केवल उनके खण्डहर बचे हैं- टूटे मंदिर, ईंट और पत्थर के ढेर, दूर-दूर तक बिखरी हुई खंडित मूर्तियां। इन वैभवशाली शहरों का आज केवल इतना ही बचा है।

मण्डप नाम के शहर को नक्शे में ढूंढो।
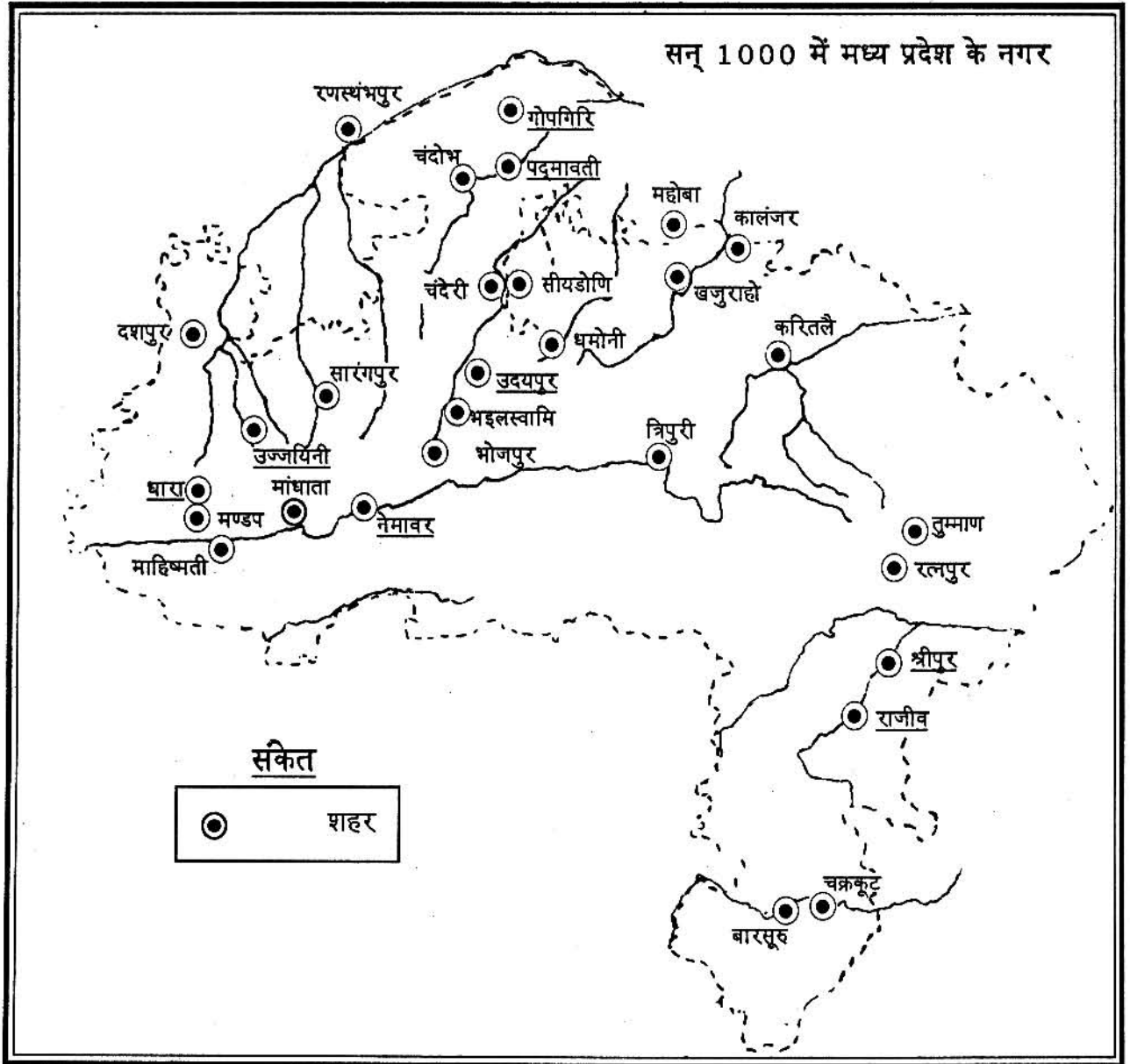
यह शहर एक ऊंचे पहाड़ पर बसा हुआ था। एक समय एक बड़े राज्य की राजधानी हुआ करता था मण्डप नगर। मगर वहां आज खण्डहरों के अलावा केवल एक छोटा सा गांव है। यह जगह आज मांडू कहलाती है। भोजपुर भी ऐसा ही एक शहर था। भोपाल के पास आज भी भोजपुर मंदिर के खण्डहर देखे जा सकते हैं।

मगर कुछ ऐसे भी शहर थे जो समय के साथ अपनी पुरानी जगह से हटकर किसी दूसरी जगह पर बस गये। यह कैसे हो सकता है- शहर कैसे उठकर चल सकता है? मगर हो न हो यह सच बात है। अक्सर तुमने सुना होगा कि फलाना गांव तो वहां बसा था फिर यहां आकर बस गया।

उसी तरह शहर भी अपनी जगह बदलते हैं। नक्शे में भईलस्वामि नाम के शहर को देखो। यह ऐसा ही एक शहर है। यह शहर आज अपनी पुरानी जगह से दो-तीन किलोमीटर की दूरी में बसा है और विदिशा कहलाता है। विदिशा से कुछ बाहर निकलने पर पुराने शहर का मिट्टी से ढका हुआ मलबा दिखाई देने लगता है।

बहुत सारे ऐसे शहर हैं जो तब से आज तक बने हुए हैं- मगर उनके नाम कुछ-कुछ बदल गये हैं। जैसे- चन्देल राजाओं की राजधानी का नाम खजूरवाहक था- आज उसका नाम खजुराहो है।

नीचे कुछ ऐसे ही पुराने शहरों के आधुनिक नाम दिये जा रहे हैं। नक्शे में उनके पुराने नाम हैं और उनके नीचे एक रेखा भी खींची गयी है। क्या तुम इन शहरों के पुराने नाम नक्शे में से पहचान कर यहां लिख सकते हो?

क्र.	*नए नाम*	*पुराने नाम*
1.	सिरपुर	
2.	राजिम	
3.	नेमावर	
4.	माहेश्वर	
5.	धार	
6.	मंदसौर	
7.	उदयपुर	
8.	उज्जैन	
9.	ग्वालियर	
10.	पवाया	
11.	चन्देरी	
12.	रायपुर	

10. समाज में जाति पाति

पाठ पढ़ने से पहले कक्षा में इन प्रश्नों पर विचार करो-
तुम्हारे गांव या शहर में कौन सी जातियां हैं? क्या हर जाति का कोई काम निश्चित है? क्या लोग अपनी जाति का पुराना काम ही करते हैं? जात-पात की बात का किस-किस चीज़ में ध्यान रखा जाता है? कभी तुम्हारे मन में जात-पात के बारे में कई सवाल उठे होंगे। कक्षा के सभी विद्यार्थी अपने अपने सवालों को बताएं। फिर इस पाठ को पढ़ें।

जाति क्या है?

आज भी भारत के सभी भागों में जात-पात की बातें देखने को मिलती हैं। यहां अधिकतर लोग अपने-आप को किसी न किसी जाति का मानते हैं। अक्सर जाति के आधार पर कुछ लोगों को जन्म से ऊंचा और कुछ लोगों को जन्म से नीचा माना जाता है। यहां तक कि समाज के कुछ लोगों को अछूत भी माना जाता है। उन लोगों पर तरह तरह का अत्याचार भी किया जाता है। तुम्हारे गांव या शहर में भी लोग कई जातियों में बंटे होंगे और एक दूसरे से जाति पाति के अनुसार व्यवहार करते होंगे।

इन विषयों पर तुम कई बार बातचीत करते होगे। लेकिन, क्या तुमने कभी सोचा है कि जाति क्या है - और जाति की क्या पहचान है? उदाहरण के लिए तुम कुछ लोगों का परिचय पढ़ो- "मैं रामू टेलर हूं", "मै गजानन पंडित हूं", "मैं भीरू लोहार हूं," "मैं शरदचन्द्र शिक्षक हूं।"

इनमें से किन लोगों की जाति तुम पहचान पाए? उन्हें रेखांकित करो।

तुमने ज़रूर भीरू को लोहार जाति का माना होगा। पर तुमने रामू को टेलर जाति का नहीं कहा होगा। तुम शायद सोच रहे हो कि लोहार जाति है, पर टेलर तो जाति नहीं। यह एक धन्धा है। हम ऐसा क्यों सोचते हैं? आओ इसके कुछ कारण स्पष्ट करें। तुम पढ़कर बताओ कि क्या तुम्हें ये कारण ठीक लगते हैं।

1. टेलर एक जाति नहीं है क्योंकि कोई जन्म से टेलर नहीं बन सकता। कोई भी कपड़े सिलने का काम सीख कर टेलर बन सकता है।

2. टेलर एक जाति नहीं है क्योंकि सब टेलर आपस में ही शादी करें ऐसा कोई नियम नहीं है - टेलर का लड़का कचहरी के बाबू की लड़की से शादी कर सकता है या फिर शिक्षक की लड़की से। ऐसा कोई नियम नहीं है कि टेलर का लड़का टेलर की लड़की से ही शादी करे।

3. टेलर जाति नहीं है क्योंकि ऐसा कोई नियम नहीं है कि वह टेलर के साथ ही उठ बैठ सकता है, टेलर के हाथ का खाना ही खा सकता है।

इसलिए टेलरी केवल एक धंधा है जाति नहीं।

जाति जन्म से तय होती है। एक जाति के लोग केवल आपस में शादी कर सकते हैं, जाति के बाहर शादी नहीं कर सकते। यह भी तय होता है कि एक जाति के लोग किस के साथ उठ बैठ सकते हैं, किस के हाथ का खाना खा सकते हैं, आदि।

क्या तुम अब कारण सहित बता सकते हो कि नीचे की सूची में से कौन-कौन सी जातियां हैं? और कौन-कौन से धन्धे हैं?

1. शिक्षक

2. डाकिया

3. बसोड़

4. ब्राह्मण

5. लोहा कारखाने में काम करने वाला मज़दूर

6. यादव

7. हरवाहा

8. कुम्हार

जाति व्यवस्था में एक और बात देखने को मिलती है- वह है लोगों को जन्म से ऊंचा या नीचा मानना। जो लोग जात-पात मानते हैं वे एक ब्राह्मण को चाहे वह कितना भी अनपढ़ हो ऊंचा मानेंगे न कि किसी अछूत कहलाने वाले को चाहे वह कितना भी विद्वान हो।

तो आओ थोड़ा समझें कि क्या पुराने ज़माने में भी जाति पाति की ऐसी बातें मानी जाती थीं? तब वे किस रूप में मानी जातीं थीं और किस तरह फैलीं? क्या उन दिनों भी जाति पाति का किसी ने विरोध किया या नहीं?

पिछले पाठों में तुमने पुराने ज़माने के कितने ही लोगों से मुलाकात कर ली है। उत्तर भारत के किसान, वेल्लाल किसान, परैयर मज़दूर, ब्राह्मण, शबर वनवासी, सीयडोणि नगर के व्यापारी व कारीगर, छोटे बड़े राजा और सामन्त। तुमने इन लोगों के आपसी रिश्तों को भी देखा और समझा है। अब इन रिश्तों की एक और ख़ास बात पर हम ध्यान देंगे। वह है जाति पाति के संबंधों की बात।

लाचार शिकारी अछूत जाति बने

शबर वनवासी तो जंगलों में अलग रहते थे। उनका अपना मुखिया भी था। शबर लड़के की दी हुई भेंट राजा हर्ष ने स्वीकार भी कर ली थी। यानी उन दिनों शबरों को तो अछूत नहीं समझा जाता था।

लेकिन कई और कबीलों और झुण्डों के लोगों को समाज में अछूत का सबसे निचला स्थान दिया जा चुका था। आओ पढ़ें कि यह कब और कैसे हुआ?

निषाद, चाण्डाल, केवट – तुमने अक्सर ये नाम सुने होंगे। ये वे लोग थे जो बहुत पुराने समय से शिकार कर के जिया करते थे। तुमने कक्षा 6 के पाठों में पढ़ा कि कैसे गौतम बुद्ध और राजा अशोक के समय में गंगा-यमुना के मैदान में खेती फैलने लगी थी। जिन जंगलों में निषाद, चाण्डाल जैसे शिकारी शिकार करते थे, उन जंगलों को काटा गया और गांव बसाए गए। गांव बसाने वाले लोगों और जंगलों मे रहने वाले कबीलों के बीच लड़ाई भी होती
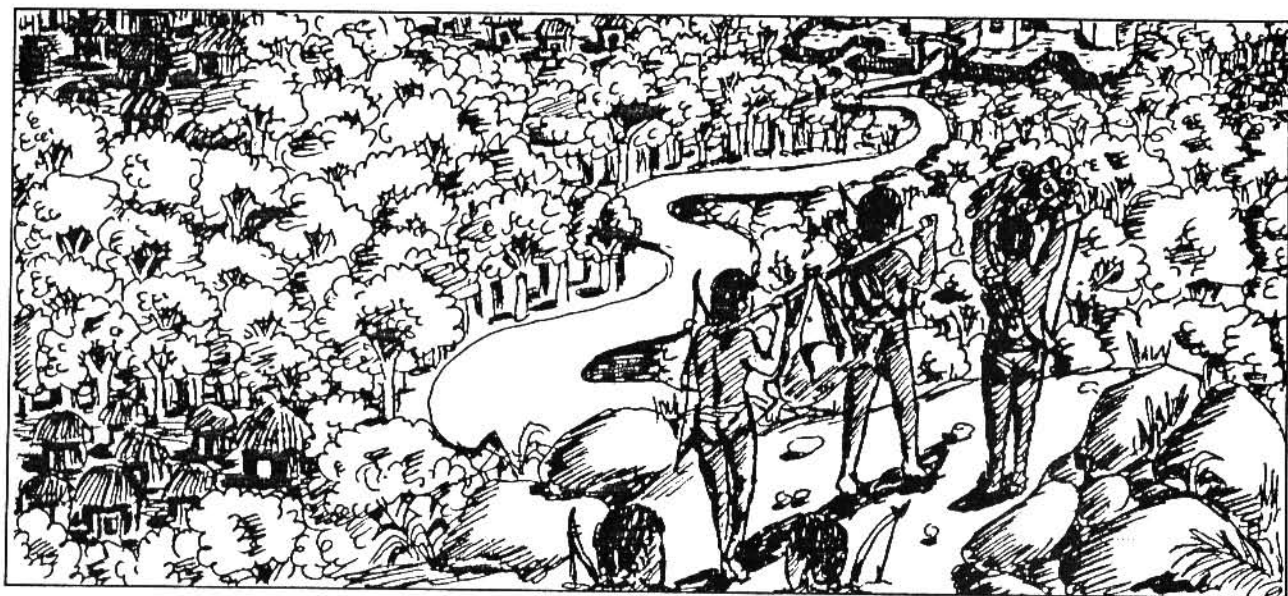
जंगल की चीज़े शहर ले जाकर बेचना

थी। मगर गांव बसाने वालों के लोहे के तीर और तलवार के सामने शिकारी लोग टिक नहीं पाए। उनके जंगलों की जगह गांव व शहर बसते गए।

अछूत माने जाने वाले लोग शहर के बाहर बस्तियों में रहते थे

ऐसे में शिकारी कबीले क्या करते? बहुत से कबीले तो दूसरे जंगलों में चले गए। मगर कई लोग नए गांवों-शहरों के आस-पास ही रह गए। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा?

गांव व शहर के लोगों को जंगल की कई चीज़ों की ज़रुरत पड़ती थी–जैसे, लकड़ी, बांस, खाल, मांस, कन्दमूल, फल, शहद आदि। कई शिकारी लोग जंगलों से इन चीज़ों को बटोरकर लाने लगे व गांव-शहरों में बेचने लगे। जंगल की चीज़ों के बदले में उन्हें अनाज, कपड़ा, लोहा आदि मिल जाता था।

समय के साथ कई सारे शिकारी लोग गांव-शहरों के आस-पास बसने लगे। उन्हें शहर या गांव के बीच में रहने तो नहीं दिया गया इसलिए उन्होंने बाहर ही अपनी बस्तियां बना लीं। अब धीरे-धीरे गांव शहर के लोग इन शिकारियों से कई और तरह के काम करवाने लगे। वे उन्हें ऐसे काम देने लगे जो वे खुद नहीं करना चाहते थे पर जो उनके लिए ज़रुरी भी थे। जैसे मांस के लिए जानवर मारना, मरे जानवर को हटाना, उसकी खाल निकालकर साफ करना, चमड़े की चीज़ें बनाना, मछली मारना, लकड़ी काटना, शमशान में काम करना। वे इन्हें गन्दे काम मानते थे – इसलिए अब लाचार चाण्डाल, निषाद आदि शिकारियों से इन्हें करवाने लगे। साथ ही उन्होंने यह नियम बना दिया कि शिकारी कबीले इन कामों को छोड़ कर और कोई काम धन्धा नहीं करेंगे।

गांव-शहर के लोग कहने लगे कि ये लोग 'गन्दे' काम करते हैं, इसलिए ये पवित्र नहीं हैं। इन्हें छूने या देखने से ही बाकी लोग अपवित्र हो जायेंगे। इसलिए इन्हें अछूत माना गया और कहा गया कि जो निषाद, चाण्डाल आदि कुल में जन्म लेगा वह जन्म से अछूत बन जाएगा और बड़ा होकर वही काम करेगा जो उनके लिए तय किए गए हैं।

गांव व शहर के लोग इन शिकारी लोगों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। उन लोगों की बोल-चाल, वेश-भूषा, रीति-रिवाज़ भी गांव-शहर वालों से बहुत फर्क थे। इस कारण से गांव-शहर के लोग इन शिकारियों से हिल मिल कर रहना नहीं चाहते थे। अछूत बनाए गए कबीलों के लोग आपस में ही उठते बैठते रहे, आपस में ही शादी ब्याह करते रहे। वे अपने पुराने देवी देवताओं व रीति रिवाज़ों को मानते रहे।

राजा हर्ष के समय तक आते-आते (यानी सन् 600 तक) और जंगल कटे, और खेत बढ़े, सिंचाई के साधन बढ़े, खेतों में काम भी बढ़ा। खेतों में काम करने के लिए मज़दूरों की ज़रुरत पड़ी। तब इन अछूत मानी जाने वाली जातियों से खेतों में मज़दूरी करवाई जाने लगी। पर, उन्हें कभी खुद ज़मीन का मालिक बनने का अधिकार नहीं था।

तुम तलैच्छंगाडु गांव में वेल्लाल किसानों के परैयर मज़दूरों से मिले हो। ये परैयर मज़दूर भी अछूत जाति के माने जाते थे। क्या तलैच्छंगाडु में परैयर लोग खेती

के मालिक थे?

"अछूतों" की मेहनत पर समाज के अनेक ज़रुरी काम चलते थे। पर इन्हीं मेहनत करने वालों को अपवित्र, अछूत बता कर उनका अपमान होता रहा। इस प्रकार वही कबीले जो जंगलों में आजादी से शिकार करते थे, सारा जंगल जिनका था, वे उसी स्थान पर, कई अपमान सहते हुए, दूसरों की सेवा करने लगे।

शिकारी कबीलों के लोग अछूत बनाए जाने के बावजूद क्या सोच कर गांव व शहरों के पास बसे होंगे?

उन पर किस तरह के बन्धन लगाए गए थे?

समाज में सब के लिए जाति पाति के नियम

बहुत पहले से समाज में ब्राह्मण अपने को सबसे पवित्र व ऊंचा मानते आए थे। दूसरी तरफ सबसे नीचे का दर्ज़ा अछूत कही गई जातियों को दिया गया। अलग-अलग इलाकों में जो राजवंश बन रहे थे, उनके कुलों को क्षत्रिय मानकर ऊंचा दर्ज़ा मिला। वेल्लाल किसान जैसी कई और जातियों को शूद्रों का निचला दर्ज़ा दिया गया। कई तरह के व्यापारियों व कारीगरों की भी जातियां हो गई थीं– जैसे कुम्हार, बढ़ई, लोहार, माली, कहार, तांबूलिक, सोनार, गंधिक, वणिक (बनिया)। इनमें से कुछ लोगों से तुम सीयडोणि शहर में मिले हो।

समाज के सभी तरह के लोगों के लिए नियम कायदे बन रहे थे–कि कौन किससे ऊंचा होगा और कौन नीचा, किस के बीच रोटी-बेटी का रिश्ता होगा और किन के बीच नहीं, कौन किसकी सेवा करेगा और कौन सेवा करवाएगा।

समाज में लोगों के बीच जो रिश्ते बन रहे थे उन्हें देखते हुए आपसी व्यवहार के कई नियम कायदे 'धर्मशास्त्र' नामक ग्रंथों में लिखे जाने लगे। धर्मशास्त्र ग्रंथों को ज़्यादातर ब्राह्मणों ने तैयार किया। इनमें लिखा गया कि लोग जिस जाति में जन्म लेते हैं उसी जाति का धंधा उन्हें अपनाना चाहिए। अगर कोई व्यक्ति अपने बाप-दादाओं का धंधा नहीं करता तो वह अधर्म है और उसे पाप लगेगा। इसी तरह दूसरी जाति में शादी करना भी पाप है और ऐसा करने वाले को भी दण्ड दिया जाना चाहिए।

उन दिनों लोगों के बीच ऊंच-नीच का भाव लागू करने की भी बहुत कोशिश की गई। धर्मशास्त्रों में यह लिखा गया कि अगर एक ब्राह्मण और एक शूद्र एक ही तरह के अपराध करते हैं तब भी ब्राह्मण को कम दंड और शूद्र को अधिक दंड दिया जाना चाहिए। अगर ऊंची जाति के लोग पैसा उधार लेते हैं तो उनसे कम ब्याज लेना चाहिए। अच्छे जरी रेशम के कपड़े ऊंची जाति के लोग ही पहन सकते हैं। नीची जाति के लोगों को फटे पुराने व सादे कपड़े ही पहनने चाहिए। नीची जाति के लोगों को हर तरह से ऊंची जाति के लोगों की सेवा करनी चाहिए। मन्दिरों व यज्ञों में ऊँची जाति के लोग ही भाग ले सकते हैं, नीची जाति के नहीं।

धर्मशास्त्रों में लिखने के अलावा ब्राह्मणों ने राजाओं से कहा कि जो लोग जात-पात के नियम तोड़ते हैं उन्हें दंड दिया जाए। उनका कहना था कि अगर राज्य में जात-पात के नियम लागू न होंगे तो अनर्थ हो जाएगा। नीची जातियां बराबरी करने लगेंगी और ऊंची जातियों की सेवा नहीं करेंगी। ऐसे में राज्य कैसे चलेगा?

वेलिर पुजारी, मुखिया और कबीले के लोग

दूसरी जाति का धंधा नहीं करना, दूसरी जाति में शादी न करना—तुम्हारे विचार में इन नियमों को लागू करने का क्या महत्व था, कक्षा में चर्चा करो।

तुम देखते होगे कि नियम बनते हैं पर कई बार लोग नियमों का पालन नहीं भी करते हैं। इसी तरह उन दिनों जाति-पाति के नियम तो बन रहे थे पर उन्हें कभी-कभी ज़रुरत पड़ने पर अनदेखा भी किया जाता था। इस बात के उदाहरण मिलते हैं कि कोई शूद्र जाति का होकर भी राजा बन गया और क्षत्रिय जाति के राजा ने दूसरी जाति की लड़की से शादी कर ली। फिर भी आज की तुलना में उन दिनों इन नियमों का ज़्यादा सख्ती से पालन होता था।

तुम्हारे परिवार व गांव में इन नियमों का कितना पालन होता है?

ऐसी बातों के चार उदाहरण सोचो जिनमें आजकल जाति के नियम कमज़ोर हो गए हैं।

जातपात की बातें पूरे भारत में फैलीं

शुरु शुरु में जात-पात के नियम सिर्फ गंगा-यमुना के मैदान और मालवा जैसे पुराने जनपदों के इलाके में ही माने जाते थे। भारत के अन्य भागों में, जैसे आज जहां बंगाल, कर्णाटका, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, असम, कश्मीर, केरल आदि प्रदेश हैं, जात-पात की बातें फैली नहीं थीं।

मगर जैसे जैसे सब इलाकों में राजा, महाराजा और सामंत बने, जैसे जैसे उन इलाकों में ब्राह्मण बसते गए, वैसे ही जात-पात की बातें भी फैलती गईं। उदाहरण के लिए, तमिलनाडु इलाके में एक कबीला बहुत पुराने समय से रहता था। यह था वेलिरों का कबीला। इस कबीले के अपने मुखिया थे, और पुजारी थे। उनके देवता थे मुरुगन। वेलिर लोग मुरुगन और अपनी एक देवी माता के लिए नाचगान करते थे व पशु बलि चढ़ाते थे।

धीरे-धीरे वेलिर कबीला खेती करने लगा। उनके कई गांव बसे। वेलिर लोगों में ऊंचे नीचे का फर्क आना शुरु हुआ। वेलिरों के मुखिया राजा बनने लगे। उन्होंने ब्राह्मणों को अपने इलाके में बुलाकर बसाया। जब ब्राह्मण जाकर वेलिरों के बीच बसे तो वे वेलिरों के राजा को ऊंची क्षत्रिय जाति का बताने लगे। वेलिरों के पुजारी को ब्राह्मण जाति का दर्जा दिया गया। उन्हें वेद पाठ करना, यज्ञ करना सिखाया गया। वेलिरों के ये पुजारी आगे जा कर द्रविड जाति के ब्राह्मण कहलाए। ब्राह्मणों ने वेलिर कबीले के खेती करने वाले लोगों को नीची शूद्र जाति का बताया।

मुखिया क्षत्रिय जाति का राजा बना और पुजारी ब्राह्मण बना

ये ही किसान वेल्लाल भी कहलाए। इन्हीं से हम तलैच्छंगाडु में मिले थे।

वेलिर कबीले के लोग तीन जातियों में बंट गए थे। ये थीं— ———, द्रविड ——— और शूद्र।

जिन ब्राह्मणों को वेलिर राजाओं ने बुलाकर बसाया था वे अपने आपको द्रविड ब्राह्मणों से ऊंचा मानते होंगे/ बराबर मानते होंगे/ नीचा मानते होंगे?

वेलिरों के राजा क्षत्रिय जाति के हो गए। इसी तरह सीयडोणि का सामन्त भी शायद क्षत्रिय ही माना जाता होगा। क्षत्रिय होने पर भी इन दोनों में क्या अन्तर हो सकता है? विचार करो।

शबर वनवासी भी खेती करते थे और तलैच्छंगाडु के वेल्लाल किसान भी। वेल्लाल किसान शूद्र जाति के माने गए। उनमें और शबर वनवासियों में क्या अन्तर हो सकता है?

जात-पात का विरोध

जात-पात के भेदभाव का शुरु से ही बहुत विरोध हुआ। सबसे पहले तो गौतम बुद्ध, महावीर और उनके विचारों को मानने वाले लोगों ने ही इस बात का खण्डन किया कि ब्राह्मण जन्म से ही सबसे ऊंचे और पवित्र हैं। उनका विचार था कि जन्म के आधार पर लोगों के बीच भेदभाव करना ग़लत है। बाद में कई और सन्त हुए जिन्होंने जाति के भेदभाव को ठुकरा कर जीने की कोशिश की। उनके बारे में हम आगे पढ़ेंगे।

आज अपने देश में जो कानून लागू हैं उनके अनुसार तो जातपात का भेदभाव करने से दण्ड मिल सकता है। छुआछूत मानना, कुएं, स्कूल, अस्पताल, होटल, मन्दिर आदि सार्वजनिक जगहों में हरिजनों को न आने देना कानूनी जुर्म है। पर, जातपात को खतम करने के कानूनों के बावजूद ये भेदभाव पूरी तरह मिट नहीं पाए हैं।

तुम्हारे विचार में जातपात खत्म करने के लिए किस तरह की कोशिश की जानी चाहिए?

अभ्यास के प्रश्न

1. सबसे पहले किन लोगों को अछूत जाति माना गया? अछूत जाति कहलाने से पहले वे क्या करते थे?
2. वनवासी लोगों को जनपद के लोगों ने किस तरह के काम करने को दिए और क्यों?
3. द्रविड ब्राह्मण एक जाति है - यह कैसे बनी थी?
4. जात-पात के नियमों में ऊंच-नीच का भेदभाव किस तरह था? कुछ उदाहरण बताओ। इस भेदभाव का विरोध कैसे हुआ?

11. हिन्दू धर्म के देवी देवता और रीति रिवाज़

तुमने कक्षा 6 में लोगों के पूजा-पाठ और धर्म के बारे में कई बातें पढ़ी। शिकारी मानव, सिंधु घाटी के लोग, आर्य, आदि लोगों के धर्मों के बारे में तुमने पढ़ा था। गुरुजी की मदद से उन बातों को याद करो और चर्चा करो कि इनमें से कौन-कौन सी बातें आज भी हमारे धर्म में हैं।

आज के देवी देवता व पूजा के तरीके

अपने देश के बहुत सारे लोग हिन्दू धर्म को मानते हैं। हिन्दू धर्म मानने वाले लोग बहुत सारे देवी देवताओं की पूजा करते हैं, उन्हें तरह-तरह के तरीकों से पूजते हैं। दिया और अगरबत्ती जलाके, फूल और भोग चढ़ाके, मूर्तियों की पूजा होती है। कभी-कभी कुण्ड में अग्नि जलाके होम होता है। इसे यज्ञ भी कहते हैं। कभी-कभी बकरे या मुर्गे की बली भी चढ़ती है।

अपनी कक्षा में चर्चा करके इस तालिका को भरो–

देवी देवता

1. कौन सी देवियां पूजी जाती हैं?	*2. कौन से देवता पूजे जाते हैं?*	*3. कौन से जीव जन्तु पूजे जाते हैं?*	*4. कौन से पेड़ पौधे पूजे जाते हैं?*

पूजा करने के तरीके

1. जीवन में कब-कब यज्ञ करवाया जाता है और ब्राम्हणों को दक्षिणा दी जाती है?	*2. यज्ञ आदि किन देवताओं के नाम किया जाता है?*	*3. देवी माता के लिए पशु बलि कब दी जाती है?*	*4. किन देवी-देवताओं के लिए बलि चढ़ती है?*	*5. धूप, दीप भोग से किसकी पूजा होती है?*

भारत में हर जगह हिन्दू धर्म मानने वाले लोग शिव, विष्णु, राम, कृष्ण जैसे देवताओं को मानते हैं। दुर्गा, पार्वती, काली आदि देवी माताओं को मानते हैं, और कई पेड़-पौधों, जीव जंतुओं को भी पुजते हैं। अलग-अलग समय पर यज्ञ, ब्राम्हणों को दान-दक्षिणा, पशु-बलि और धूप, दीप, भोग से पूजा करना यह सब किया जाता है। तुम्हें क्या लगता है, कि अपने देश के सब लोगों का धर्म शुरू से ऐसा था? क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि हमारे पूर्वज हमेशा से आज के लोगों की तरह कई विधियों से कई देवी, देवताओं की पूजा करते थे?

बुद्ध और अशोक के समय में

अगर हम आज से 2500 वर्ष पूर्व लोगों के धर्म के बारे में पूछताछ करने निकलते तो क्या पाते? उन दिनों भारत में बहुत अलग-अलग तरह के लोग रहते थे। इन लोगों का रहन-सहन, पहनावा, रीति-रिवाज, बोल-चाल सब एक दूसरे से भिन्न था।

पहले तुम पृष्ठ 101 के नक्शे में देखो, उन दिनों भारत में कौन-कौन लोग रहते थे। साथ ही यह भी देखो वे क्या काम करते थे - शिकार या खेती। नीचे की तालिका भरो।

लोग	उनका काम

ये सब लोग हमारे पूर्वज थे। इन लोगों के देवी-देवता पूजने के तरीके भी अलग-अलग थे।

1. शिकारियों का धर्म : जंगलों में जो शिकारी थे उनका धर्म कैसा था? हर शिकारी कबीले के अपने देवी देवता थे। कोई कबीला सांप को देवता मानता था, तो कोई पीपल के पेड़ को। कोई कबीला जंगली सुअर की पूजा करता था तो कोई और मछली, हाथी या फिर वानर को पूज्य मानता था। ये लोग नाच-गाकर पूजा करते थे। ये
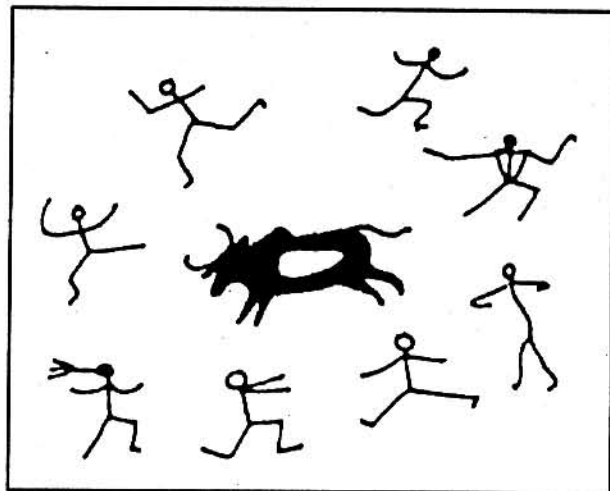
शिकारियों का नाच

लोग न तो यज्ञ करते थे, न पूजा पाठ न व्रत रखते थे।

2. खेती करने वालों का धर्मः उन दिनों खेती करने वाले कबीले भी थे। इन लोगों का धर्म कैसा था? इन कबीलों के भी अलग-अलग देवी-देवता थे। मगर आम तौर पर ये खेती करने वाले धरती को मां मानते थे - धरती अनाज आदि देकर लोगों के पेट जो पालती है। अक्सर देवी के क्रोध को शांत करने के लिये वे बकरा, भैंस, मुर्गा जैसे जानवरों की बलि चढ़ाते थे। फिर उसके मांस को प्रसाद के रूप में खाते थे। यही उनका पूजा करने का तरीका था। ये लोग अग्नि या राम या शिव की पूजा नहीं करते थे। न ही ये लोग यज्ञ आदि संस्कार करते थे।

3. वैदिक धर्म : उस समय कुछ और लोग रहते थे जो इन्द्र, वरुण, अग्नि, मित्र आदि देवताओं के लिये यज्ञ, हवन या होम करते थे। इन लोगों के बीच वेद मंत्र पढ़ना एक ज़रूरी संस्कार भी था। मगर ये लोग पीपल या सांप या देवी मां को नहीं पूजते थे। ये लोग नाच गाकर या देवी को बलि चढ़ाकर पूजा नहीं करते थे।

4. शैव व वैष्णव धर्म : तुम सोच रहे होगे, क्या उन दिनों शिव, विष्णु, राम या कृष्ण की पूजा नहीं होती थी? क्या लोग मंदिरों में जाकर देवी देवताओं की पूजा नहीं करते थे?

हां, बुद्ध व अशोक के दिनों मंदिर बने ही नहीं थे। कुछ थोड़े से लोग शिव की पूजा करते थे, कुछ और विष्णु या राम की पूजा करते थे। यमुना नदी के पश्चिम में यदु व सूरसेन नाम के लोग रहते थे जो कृष्ण की पूजा करते थे। देवता की मूर्तियां बनाना, उन्हें नहलाना, धूप-दीप, भोग चढ़ाना, नाम जपना, यह सब उनका पूजा करने का तरीका था। ये लोग यज्ञ, या देवी मां की पूजा नहीं करते थे। शुरू में वैदिक धर्म मानने वाले लोग भी शिव, विष्णु की मूर्ति-पूजा के तरीके को तुच्छ मानते थे।

सही जोड़ियां बनाओ–

धरती को देवी मां मानकर पूजना, यज्ञ करना, मूर्ति को धूप-दीप चढ़ाना, ब्राह्मण को दान देना, देवी माता के लिये पशुबलि चढ़ाना, मिलकर नाचना, भैंसे की पूजा, देवता के लिये मन्दिर बनाना।

इस तरह अलग-अलग प्रांत या कबीले के लोगों के देवी-देवता अलग थे। उनकी पूजा की विधियां अलग-अलग थीं। यह स्थिति आज से 2500 साल पहले थी।

अशोक के समय के बाद धर्मों का मेलजोल

अशोक के समय के बाद भारत के लोगों के जीवन में बहुत सारे बदलाव आये। अलग-अलग प्रांतों में कई शिकारी कबीले खेती करने लगे। वे अन्य खेती करने वाले कबीलों से घुल मिल गये। अब लोगों ने एक दूसरे के धर्म की बातें भी अपनाईं, जैसे शिकारियों के सांप, नाग, भैंस, पीपल, आदि को अन्य खेती करने वाले भी पूजने लगे – उनके लिये नाच गान करने लगे। तो क्या उन्होंने देवी मां के लिये बलि चढ़ाना छोड़ दिया? नहीं, वे नाग और पीपल के साथ देवी मां को भी पूजते रहे। शिकारी लोग भी अब खेती करने वालों की देवी मां की पूजा करने लगे।

गुप्त राजाओं के समय में बने देवगढ़ के नारायण मंदिर की मूर्ति

इन लोगों के बीच ब्राह्मण भी आकर बसे। उन्होंने अपने धर्म की बातें, जैसे इंद्र, वरुण, अग्नि आदि देवताओं के लिये यज्ञ करना, वेद पढ़ना, ब्राह्मणों को दान दक्षिणा देना आदि फैलाईं। उन दिनों ब्राह्मणों की बहुत प्रतिष्ठा थी। कई महत्वपूर्ण परिवारों ने ब्राह्मणों के धर्म की बातों को अपनाया। अब लोग पहले की तरह पीपल, नाग या देवी मां को पूजते थे, साथ ही वे यज्ञ करना, दान-देना ये बातें भी मानने लगे। ब्राह्मण भी अब पीपल, नाग, देवी मां की पूजा करने लगे।

धर्म में नई बातें कैसे अपनाई जाती हैं इसके उदाहरण तो तुमने भी देखे होंगे। जैसे संतोषी माता की पूजा कुछ साल पहले तक नहीं होती थी। फिर इस देवी की पूजा फैली और लोगों के धर्म में घुलमिल गई।

क्या तुमने हाल में किसी नये देवी, देवता, बाबा आदि की पूजा अपनाई जाती देखी है? चर्चा करो कि नए देवी, देवताओं की पूजा कैसे तुम्हारे यहां फैली और लोगों द्वारा अपनाई गई।

अशोक के समय के बाद शिव, विष्णु, और कृष्ण जैसे देवताओं की पूजा भी कई लोगों ने अपनाई। पूजा करने का एक नया तरीका भी बन रहा था। जगह-जगह शिव और विष्णु की मूर्तियां बनाकर मंदिर में रखी जाने लगीं। समुद्रगुप्त जैसे गुप्त राजाओं के समय से बहुत सारे मंदिर बनने लगे। उनमें रखी मूर्तियों को नहलाना, सजाना, धूप, दीप, भोग चढ़ाना, फूलों से अर्चना करना, यह बातें सब लोगों में फैलने लगीं। इन देवताओं को पूजने वालों ने भी ब्राह्मणों के प्रभाव में

ाकर शिव और विष्णु के लिये यज्ञ रना और वेद मंत्र पढ़ना शुरू कर देया।

क्या शिव और विष्णु को अपनाने के बाद लोगों ने अपने पुराने धर्म- नाग, पीपल, देवी या भैंसे की पूजा छोड़ दी? नहीं। लोग अपने पुराने देवी, देवता पूजते रहे और साथ-साथ उन्होंने एक दूसरे के देवी, देवता व उनको पूजने के तरीके अपनाये।

सत्यनारायण की पूजा में यज्ञ और ब्राह्मण भोजन

पहले जो लोग केवल नाग, भैंसा या पीपल को पूजते थे– वे अब देवी मां, शिव, विष्णु, कृष्ण को भी पूजने लगे, ब्राह्मणों को दान भी देने लगे और यज्ञ भी करवाने लगे।

जो लोग पहले केवल देवी मां को पूजते थे अब वे लोग नाग, पीपल, भैंसा, शिव, विष्णु, इन्द्र को भी मानने लगे। जो लोग पहले केवल इन्द्र, वरुण आदि देवताओं के लिये यज्ञ करते थे, वे अब नाग, भैंसा, पीपल, देवी मां, शिव, कृष्ण आदि देवताओं को भी पूजने लगे। इस तरह अलग-अलग लोगों का धर्म घुलमिल गया। इसी घुलने मिलने से हिन्दू धर्म बना है। आज भी हिन्दू लोग इसी मिले-जुले धर्म को मानते हैं।

मिले जुले धर्म के उदाहरण

जब हिन्दू लोग शंकरजी की पूजा करते हैं, तब साथ ही सांप, बैल, दुर्गा माता को भी पूजते हैं। जब सत्यनारायण की कथा होती है, तब नारायण (विष्णु) की पूजा के साथ वेद मंत्र पढ़े जाते हैं और यज्ञ (हवन) भी किया जाता है। नव दुर्गा के समय देवी मां की पूजा के साथ हवन भी किया जाता है और पशु बलि भी दी जाती है।

इन तीन उदाहरणों में से छांटो –

1. शिकारियों के धर्म से ली गई है ....

2. कौन सी बात वैदिक धर्म से ली गई है ....

3. कौन सी बात खेती करने वाले कबीलों के धर्म से ली गई है ....

4. कौन सी बात वैष्णव-शैव धर्मों से ली गई है ....

अमीर और गरीब लोगों के धर्म में फर्क

मगर सारे लोगों का धर्म एक जैसा नहीं रहा। गांव और नगर के धनी संपन्न और ताकतवर लोगों ने यज्ञ, हवन, शिव और विष्णु की पूजा आदि बातों को ज़्यादा अपनाया। इन लोगों ने ब्राह्मणों और मंदिरों को बढ़ावा दिया।

इनके विपरीत साधारण और ग़रीब लोग नाग, पीपल और देवी मां की पूजा अधिक करते रहे। ग़रीब लोगों के पास ब्राह्मणों को अच्छी दान-दक्षिणा देने व यज्ञ करवाने का साधन भी कम था। फिर उनके बीच ब्राह्मणों का धर्म कैसे फैलता? संपन्न और ऊँची जाति के लोग 'अछूत' माने जाने वाले लोगों को शिव और विष्णु के मंदिरों में प्रवेश नहीं करने देते थे। इस कारण भी ग़रीब लोगों में शिव व विष्णु को पूजने की प्रथा कम ही फैली।

इसीलिये जब कि अमीर लोगों के धर्म में यज्ञ-हवन, मंदिर, विष्णु व शिव बहुत माने जाने लगे, ग़रीब लोगों के धर्म में देवी पूजा, बलि चढ़ाना, नाग, पीपल, भैंसे की पूजा ज़्यादा मज़बूती से बनी रही।

भक्त और संत

राजा हर्ष के समय और उसके बाद कई भक्त और संत हुये। इन लोगों ने ब्राह्मणों के धर्म और आम लोगों के धर्म से अलग कुछ विचार, लोगों में फैलाये। ये संत कहते थे कि ईश्वर उसी को प्राप्त होता है जो सच्चे दिल से भगवान से प्रेम करे, भगवान की भक्ति में डूब जाये। मंत्रों से, संस्कारों से, ब्राह्मणों को दक्षिणा देने से या फिर पशुओं की बलि देने से ईश्वर नहीं मिलता। इस तरह के संतों के प्रभाव में भी कई लोग आये। खासकर ग़रीब लोगों के बीच इन संतों के विचार लगातार बने रहे।

ग़रीब लोग नाग, पीपल, और देवी मां की पूजा अधिक करते रहे।

अभ्यास के प्रश्न

1. सही या गलत बताओ–

अ. पूरे भारत में एक ही कबीले के लोग रहते थे।

ब. राजा अशोक के समय शिव व विष्णु की पूजा पूरे भारत में नहीं फैली थी।

स. शुरू में पीपल, नाग, भैंसे आदि का पूजन शिकारी कबीलों के धर्म में होता था।

द. वैदिक धर्म में देवी माता की पूजा होती थी।

प. शुरू में खेतीहर कबीले देवी माता के लिये यज्ञ करते थे।

2. खेतीहर कबीलों के लोगों ने अशोक के समय के बाद अपने धर्म में कौन सी नई बातें अपनाईं?

3. वैदिक धर्म मानने वाले लोगों ने अपने धर्म में क्या नई बातें अपनाईं?

4. शिव और विष्णु की पूजा करने वालों ने अपने धर्म में क्या नई बातें अपनाईं?

5. शिकारी कबीलों ने अपने धर्म में क्या नई बातें अपनाईं?

6. अमीर और गरीब लोगों के धर्म में क्या फर्क रहा व क्यों?

7. भक्त और संतो ने ईश्वर की पूजा का क्या रास्ता बताया?

12. इस्लाम धर्म
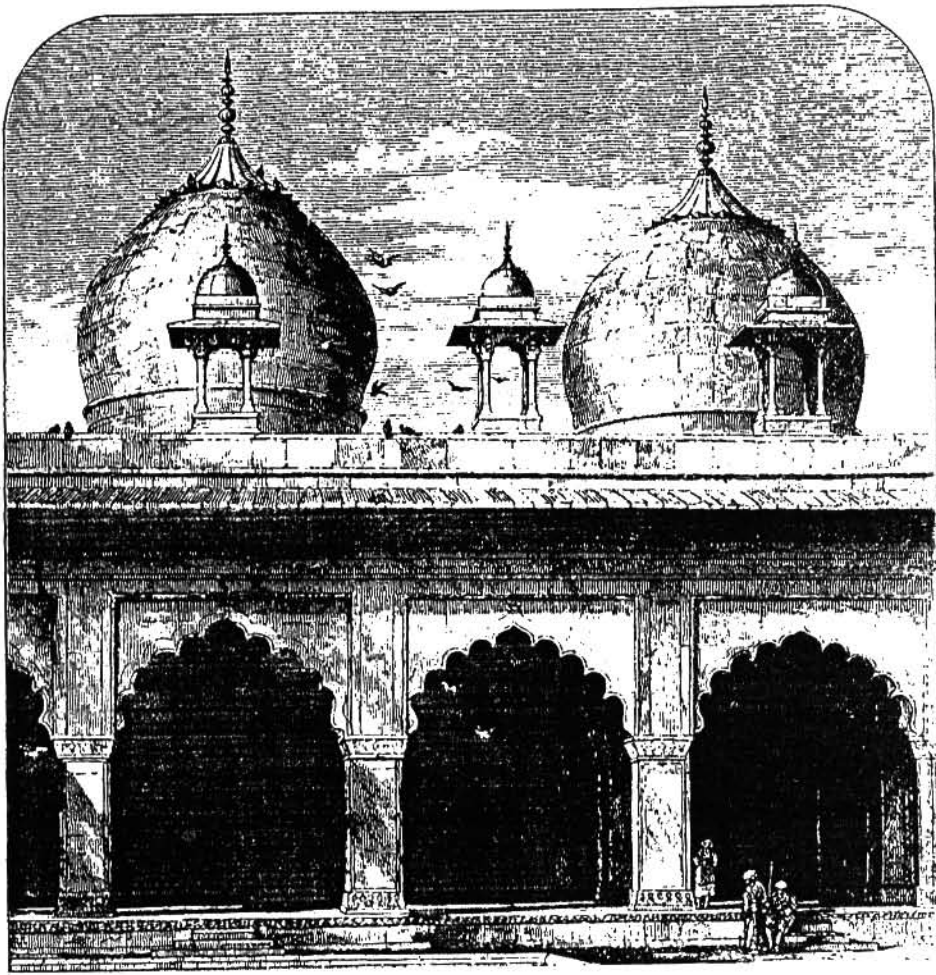
पिछले पाठ में हमने यह देखा कि हिन्दू धर्म कैसे बना। अब हम अपने देश के एक और महत्वपूर्ण धर्म, इस्लाम धर्म के बारे में कुछ पढ़ें। यह चित्र है एक मस्जिद के आंगन और दीवार का जिसकी ओर मुंह करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं।

इस्लाम धर्म को मानने वाले दिन में पांच बार ईश्वर, यानी अल्लाह से प्रार्थना करते हैं। इसे नमाज़ पढ़ना कहा जाता है। अगर तुम्हारे आसपास कोई मस्जिद है तो तुम्हें दिन में पांच बार उसकी मीनार से यह आवाज़ गूंजती हुई सुनाई देगी– "अल्लाह ओ अकबर........" यानी अल्लाह महान है। इस आज़ान (यानी पुकार) को सुनते ही मुसलमानों को पता चलता है कि यह प्रार्थना करने का समय है। वे जहां भी हों, ज़मीन साफ करके उस पर एक साफ कपड़ा बिछाते हैं और मक्का शहर की दिशा में मुंह करके नमाज़ पढ़ते हैं। हर शुक्रवार को किसी गांव या शहर के सब मुसलमान मस्जिद में इकट्ठा होकर नमाज़ पढ़ सकते हैं।

तुमने ध्यान दिया होगा कि मस्जिद में किसी देवी-देवता की मूर्ति नहीं होती। एक बड़ा आंगन होता है

जिसमें सब मुसलमान इकट्ठा हो कर नमाज़ पढ़ सकें। पश्चिम की तरफ जिस ओर मुंह करके नमाज़ पढ़ी जाती है एक दीवार होती है। इस्लाम धर्म में मूर्ति पूजा बिलकुल मना है। ऊंच-नीच, छुआछूत का भेद-भाव करना भी बहुत गलत माना गया है। यह इस बात से भी स्पष्ट होता है कि मस्जिद में सभी मुसलमान एक साथ कतार में खड़े होकर नमाज़ पढ़ते हैं।

इस्लाम धर्म में लोग यह मानते हैं कि एक ही ईश्वर है अल्लाह। हम सब उसके बंदे हैं। और हज़रत मोहम्मद अल्लाह का पैगाम यानी संदेश लाने वाले पैगम्बर हैं। हज़रत मोहम्मद ने जब अल्लाह का पैगाम (संदेश) लोगों को बताना शुरू किया, तब इस्लाम धर्म की शुरुआत हुई। ऐसा कब हुआ था और कहां हुआ था?

हज़रत मोहम्मद

यह अरब देश की बात है। वहां के मक्का नामक शहर में सन् 571 में हज़रत मोहम्मद का जन्म हुआ था। उस समय अरब में अनेक छोटे-छोटे कबीले थे जो लगातार एक दूसरे से लड़ते रहते थे। ये लोग बहुत सारे देवी-देवताओं को मानते थे। मोहम्मद इन लोगों के बीच यह संदेश देने लगे कि ईश्वर एक है। बहुत सारे देवी-देवताओं और उनकी मूर्तियों की पूजा करना गलत है। एकमात्र ईश्वर, अल्लाह, की सीधे और सरल तरीके से प्रार्थना करनी चाहिए। मोहम्मद ने कहा अल्लाह को मानने वाले सब लोग बराबर हैं और एक हैं। इसलिए उन्हें आपस में लड़ना झगड़ना नहीं चाहिए।

मुसलमान मानते हैं कि मोहम्मद के माध्यम से अल्लाह ने जो संदेश लोगों के लिए भेजे वे कुरान नाम की किताब में लिखे हुए हैं। कुरान मुसलमानों का धार्मिक ग्रंथ है।

शुरू में मक्का शहर के कई लोगों ने मोहम्मद की बातों का विरोध किया था। यहां तक कि मोहम्मद को मक्का छोड़कर दूसरे शहर मदीना जाना पड़ा था। पर धीरे-धीरे अरब के सारे कबीले मोहम्मद की बातें मानने लगे।

अरब देश में शुरू होकर इस्लाम धर्म दुनिया के कई देशों में फैला। बहुत से लोग मुसलमान बने। सन् 1000 तक यह धर्म कहां-कहां फैला था नक्शा नं. 1 में देखो।

दुनिया भर के मुसलमान चाहे वो किसी भी देश के हों, अल्लाह को ही अपना ईश्वर मानते हैं और हज़रत मोहम्मद को उनका पैगम्बर मानते हैं।

सन् 1000 में इंस्लाम धर्म इन जगहों में फैला था
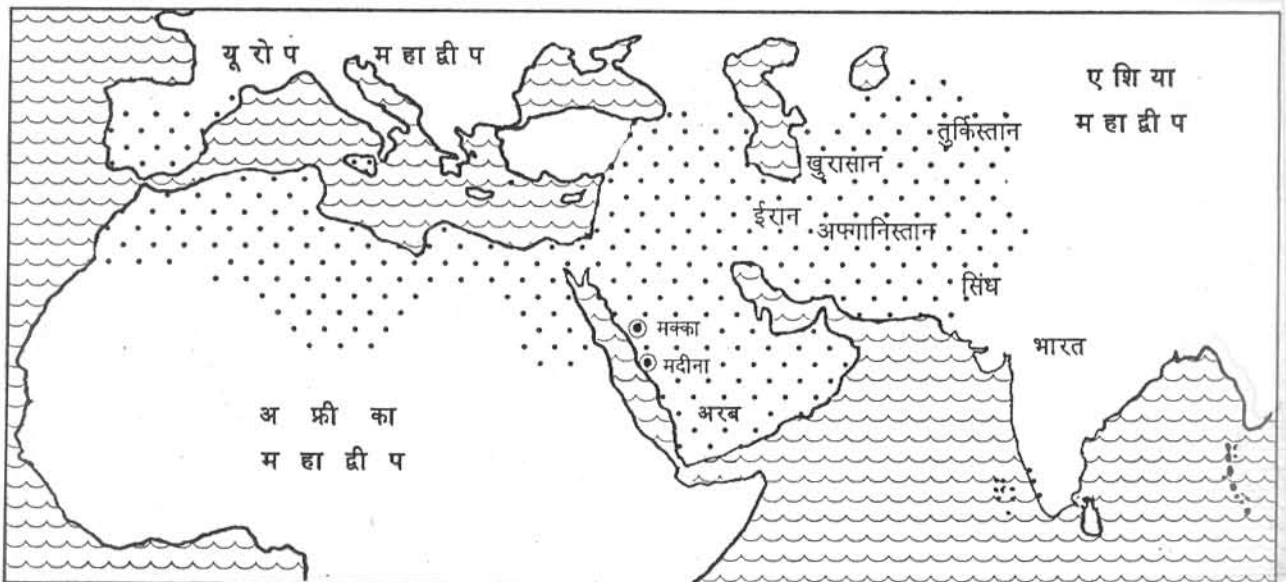
इस्लाम धर्म की प्रमुख बातें

एक ईश्वरः मुसलमानों का सबसे महत्वपूर्ण विश्वास है कि ईश्वर एक ही है और हज़रत मोहम्मद उसके संदेशवाहक हैं।

नमाज़ः हर मुसलमान को दिन में पांच बार नमाज़ पढ़ना होता है।

हजः हज़रत मोहम्मद के जीवन से जुड़ी जगहें, मक्का और मदीना दुनिया भर के मुसलमानों के लिए तीर्थ स्थल हैं। हर साल लाखों मुसलमान अरब देश में मक्का-मदीना का हज (यानी तीर्थ) करने जाते हैं।

रोज़ाः इस्लाम धर्म की रीतियों में एक और महत्वपूर्ण रीति है, एक महीने का रोज़ा (यानी उपवास) रखना। जिस माह में रोज़े रखे जाते हैं उसे रमज़ान का महीना कहते हैं। रमज़ान के महीने में मुसलमान सुबह सूरज उगने से पहले खाना खा लेते हैं और फिर सूर्यास्त होने पर मस्जिद से गोला फूटता है ताकि लोग जान जाएं कि रोज़ा तोड़ने का समय हो गया। इस महीने के आखिर में ईद का त्यौहार मनाया जाता है।

दानः कुरान के अनुसार मुसलमानों के लिए एक और नियम बहुत ज़रूरी है। नियम है कि हर मुसलमान को अपनी धन-संपत्ति का एक बटा चालीसवां हिस्सा ग़रीब लोगों में बांट् देना चाहिए। कुरान में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि अमीर लोग पैसे की होड़ में न लगे रहें।

ये इस्लाम धर्म की पांच प्रमुख बातें हैं। उन्हें एक-एक करके बताओ।

इस्लाम धर्म भारत आया

इस्लाम धर्म की शुरुआत अरब देश में हुई थी। आओ देखें कि यह धर्म भारत कैसे आया।

कई अरब व्यापारी जो इस्लाम धर्म को मानते थे, भारत के पश्चिमी तट पर व्यापार करने आते थे। वहां के बंदरगाहों में वे छोटी-छोटी बस्तियां बनाकर बसे। राजाओं ने उन्हें बसने में मदद की। उन्हें अपने घर, गोदाम और मस्जिद बनाने के लिए ज़मीन दी। इन व्यापारियों के प्रभाव से आस-पास के कई लोग मुसलमान बने।

ईद मिलन

भारत के पश्चिम में इस्लाम धर्म एक और घटना के कारण आया। मोहम्मद बिन कासिम ने जब सिंध पर अपना राज्य बनाया तो उसके साथ कई अरब लोग सिन्ध और मुल्तान में बसे। उनके कारण वहां के लोगों को इस नए धर्म के बारे में पता चला।

भारत के उत्तरी हिस्सों में इस्लाम धर्म की जानकारी ईरानी शरणार्थियों के जरिए आई। सन् 900 के लगभग, ईरान देश पर तुर्क कबीले हमले कर रहे थे। इन हमलों से बचने के लिए कई ईरानी लोग भारत आए। उनमें कई लोग कारीगर थे, कई लोग सन्त थे। कुछ सिपाही भी शरण लेने वालों में थे। राय राणाओं ने इन शरणार्थियों को अपने राज्य में बसाया। राय राणाओं की सेनाओं में कई ईरानी सिपाही शामिल कर लिए गए। ये ईरानी लोग मुसलमान थे। इनके संपर्क में आकर बहुत से लोगों को इस्लाम धर्म के बारे में मालूम पड़ा।

सन् 1190 के बाद भारत में तुर्क लोगों ने राज्य बना लिया। इस समय तक आते-आते तुर्क लोग भी इस्लाम धर्म मानने लगे थे। तुर्कों के साथ बड़ी संख्या में ईरानी, अफगानिस्तानी, खुरासानी लोग भी भारत आ कर बसे।

सन् 1210 के करीब जब मंगोल नाम के कबीलों ने खुरासान, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान के राज्यों को हरा कर उनके शहर नष्ट कर डाले तब मंगोलों से बचने के लिए वहां के बहुत से लोग भारत आए।

इस्लाम धर्म मानने वाले कौन-कौन लोग भारत आए और क्यों आए- सूची बनाओ।

ये लोग अपने साथ अपने यहां के रीति-रिवाज़ व धर्म (जो कि इस्लाम धर्म था) तो साथ लाए ही पर अपने हुनर, पहनावा, पकवान भी लेकर आये थे। उनके साथ उठने-बैठने मिलने-जुलने से भारत के लोगों ने उनकी कई बातें सीखीं और अपनाईं। तुम पायजामा कुर्ता या फिर सलवार कमीज़ पहनते होगे। तुर्क-ईरानी लोगों के आने से पहले भारत में लोग आमतौर पर इस तरह के सिले हुए कपड़े नहीं पहनते थे। तब तो धोती या साड़ी ही पहनते थे। पायजामा-कुर्ता, सलवार-कमीज़- इनका चलन तुर्क-ईरानी लोगों से सीख कर ही हुआ।

तुम हलवा या गरम-गरम समोसे व कचोड़ी तो चटकारे लेकर खाते होगे। इन पकवानों का चलन भी तुर्क-ईरानी लोगों के आने के बाद ही हुआ। ईरानी व तुर्क लोगों ने ऐसे पकवान बनाने के तरीके और कपड़े सिलने के तरीके यहां के लोगों को सिखाये।

ईरानी व ईराकी कारीगरों ने इमारत बनाने के कुछ नए तरीके यहां के कारीगरों को सिखाये- ये क्या तरीके थे तुम आगे के पाठ में पढ़ोगे।

भारत में पुराने समय में किताबें किस पर लिखी जाती थीं क्या तुम्हें मालूम है? पत्तों पर, पेड़ की छालों पर, रेशम के कपड़ों पर या फिर तांबे के पट्टों पर। उस समय यहां के लोग कागज़ बनाना नहीं जानते थे। कागज़ बनाने का तरीका ईरान के लोगों ने चीनियों से सीखा हुआ था। जब ईरानी लोग यहां आ बसे तो वे साथ में कागज़ बनाने का तरीका भी लाये। यहां भी कागज़ बनने लगा और कागज़ पर लिखा जाने लगा।

एक और चीज़ जो भारत के कारीगरों ने इन लोगों से सीखी - चरखे से सूत कातना। इससे पहले तकली से सूत काता जाता था जिसमें बहुत समय लगता था।

इस तरह इन लोगों के आने से देश-विदेश की कई बातें भारत में आईं। भारत के लोगों ने ये सीखीं और उनके जीवन, रहन-सहन में कई बदलाव आये।

इस्लाम धर्म मानने वाले लोगों से भारत के लोगों ने जो चीज़ें सीखीं उनकी सूची बनाओ।

दूसरे देशों के मुसलमान भी भारत से कई बातें सीखने आते थे। अलबिरूनि भारत इसीलिए आया था। वह क्या-क्या सीखने आया था, याद करके बताओ।

लोगों के धर्म में और विचारों में भी बदलाव आए। भारत के बहुत से लोगों ने इस्लाम धर्म अपनाया और यहां भी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने, रोज़ा रखने जैसी बातों का चलन शुरू हुआ। भारत में जैसे बहुत सुन्दर मंदिर बन रहे थे, वैसे ही बहुत सुन्दर मस्जिदें भी बनीं।

तुम इस बात पर ध्यान दे चुके हो कि जब यहां के लोगों ने कोई नया धर्म अपनाया तो अपने पुराने धर्म की बहुत सी बातों को बनाए भी रखा! इसी तरह जब भारत के लोगों ने इस्लाम धर्म अपनाया तब अपने कई पुराने रीति-रिवाज़ों और रस्मों को बनाए रखा।

सूफी और भक्त सन्त

सन् 1100 से 1500 के बीच भारत में कई ऐसे सन्त हुए जिनका नाम तुम आज भी सुनते होगे। कबीर, नानक, दादू, रैदास, तुकाराम, रामानंद, बल्लभाचार्य। इनके दोहे तुम अपनी हिन्दी की पुस्तक में भी पढ़ते होगे।

लोगों की साधारण भाषा में लिखे और गाए गए ये गीत व दोहे ईश्वर के प्रति भक्ति भाव से भरे हैं। इनमें बहुत से ऐसे विचार हैं जिनको तब से लेकर अब तक लोग मानते आए हैं।
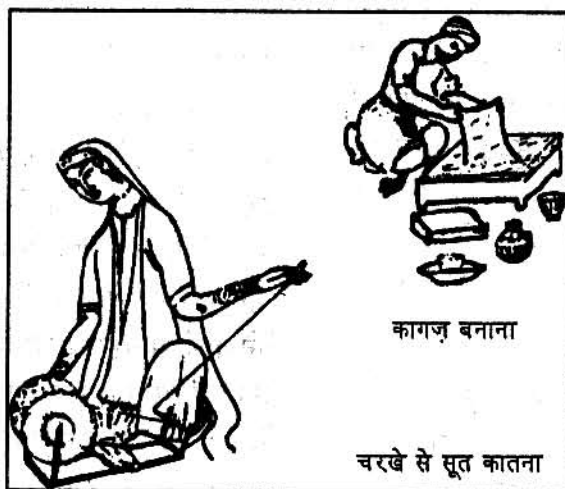
इन्हीं भक्त संतों की तरह कई मुसलमान संत भी थे जो सूफी संत कहलाते थे। अजमेर के ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, पंजाब के बाबा फरीद, दिल्ली के हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया बहुत जाने माने संत हुए थे। अजमेर में ख्वाजा साहब की मृत्यु तिथि पर मनाया जाने वाला उर्स (यानी त्यौहार) अपने देश के बड़े त्यौहारों में से एक है। हज़ारों हिन्दू व मुसलमान उर्स के दिन अजमेर जाते हैं और ख्वाजा जी की कब्र (यानी दरगाह) पर चादर चढ़ाते हैं, और मन्नत मांगते हैं।

इन भक्त संतों और सूफी संतों के विचार आपस में बहुत मिलते-जुलते थे। सूफियों ने इस बात पर जोर दिया कि सच्चे दिल से अल्लाह को प्रेम करना और अपने बुरे कामों पर पश्चाताप करना अल्लाह को पाने का सही तरीका है। धन दौलत व पद-सब त्याग कर ग़रीबों और लाचारों की सेवा करना ही धर्म है। वे कट्टर रस्मों के खिलाफ थे। वे ऐसी रस्मों पर ज़ोर देते थे जिनमें भक्त का मन अल्लाह की भक्ति में डूब जाए। सूफियों के डेरे पर झूम-झूम कर गीत गाने (यह कव्वाली हुआ करती थी) व नाचने की प्रथा थी।

सूफी संत बीच शहर में अमीर मुसलमानों के साथ न रहकर शहर के बाहर ग़रीबों की बस्तियों के पास रहते थे। उनके घरों में अमीर-ग़रीब, हिन्दू-मुसलमान सभी आते थे और साथ भोजन करते थे।

ये संत सुल्तानों से अपने आपको दूर ही रखते थे। उनका मानना था कि सुल्तान कुरान में बताए रास्ते पर न चलकर पाप और अत्याचार के तरीके अपनाते हैं। सूफियों के इस व्यवहार से बहुत लोग उनकी तरफ खिंचे चले आते थे, चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान।

सूफियों की तरह ही भक्त-सन्तों ने भी लोगों के बीच यह भावना फैलायी थी कि ईश्वर को पाने के लिये सच्चे दिल से प्रेम करना ही एक मात्र तरीका है। उन्होंने भी आम लोगों की बोली में कई सुन्दर गीतों की रचना की जिसे भक्त लोग मगन होकर गाते थे। वे भी ऊंच-नीच, जात-पात के भेद-भावों के खिलाफ थे और कहते थे कि ईश्वर का भक्त चाहे वह ब्राह्मण हो या अछूत वे उसकी इज्ज़त करते हैं। ये संत सूफियों के विचारों से प्रभावित हुए और सूफी सन्त इनके विचारों से प्रभावित हुए। इनमें से कई संत कहने लगे कि हिन्दू और मुसलमान दोनों का ईश्वर एक है। ईश्वर को पाने का रास्ता भी एक समान है।

लल्ला देद कश्मीर की विधवा ब्राह्मण औरत थी। कई सूफी संत उसे अपना पीर या गुरु मानते थे। वो कहती थी–

"शिव सब जगह मौजूद है, सब में मौजूद है। फिर हिन्दू और मुसलमान में फर्क मत करो। अगर तुम समझदार हो तो अपने आप को समझो। यही ईश्वर की सही समझ है।"

इन सन्तों के विचारों की मदद से हिन्दू और मुसलमान लोगों ने एक दूसरे के धर्म की समान बातें समझीं। लोगों के बीच यह विचार बैठने लगा कि एक ही ईश्वर है– चाहे उसे अल्लाह, राम, शिव, विष्णु जैसे अलग-अलग नामों से जाना जाता है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. इनके बारे में तुम क्या जानते हो– कुरान, मक्का-मदीना, हज, रमज़ान, नमाज़, पैगम्बर मोहम्मद, दरगाह और उर्स?
2. किन लोगों के साथ इस्लाम धर्म भारत आया?
3. सन् 1000 से पहले ईरानी लोग भारत क्यों आये? राय-राणाओं ने उन्हें किस तरह की सहायता दी?
4. भक्त और सूफी संतों के मन में ईश्वर को प्राप्त करने का तरीका एक सा था या फर्क था? वो क्या तरीका था?

13. देहली में तुर्कों का राज्य बना

तुमने अक्सर पढ़ा होगा कि कोई राजा युद्ध में जीत गया या कोई और राजा हार गया। वास्तव में यद्ध में क्या-क्या होता होगा, सब अपनी-अपनी बात बताओ। अगर कोई यद्ध में जीते तो उसका कारण क्या हो सकता है - इस बात पर भी चर्चा करो।

महमूद ग़ज़नी

उन दिनों की बात है जब भारत में कई छोटे बड़े राजा और सामन्त थे। उत्तर भारत में चौहाण, तोमर, गहड़वाल, चन्देल, चालुक्य जैसे वंशों के राज्य थे। ये अपने आपको राजपूत वंश कहते थे।

पृष्ठ 158 में दिए गए नक्शे में ईरान, अफगानिस्तान, खुरासान व तुर्किस्तान पहचानो।

हम इन जगहों की बात इसलिए कर रहे हैं क्योंकि वहीं से तुर्क लोग भारत में भी राज्य बनाने आए। उनका भारत आना कैसे हुआ? कौन राजा था जो भारत आया?

तुर्क लोगों द्वारा पहला बड़ा हमला तब हुआ जब महमूद ग़ज़नी नाम के तुर्क राजा ने भारत पर हमला किया। पर वह भारत में राज्य नहीं बनाना चाहता था। उसकी नज़रें ईरान, अफगानिस्तान व खुरासान के क्षेत्र में ही दूसरे तुर्क राजाओं को हरा कर अपना राज्य बढ़ाने में लगी थीं।

जब महमूद ग़ज़नी भारत में राज्य बनाना नहीं चाहता था फिर वह भारत क्यों आया? इसलिये कि वह अपनी सेना बनाने के लिए धन जुटाने की कोशिश कर रहा था। इस कोशिश में उसने सन् 1000 से सन् 1025 तक 17 बार विभिन्न राजपूत राज्यों पर आक्रमण किया। हर बार आकर वह धन लूट कर चला जाता था। इस सिलसिले में उसने कई राजाओं को हरा कर उनके धन पर कब्ज़ा किया। उन मंदिरों और बौद्ध मठों को तोड़ा व लूटा जिनमें बहुत धन दौलत इकट्ठी हुई थी।

तुर्क राजा आपस में लड़ते थे

मोहम्मद ग़ोरी

राज्य बनाने के इरादे से जो तुर्क राजा भारत आया उसका नाम था मोहम्मद ग़ोरी। वह अफगानिस्तान में ग़ोर नाम की जगह से आया था। मोहम्मद की लड़ाई एक दूसरे तुर्क राजा से चल रही थी। यह था खुरासान का शाह।

मोहम्मद और शाह दोनों तुर्क थे। पर दोनों ही एक दूसरे से लड़ कर अपना राज्य बढ़ाना चाहते थे। मोहम्मद ग़ोरी को लगा कि शाह से जीतना मुश्किल काम है, तो क्यों न कहीं और अपना राज्य फैलाएं?

पृष्ठ 164 के मानचित्र में ग़ोर और ग़ज़नी ढूंढो। ये जगहें दिल्ली से किस दिशा में हैं?

महमूद ग़ज़नी और मोहम्मद ग़ोरी के बीच तुम्हें क्या फर्क दिखा?

ग़ोरी ने सबसे पहले पंजाब में मुल्तान शहर पर आक्रमण किया और मुल्तान को हथिया लिया। फिर राजस्थान के रेगिस्तान से होते हुए वह गुजरात की तरफ बढ़ा। गुजरात उन दिनों एक बहुत ही सम्पन्न क्षेत्र था। मगर गुजरात में राज्य करने वाला चालुक्य वंश का राजा भीम, उसे रोकने में सफल हुआ। मोहम्मद मुश्किल से अपनी जान बचा कर लौटा।

मोहम्मद ने इस पराजय से हिम्मत नहीं हारी। उसने अपनी हार पर विचार किया और बहुत सोच समझके व तैयारी करके उसने पंजाब पर पहले कब्ज़ा करने की ठानी। 1190 तक पूरा पंजाब मोहम्मद के अधीन हो गया। भटिण्डा तक उसका शासन चलने लगा। वहां उसने अपने अधिकारी व सैनिक तैनात किए।

मोहम्मद ग़ोरी जिन जगहों पर राज्य करता था उन्हें नक्शे में इस चिन्ह से दिखाओ - ▒

क्या तुम नक्शा देख कर बता सकते हो कि मोहम्मद के लिए गुजरात की तुलना में पंजाब पर विजय पाना ज़्यादा आसान क्यों था?

नक्शा देख कर यह तालिका भी भरो–

सन् 1200 में उत्तर भारत के राज्य

	जगह	राजवंश
1.	अनहिलवाड़ा	
2.	अजमेर	
3.	देहली	
4.	कन्नोज	
5.	लखनउटी	
6.	खजुराहो	
7.	धार	

पृथ्वीराज चौहान

जिन दिनों ग़ोरी हमले कर रहा था उन्हीं दिनों अजमेर के चौहाण वंश के राजा भी अपने राज्य का विस्तार करने में लगे हुए थे। वे 1150 तक देहली के तोमर वंश को हरा चुके थे। पृथ्वीराज चौहाण ने बुन्देलखण्ड के चन्देल वंश के राजा को महोबा नाम की जगह पर हराया। इसी युद्ध में आल्हा और ऊदल लड़े थे और महोबा की रक्षा में उन्होंने अपनी जान गंवाई थी। उन्हीं की याद में आज भी सावन के महीने में आल्हा गाया जाता है।

क्या तुम्हें आल्हा और ऊदल की कहानी मालूम है? नहीं मालूम तो गुरुजी से पूछो।

तुर्क राजाओं की तरह राजपूत राजा भी आपस में लड़ते रहे थे। महोबा की जीत के बाद पृथ्वीराज कन्नोज के गहड़वाल राजा जयचन्द से लड़ना चाहता था। पर जयचन्द शक्तिशाली था और पृथ्वीराज की उससे लड़ने की हिम्मत नहीं हुई। तब पृथ्वीराज राज्य बढ़ाने के लिए गुजरात की तरफ बढ़ा। पर चालुक्य राजा भीम ने जैसे मुहम्मद को हराया था, वैसे ही पृथ्वीराज को भी हरा दिया।

राजपूत राजा आपस में लड़ते थे
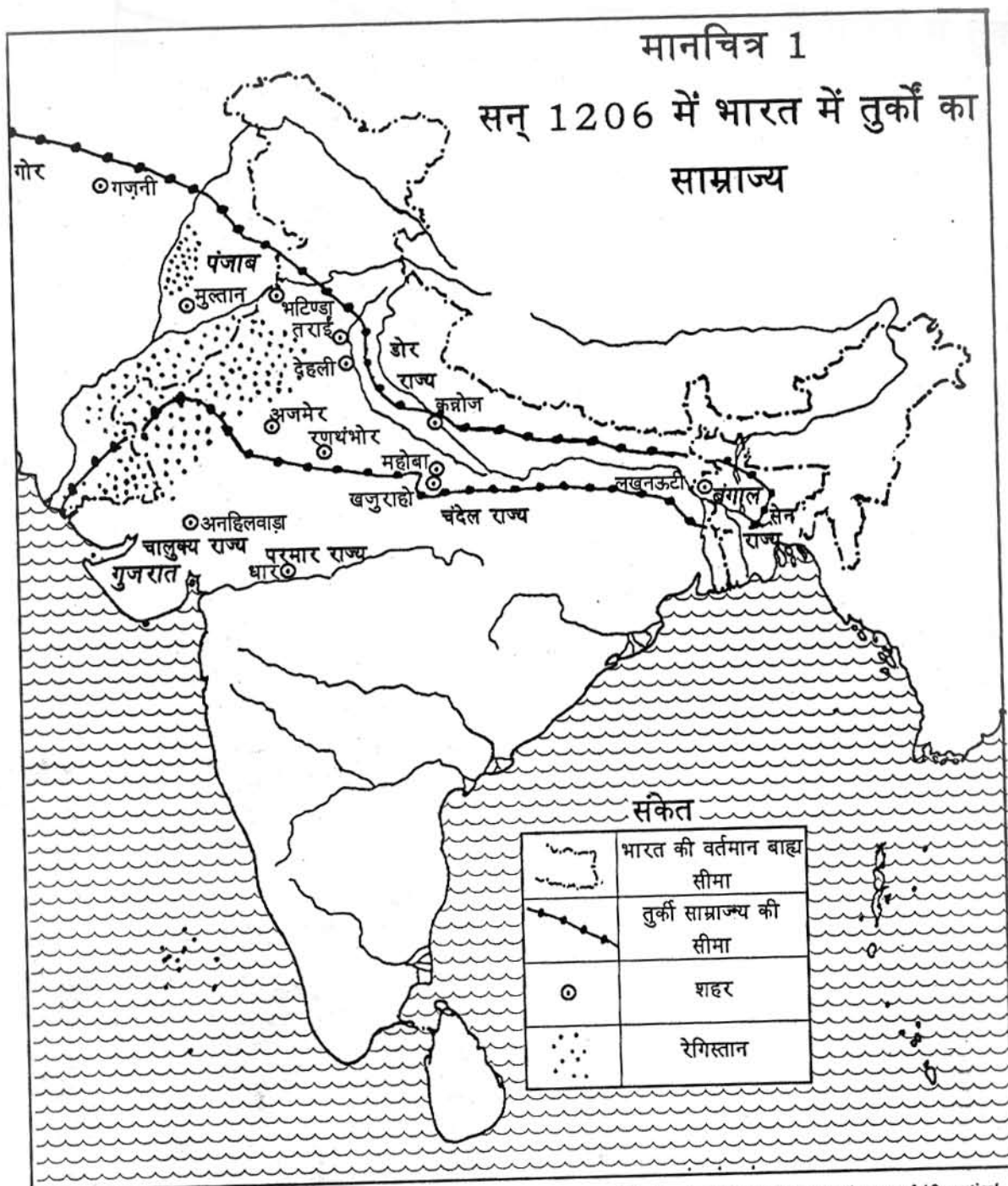
पैमाना : 1 से. मी. = 200 कि. मी.
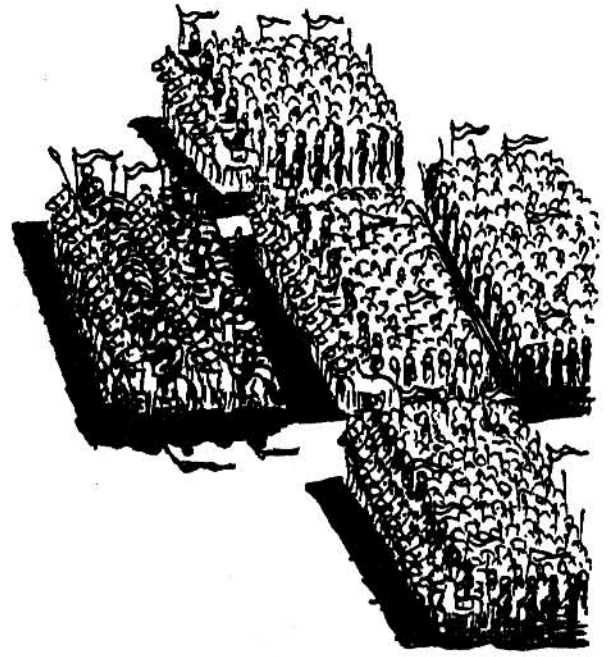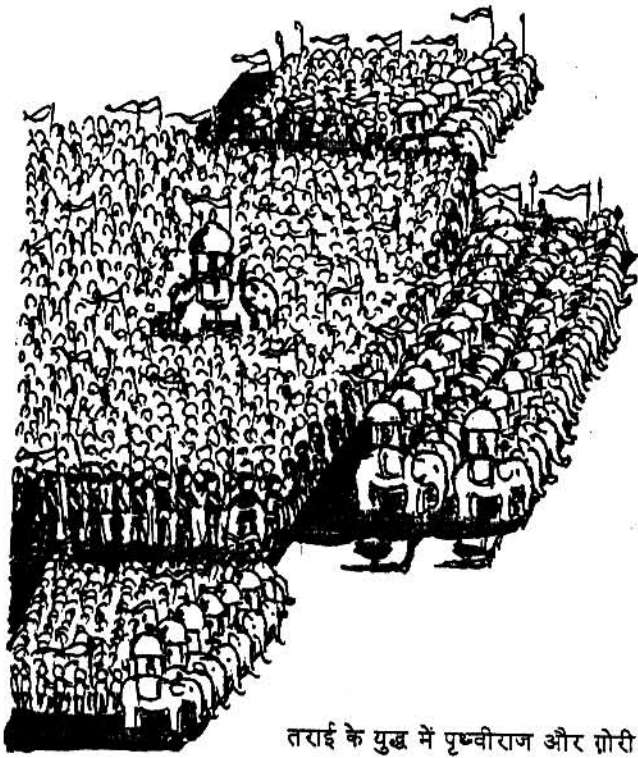
तराई के युद्ध में पृथ्वीराज और ग़ोरी की सेनाएं। दोनों सेनाओं में फर्क बताओ

पृथ्वीराज जिन जगहों पर राज्य करता था उन्हें नक्शे में इस चिन्ह से दिखाओ-

भीम से हारकर पृथ्वीराज दिल्ली लौटा। अब वह राज्य विस्तार के लिए किस ओर बढ़े? उसकी निगाहें पंजाब की तरफ गईं। पर पंजाब में तो मोहम्मद ग़ोरी धाक जमाए था। अब स्वाभाविक था कि पृथ्वीराज और मोहम्मद के बीच युद्ध हो।

तराई का युद्ध

पृथ्वीराज ने भटिण्डा पर हमला बोलने की तैयारी कर ली। यह सुनकर मोहम्मद भी ग़ोर से अपनी सेना लेकर भटिण्डा पहुंचा। दोनों राजाओं की सेना तराई नाम की जगह पर 1191 में लड़ीं। मोहम्मद हार गया और जान बचाकर भाग खड़ा हुआ। पृथ्वीराज ने भटिण्डा को अपने राज्य में मिला लिया।

एक साल तक मोहम्मद ने खूब तैयारी की और एक ताकतवर सेना जुटाई। 1192 में उसने फिर से पृथ्वी पर हमला बोला। पृथ्वीराज ने आसपास के राजाओं से मदद मांगी और उनमें से कुछ राजाओं ने मदद भी की। इस तरह पृथ्वीराज चौहाण के पास तीन लाख से अधिक सैनिक हो गए। मोहम्मद के पास केवल एक लाख बीस हज़ार सैनिक थे। लेकिन मोहम्मद के पास घुड़सवारों की बहुत ही मज़बूत पलटनें थीं। घोड़े और घुड़सवार दोनों मज़बूत इस्पात के कवच से लैस थे। वे बड़ी तेज़ी से, फुर्ती से आक्रमण कर सकते थे।

मोहम्मद ने तराईं से कुछ दूरी पर अपना डेरा डाला। वहां अपनी सेना की सारी भारी-भरकम चीज़ें- भोजन सामग्री, बैलगाड़ी आदि छोड़ दीं। साथ ही कुछ 10,000 घुड़सवार भी वहां तैनात किए ताकि ज़रूरत पड़ने पर बुलाया जा सके। बाकी सैनिकों के साथ वह तराईं पहुंचा।

युद्ध शुरू होने पर सेनाओं की स्थिति ऐसी थी। एक तरफ पृथ्वीराज की सेना थी। उसने अपनी सेना को चार भागों में विभाजित किया था। बीच में पृथ्वीराज अपनी टुकड़ी के साथ था। उसके आगे उसका सामन्त गोविन्दराय अपने हाथियों के साथ खड़ा था। पृथ्वीराज के दाएं और बाएं सेना की टुकड़ियां थीं। मोहम्मद के विपरीत पृथ्वीराज ने अपनी पूरी की पूरी सेना तराईं में ही तैनात कर दी थी।

गोविन्दराय पृथ्वीराज का सामन्त था- इस बात से तुम क्या समझते हो?

पृथ्वीराज की सेना के सामने मोहम्मद की सेना थी। उसने अपनी सेना को पांच भागों में बांटा था। पृथ्वीराज की तरह वह अपनी टुकड़ी के साथ बीच में था। उसके सामने शक्तिशाली घुड़सवारों व धनुष-धारियों की एक टुकड़ी थी। मोहम्मद के दाएं, बाएं व पीछे भी सेना की टुकड़ियां थीं।

चित्र में पृथ्वीराज कहां रहा होगा, मोहम्मद कहां रहा होगा और गोविन्दराय कहां रहा होगा?

गोविन्दराय ने आक्रमण शुरू किया। उसके हाथी तेज़ी से बढ़ कर आगे आए और मोहम्मद के सैनिकों को कुचलने लगे। इतने में मोहम्मद के घुड़सवारों ने आगे बढ़कर तीनों तरफ से हाथियों को घेर लिया और उन पर तीरों की वर्षा शुरू कर दी। घायल हाथी न आगे भाग पाए न दाएं न बाएं। वे बड़ी तेज़ी से मुड़कर पीछे की तरफ भागे। अब तुम ही सोचो पृथ्वीराज की सेना का क्या हुआ होगा?

जब पृथ्वीराज की सेना में हलचल मच गई तो मोहम्मद के घुड़सवार तेज़ी से दौड़ते हुए आगे बढ़े और पृथ्वीराज की पूरी सेना को घेर लिया। घुड़सवार पृथ्वीराज की सेना में भी थे पर वे तुर्क घुड़सवारों जैसे कुशल नहीं थे। उनके घोड़े भी उतनी अच्छी नस्ल के न थे। पृथ्वीराज की सेना में हाथी और पैदल सैनिक ही अधिक थे। आखिर तुर्क घुड़सवारों की तुलना में वे कितना तेज भागते? कई घंटों तक मारकाट, भागदौड़ चलती रही और अन्त में पृथ्वीराज हार कर भाग निकला।

तुर्कों की जीत के बाद

मोहम्मद ने पृथ्वीराज को अपना सामन्त बना लिया और उसे राज्य लौटा दिया। पर कुछ सालों बाद मोहम्मद ग़ोरी ने तय कर लिया कि वह हिन्दुस्तान में ही अपना राज्य जमाना चाहता है। वो पूरे उत्तर भारत को अपने कब्ज़े में करने की ठान चुका था। इसीलिए उसने पृथ्वीराज चौहाण को मार डाला और दिल्ली व अजमेर पर अपना अधिकार जमा लिया।

मोहम्मद ने पृथ्वीराज के बेटे को एक छोटे से क्षेत्र में राजा बना रहने दिया। मोहम्मद ने उसे रणथंभोर पर राज्य करने भेज दिया और वह खुद दिल्ली और अजमेर से राज्य करने लगा।

नक्शा देख कर बताओ कि दिल्ली और अजमेर पर नियंत्रण करने से मोहम्मद ग़ोरी दूसरे किन राज्यों पर हमला कर सकता था?

सन् 1207 तक तुर्कों ने किन-किन राज्यों को हरा कर अपने अधीन कर लिया— नक्शे में देखो।

जब किसी राजपूत राजा को हरा कर विजयी तुर्क उसकी राजधानी में प्रवेश करते थे तो अक्सर वहां के महलों व मंदिरों को लूट कर तोड़ डालते थे। वे इस्लाम धर्म मानते थे और इस्लाम धर्म के अनुसार ईश्वर के लिए मंदिर व मूर्ति बनाना ठीक नहीं माना जाता। तुर्क सुल्तानों यानी राजाओं को लगता था कि मंदिर व मूर्ति तोड़ कर उन्हें धार्मिक यश व पुण्य मिलेगा। मंदिर तोड़ने से वे हारे हुए लोगों पर अपनी जीत और ताकत भी जता पाते थे।

पर जब नई-नई जीत की खुशी का मौका बीत जाता और हारे हुए लोग तुर्कों का शासन स्वीकार कर लेते तो तुर्क सुल्तान उन्हें अपने टूटे हुए मंदिरों की मरम्मत करने देते थे। तब वे अपने राज्य के लोगों के साथ मुसलमान बनने की ज़ोर ज़बरदस्ती भी नहीं करते थे। उन्हें यह लगता था कि ऐसा करने से लोग उनका विरोध करेंगे और इस कारण वे अपना राज्य मज़बूत नहीं बना पायेंगे। इस बात का ज़िक्र उस समय के कई ग्रंथों में मिलता है।

अपना राज्य मज़बूत करने के लिए तुर्क सुल्तान हारे हुए राजाओं को सामन्त के रूप में भी नहीं रहने देते थे। वे हारे हुए राजाओं को हटा कर उनके राज्य पर खुद शासन करते थे। 15-16 सालों में तुर्कों ने भारत में अपना इतना बड़ा साम्राज्य कैसे बना लिया यह तुमने इस पाठ में देखा।

तुर्कों की जीत के कारणों पर विचार

तुर्कों की सफलता के बारे में इतिहासकार काफी विचार करते हैं। वे साचते हैं, यह कैसे संभव हुआ कि दूर ग़ोर से आया हुआ मोहम्मद 16 सालों के अंदर पंजाब से बंगाल तक अपना शासन स्थापित कर पाया और सब राजाओं को एक के बाद एक हराता चला गया। मोहम्मद ग़ोरी से पहले भी कई राजपूत राजा हुए थे जिन्होंने आसपास के कई राजाओं को हराया था। राजपूत राजा वीरता से लड़ने में बड़ा गर्व महसूस करते थे। पर यह कैसे हुआ कि तुर्क सेना वीर से वीर राजपूत सेना से भी श्रेष्ठ साबित हुई?

इतिहासकार इस बारे में छानबीन करते हैं और राजपूतों की हार व तुर्कों की जीत का अलग-अलग कारण बताते हैं। इतिहासकारों के बीच इस बात को लेकर सहमति नहीं है। चलो अब हम कुछ इतिहासकारों की बात पढ़ें और देखें कि किस का मत सही लगता है?

पहला मतः

"तुर्क लोग इस्लाम धर्म को मानते थे और वे भारत में इस्लाम धर्म की स्थापना के लिए आए थे। इसलिए वे बहुत जोश से लड़े। इस कारण वे जीते।"

इस मत को जांचने के लिए इन प्रश्नों पर विचार करो–

क्या राजपूतों को लड़ने में जोश नहीं रहता था?

क्या वास्तव में तुर्क लोग भारत के लोगों को मुसलमान बनाने के लिए आए थे? तो क्या उन्होंने ऐसा किया?

क्या उन्होंने अपना राज्य स्थापित करने के बाद सब लोगों को मुसलमान बना दिया?

अब बताओ क्या तुम्हें तुर्कों की जीत के कारण का यह पहला मत सही लगता है?

दूसरा मतः

"तुर्क लोगों में एकता थी, इसीलिए वे जीते। राजपूत लोग आपस में लड़ते थे, उनमें एकता नहीं थी। इसलिए वे हार गए।"

इस मत को जांचने के लिए इन प्रश्नों पर विचार करो–

क्या तुर्क राजा आपस में नहीं लड़ते थे?

क्या तुर्क लोगों के पास ज़्यादा सेना थी, और राजपूत राजा के पास, भेद-भाव के कारण, कम सेना थी?

अब बताओ क्या तुम्हें तुर्कों की जीत के कारण का दूसरा मत सही लगता है?

तीसरा मतः

"भारत में जाति व्यवस्था के कारण नीची मानी जाने वाली जातियों में बहुत असंतोष था। राजपूत राजा भी जाति-पाति बहुत मानते थे। तुर्क लोग मुसलमाऩ थे। वे जाति-पाति का भेद-भाव नहीं करते थे। इसलिए नीची मानी जाने वाली जातियों के लोगों ने उनका समर्थन व सहयोग किया। इसलिए तुर्क जीतते गए।"

इस मत को जांचने के लिए इन बातों पर विचार करो–

तुर्क लोग मुसलमान ज़रूर थे और छुआछूत में विश्वास भी नहीं करते थे। पर इसका यह मतलब नहीं था कि वे सब के साथ बराबरी का व्यवहार करते थे। मुसलमान होने के बावजूद वे इस बात पर गर्व महसूस करते थे कि वे तुर्क हैं। तुर्कों को वे सबसे श्रेष्ठ मानते थे। तुर्कों के अलावा दूसरे लोगों को वे अपने बराबर कतई नहीं मानते थे। अतः तुर्क लोग भले ही किसी को अछूत और अपवित्र न मानते हों पर उनमें दूसरों को अपने से नीचा मानने का घमण्ड था। राजपूतों को भी अपनी शक्ति और जाति का बहुत घमण्ड था।

इस बात को ध्यान में रखते हुए बताओ क्या तुम्हें यह तीसरा मत ठीक लगता है कि तुर्क राजपूतों से जीते क्योंकि उन्होंने अछूत माने जाने वाले लोगों का मन जीत लिया?

चौथा मतः

"तुर्क लोग इसलिए जीते क्योंकि उनके पास बेहतर सेना थी। उनके पास फुर्तीले घुड़सवार व घोड़े थे– राजपूतों की सेना भारी भरकम व धीमी थी। इसलिए वे हार गए।"

इस मत को जांचने के लिए तराई के युद्ध का वर्णन याद करो।

क्या तुम्हें तुर्कों की जीत के बारे में चौथा मत ठीक लगता है?

अगर फुर्तीले घोड़ों के कारण तुर्क सेना जीती तो मोहम्मद ग़ोरी पहले राजा भीम और पृथ्वीराज से कैसे हार गया था?

अभ्यास के प्रश्न

1. मोहम्मद गज़नी कहां राज्य बनाना चाहता था– ईरान, खुरासान या भारत में ?
2. मोहम्मद ग़ोरी किन राजाओं से हारकर पंजाब में राज्य बनाने के लिए मुड़ा?
3. पृथ्वीराज चौहाण किन राजाओं से हारकर पंजाब में राज्य बनाने के लिए मुड़ा?
4. पृथ्वीराज चौहाण और मोहम्मद ग़ोरी ने कहां युद्ध लड़े? आज से कितने साल पहले? यह जगह किस शहर के पास है– कलकत्ता, भोपाल, दिल्ली, जबलपुर?
5. तुर्कों की सेना और राजपूतों की सेना में क्या फर्क था?
6. एक इतिहासकार का मत है कि राजपूत तुर्कों से इसलिए हारे क्योंकि उनमें एकता नहीं थी और वे आपस में लड़ते रहते थे।इस मत को तुम ठीक मानोगे या नहीं- कारण सहित समझाओ।
7. जीत के बाद तुर्कों के व्यवहार के बारे में चार महत्वपूर्ण बातें बताओ।

14. सुल्तानों का शासन जमा

सुल्तान के गुलाम अधिकारी

मोहम्मद ग़ोरी भारत के उत्तरी हिस्सों पर अपना राज्य बना चुका था। उसने चौहाण, गहड़वाल, सेन, चन्देल आदि कई वंशों के राजाओं को हरा कर अपना राज्य बनाया था। वह खुद ग़ोर में रहता था और भारत में उसके राज्य के अलग-अलग प्रान्तों में उसके अधिकारी शासन चलाते थे। ये अधिकारी मोहम्मद ग़ोरी के गुलाम थे क्योंकि ग़ोरी ने इन्हें खरीद रखा था।

गुलाम राज्य के अधिकारी थे। इस बात से तुम्हें हैरानी हो सकती है। पर उन दिनों यह प्रथा थी। तुर्किस्तान के युवकों को खरीद कर उन्हें युद्ध और प्रशासन के काम में प्रशिक्षण देकर सुल्तानों को बेचा जाता था। इसलिए वे गुलाम कहलाते थे। पर किसी सुल्तान की सेवा में आने पर, योग्य और होनहार गुलामों को ऊंचे और ज़िम्मेदारी के पद भी सौंपे जाते थे और इसके बदले उन्हें ऊंचा वेतन मिलता था। सुल्तान मोहम्मद ग़ोरी की सेवा में भी ऐसे कई गुलाम थे और भारत में उसके राज्य का शासन चलाते थे।

सन् 1206 में जब मोहम्मद की मृत्यु हुई उसका एक महत्वपूर्ण गुलाम अधिकारी था कुतुबुद्दीन ऐबक। उसने ग़ोर के राज्य से अपना संबंध तोड़ दिया और भारत में ही तुर्क राज्य को मज़बूत बनाया। इस राज्य का सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक खुद बना। यह राज्य अब देहली सल्तनत कहलाया क्योंकि इसकी राजधानी देहली थी।

अपने गुलामों को अधिकारी बनाने से राजा को क्या फायदे हो सकते थे, कक्षा में चर्चा करो।
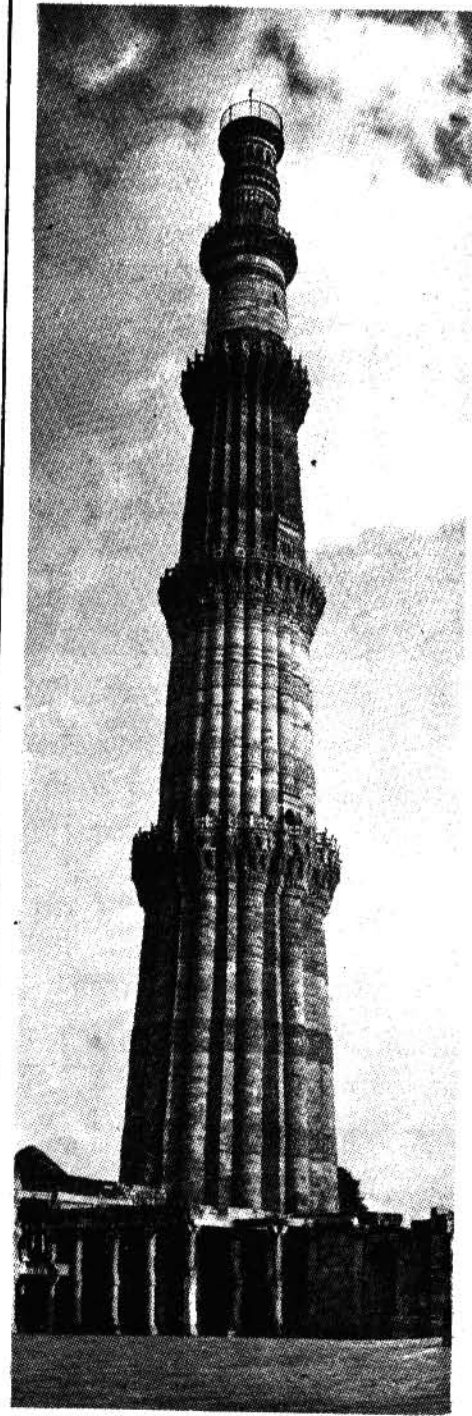
कुतुब मीनार : देहली में कुतुबुद्दीन ऐबक ने यह मीनार बनवाया

देहली सल्तनत का क्षेत्र फैला

ऐबक के बाद आने वाले सुल्तानों ने देहली सल्तनत का राज्य दूसरी जगहों में फैलाया। देहली के प्रमुख सुल्तान ये थे– इल्तुतमिश, रज़िया बेगम, बल्बन, अलाउद्दीन खलजी, मोहम्मद तुग़लक, फिरुज़शाह। खासकर अलाउद्दीन खलजी ने कई नए राज्यों को जीतकर सल्तनत के अधीन किया। उसकी सेनाओं ने देवगिरी, द्वारसमुद्र और मदुरई के राजाओं को हराकर उनके राज्य का बहुत धन लूट लिया। अलाउद्दीन ने राजस्थान और गुजरात के कई क्षेत्रों को भी अपने अधीन कर लिया।

इस तरह इन सुल्तानों के प्रयास से देहली सल्तनत की हुकूमत कहां से कहां तक फैल गई यह तुम सन् 1334 के नक्शे में देखो। सन् 1207 में सल्तनत का राज्य कहां तक था यह तुम पिछले नक्शे में देख चुके हो।

मोहम्मद गोरी के बाद जो क्षेत्र सल्तनत के अधीन किए गए उन्हें नक्शा 1 में पहचान कर रंगो।

इस नक्शे की तुलना सन् 1000 के राजवंशों के नक्शे से भी करो। उस समय भारत में कितने सारे छोटे-छोटे राजवंश थे। अब वे तुर्कों से हार गए थे और दिल्ली सल्तनत के अधीन थे।

सुल्तान और हारे हुए राजाओं का रिश्ता

हारने के बाद इन पुराने राजाओं का क्या हुआ होगा? तुम 'राजवंश का बनना' और 'उत्तर भारत के गांव' वाले पाठों में इन ताकतवर लोगों के बारे में बहुत सी बातें पढ़ चुके हो। कैसे वे गांव व शहरों का 'भोग' करते थे, लोगों से तरह-तरह के कर वसूल करते थे, लोगों से अपने लिए बेगार करवाते थे, अपने किले, महल व मन्दिर बनवाते थे, अपनी सेना खड़ी करते थे। गांव व शहरों में उनका कितना दबदबा और रौब था। पर अब उन पर देहली के सुल्तानों का शासन था।

वास्तव में सुल्तानों के सामने हमेशा यह समस्या रही कि इन हारे हुए राजवंशों और सामंतों से कैसा व्यवहार करें। सुल्तान चाहते तो थे कि इन राजाओं को हटाकर पूरे क्षेत्र पर खुद शासन चलाएं। मगर तुम तो समझते हो कि ऐसा करने में क्या-क्या कठिनाईयां थी। सबसे कठिन बात तो थी दूर-दूर के नये क्षेत्रों के शासन का प्रबंध करना, वहां अपने अधिकारी व सैनिक नियुक्त करना और खुद वहां के लोगों से कर इकट्ठा करना। तुर्क लोग तो ईरान और अफगानिस्तान से आये थे। वे न तो यहां की भाषा जानते थे न यहां के रीति-रिवाज़, और न ही वे यहां की शासन व्यवस्था के बारे में समझते थे। इस कारण शुरू में उन्हें यहां शासन प्रबंध करने में कठिनाईयां आयीं।

इसके लिये उन्होंने शुरू में एक उपाय सोचा। उन्होंने तय कर लिया कि वे हर हारे हुए राजा से कितना कर लेना चाहते हैं। यह राशि तय करने पर वे हारे हुये राय-राणाओं से कहते–"तुम्हें अपने यहां के लोगों से इतना कर इकट्ठा करके हमें देते रहना होगा। बाकी तुम जैसे संभालते थे वैसे संभाल सकते हो।"

(तुम्हें याद होगा कि राय, राणा, ठाकुर, रावत आदि राजपूत परिवारों के भोगपतियों की उपाधियां थीं।)

क्या पुराने समय के राजा भी अपने सामंतों से ऐसा ही कहते थे?

अक्तादार

सुल्तानों ने कर वसूल करने का इन्तज़ाम तो कर लिया पर अपनी सुरक्षा के लिए और राय राणाओं पर निगरानी रखने के लिये भी कोई उपाय करना ज़रूरी था। इसके लिए सुल्तानों ने अपनी सल्तनत (या राज्य) को कुछ
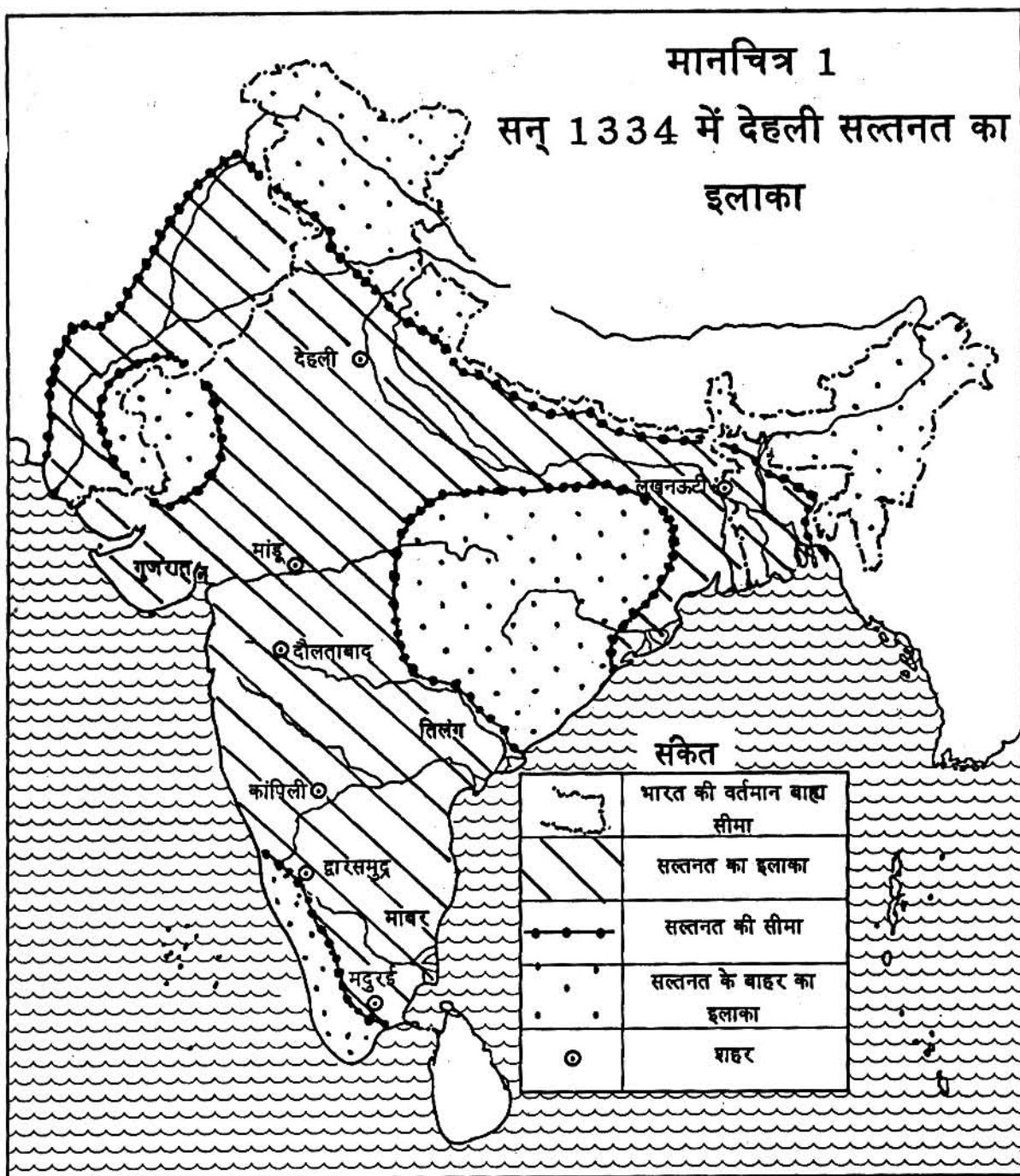
पैमाना: 1 से. मी. = 200 कि.मी.

प्रांतों में बांटा। वे प्रांतों को 'अक्ता' कहते थे। हर अक्ते में वे अपने एक ज़िम्मेदार सेनापति को नियुक्त करते थे, जो वहां के बड़े शहर में रहता था। उसे 'अक्तादार' कहा जाता था।

अक्तादार के पास अपनी सेना होती थी और प्रशासन चलाने के लिए अधिकारी होते थे। अक्तादार इनकी सहायता से राज्य की रक्षा करते थे और राय राणाओं से कर वसूल करते थे। अपने अक्ते से इकट्ठे किए गए कर से ही वे अपना, अपने अधिकारियों का और अपने सैनिकों का खर्चा चलाते थे। इस खर्चे के ऊपर जो कर बचता था उसे अक्तादार सुल्तान को भेज देते थे।

पर हारे हुए राय-राणा अक्सर सोचते थे "मैं क्यों अपने यहां का इतना सारा कर इकट्ठा करके तुर्कों को दूं? मैं पहले की तरह खुद ही क्यों न रख लूं? जब वे आकर मांगेंगे तब देखा जायेगा।"

मौका देखकर राय-राणा आदि कर देना बंद कर देते थे। फिर सुल्तान या उसके अक्तादारों को ऐसे विद्रोही राजाओं व राणाओं पर हमला करके ज़बरदस्ती उनसे कर वसूल करना पड़ता था।

अक्तादारों के कुछ काम बताओ। सल्तनत में एक अक्तादार होता होगा या कई?

इस तरह लगभग सौ साल बीत गये। इतने समय में तुर्क लोग यहां के लोगों की भाषा, तौर-तरीकों और खेती-बाड़ी जैसी बातें समझने लगे। अब तुर्क सुल्तानों को लगने लगा कि राय-राणाओं की जगह वे खुद गांव-गांव से कर इकट्ठा करवा सकते हैं।

अलाउद्दीन खलजी ने कर बदले

इसी समय अलाउद्दीन खलजी सुल्तान बना। अलाउद्दीन ने आदेश दिया कि उसके राज्य में कर इकट्ठा करने का एक नया तरीका लागू होगा। तुम्हें याद होगा– भोगपति गांव के लोगों से कई मौकों पर तरह-तरह के कर वसूल करते थे।

आमिल कर वसूल करते हुए

भोगपतियों द्वारा वसूल किए गए करों की सूची को एक बार फिर पढ़ो। ('उत्तर भारत के गांव' पाठ में)

अलाउद्दीन ने आदेश दिया कि अब इतने सारे अलग-अलग कर किसानों से नहीं लिए जायेंगे। किसानों से केवल तीन तरह के कर लिए जायेंगे– भूमि पर कर, घर पर कर और मवेशियों पर कर। इनमें सबसे प्रमुख कर था भूमि कर। सुल्तान ने पटवारियों की मदद से हर गांव की ज़मीन नाप कर हिसाब लगवाया कि प्रत्येक गांव में आम तौर पर कितनी फसल होती है। उसने तय किया कि हर गांव से आधी फसल सुल्तान को लगान के रूप में दी जाएगी। किसान जो उगाएगा उसका आधा सुल्तान को देगा। अब राय-राणाओं के ज़माने की तरह किसानों से मौके-बे-मौके नाना प्रकार के अनगिनत कर नहीं वसूले जायेंगे। अब फसल के समय किसानों को स्पष्ट रूप से आधी उपज सुल्तान को देनी होगी।

आमिल

इस तरह अलाउद्दीन ने कई छोटे-छोटे करों को मिलाकर एक बड़ा कर बना दिया, भूमि कर। इस कर को गांव-गांव से इकट्ठा करने के लिए उसने अपने अधिकारी नियुक्त किए। इन अधिकारियों को आमिल कहा जाता था। अब सुल्तान ने राय-राणाओं से कर वसूल करना छोड़ दिया। उसके आमिल सीधे गांवों में जा कर किसानों से कर वसूल करने लगे। राय-राणाओं को अब यह छूट नहीं थी कि वे पहले की तरह लोगों से कर वसूल करें और उसका एक बंधा हुआ हिस्सा ही सुल्तान को भेजें।

अलाउद्दीन की नीति बताने वाले दो सबसे महत्वपूर्ण वाक्य रेखांकित करो।

कई छोटे-छोटे करों के बजाये एक बड़ा कर वसूल करने में सुल्तान के अधिकारियों को क्या सुविधा हुई होगी? किसानों को इस बात से फ़ायदा हुआ होगा या नुक्सान? राय-राणाओं पर अलाउद्दीन की नीति का क्या असर पड़ा होगा?

मुखिया का काम बदला

अलाउद्दीन के सुल्तान बनने से पहले गांव के मुखिया गांव वालों से तरह-तरह के कर इकट्ठा करके राय-राणाओं को देते थे। इस काम के बदले मुखिया किसानों से कुछ कर अलग से अपने लिए भी वसूल कर लेते थे और वे अपनी ज़मीन पर भी राय-राणाओं को कोई कर नहीं देते थे।

अलाउद्दीन ने मुखियाओं की यह स्थिति नहीं मानी। सुल्तान ने बड़ी सख्ती से आदेश दिया कि खेत के हर टुकड़े पर कर वसूल किया जाएगा चाहे वो छोटे से छोटे किसान का हो या गांव के मुखिया का।

अलाउद्दीन को यह बात भी ठीक नहीं लगी कि किसानों से सरकार जो कर लेती है उसके अलावा गांव के मुखिया अपने लिए भी अलग से कुछ वसूल करें। उसने मुखियाओं को सख्ती से आदेश दिया कि वे किसानों से कोई अतिरिक्त वसूली नहीं करेंगे। ऐसा करने का अब उनके पास कोई कारण नहीं रहा था क्योंकि अब मुखिया की जगह सुल्तान का आमिल (यानी अधिकारी) किसानों से कर जमा करने का काम करने लगा था। मुखिया सिर्फ आमिल की मदद कर सकते थे।

तुम्हें क्या लगता है– अलाउद्दीन की इन नीतियों से गांव के मुखियाओं का रौब व उनकी ताकत पहले के दिनों से कुछ कम हुई होगी?

वो बातें गिनाओ जो अलाउद्दीन के समय में राय-राणा और मुखिया नहीं कर सकते थे।

चौधरी और ज़मींदार बने

अलाउद्दीन और उसके बाद के सुल्तान अपने राज्य के खर्च को पूरा करने के लिए और अपने राज्य को मज़बूत बनाने के लिए बहुत सख्ती और सावधानी से लगान जमा करवाने लगे थे। वो इस बात का बहुत ध्यान रखने लगे थे कि कर वसूली में कोई कमी न हो। जो किसान कर नहीं देते थे या जो आमिल कर की चोरी करते थे उन्हें कठोर सज़ा दी जाती थी।

पर इस काम में सुल्तानों को स्थानीय लोगों की मदद की ज़रूरत पड़ती रही। अपनी बात गांव वालों को बताने व समझाने के लिए और गांवों की स्थिति के बारे में जानने के लिए सुल्तान गांवों के प्रमुख परिवारों की मदद लेते रहे।

ये प्रमुख परिवार कौन से थे? इनमें से बहुत से परिवार तो वो थे जो पुराने समय में राय-राणा या मुखिया हुआ करते थे। सुल्तान के आमिल कर वसूली के काम में इन प्रमुख लोगों से सहायता लिया करते थे। इस सहायता के बदले में उन्हें कर का एक छोटा सा निश्चित हिस्सा दे दिया जाता था। इन प्रमुख लोगों को चौधरी या ज़मींदार कहा जाने लगा।

पुराने समय के कई राय, राणा, ठाकुर और मुखिया सुल्तानों के समय में चौधरी या ज़मींदार बन गए। सुल्तानों

ज़मींदार और गांव वाले

के अधीन होने से उनके पास राय-राणाओं जैसी ताकत और शान तो नहीं रही। पर फिर भी वे सुल्तानों के लिए महत्वपूर्ण लोग बने रहे और सुल्तान उनकी मदद लेते रहे।

देहली सल्तनत का टूटना

इन सब समस्याओं से जूझते हुए देहली से कई सुल्तान शासन करते रहे। सन् 1388 में सुल्तान फिरुजशाह तुग़लक की मृत्यु के बाद देहली सल्तनत का विशाल राज्य कई छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया। इनमें अलग अलग सुल्तान शासन करने लगे।

ऐसा ही एक राज्य मांडू में बना। मांडू नाम की जगह इन्दौर के पास है। वहां माण्डू के सुल्तानों के बहुत सुन्दर महल, मस्जिद और किले हैं। मांडू का एक प्रसिद्ध सुल्तान था होशंगशाह। सुल्तान होशंगशाह के नाम पर ही होशंगाबाद शहर का नाम पड़ा है।

अभ्यास के प्रश्न

1. अलाउद्दीन ने सल्तनत का राज्य कहां फैलाया– उत्तर भारत में/दक्षिण भारत में/पूर्व भारत में/पश्चिम भारत में।
2. सल्तनत शासन के शुरू-शुरू में गांवों से कर कौन इकट्ठा करता था– अक्तादार/राय-राणा। अलाउद्दीन के नियम के बाद गांव से कर कौन इकट्ठा करने लगा– आमिल/राय-राणा।
3. सामन्तों के समय में किसानों को किस तरह से कर देने पड़ते थे? अलाउद्दीन के नियम के बाद उन्हें किस तरह से कर देने पड़े?
4. सामन्तों के समय में गांव के मुखियाओं की स्थिति क्या थी? अलाउद्दीन के समय से उनकी स्थिति क्या हो गई?
5. किसानों से इकट्ठे किए गए कर का एक छोटा सा निश्चित हिस्सा किसे दिया जाता था– मुखिया को या चौधरी व ज़मींदार को? उन्हें यह हिस्सा कौन देता था और किसलिए?

15. कैसे पता करें – क्या हुआ क्या नहीं हुआ

कोई भी बात जब होती है तब हम कैसे जान पाते हैं कि असल में क्या हुआ था? अगर हमारी आंखों देखी बात हो तो हम उसे सच मान लेते हैं जो हमने देखा। पर आजकल तो किताबों, पत्रिकाओं, अखबार, टी. वी., रेडियो से हमें सैकड़ों ऐसी बातें पता चलती रहती हैं जो हमने अपनी आंखों से नहीं देखीं। क्या तुम ऐसी बातों पर पूरा-पूरा विश्वास कर लेते हो? क्या तुम ऐसा कभी सोचते हो कि किसी घटना या व्यक्ति के बारे में अखबार में जो लिखा है या टी. वी. पर जो बताया है वो आधी बात है– कई बातें बताई ही नहीं गईं– और अगर तुम इन छूटी हुई बातों को जानते तो शायद उस घटना या व्यक्ति के बारें में अपने विचार बदल देते?

दरअसल, यह समस्या, कि कैसे पता करें– क्या हुआ क्या नहीं हुआ– इतिहासकारों के सामने बहुत बार आती है। वो तो ऐसी बातों के बारे में लिखते हैं जो पुराने समय में बीत चुकीं और जो उन्होंने अपनी आंखों से नहीं देखीं।

राजाओं और सामंतों के काल के बारे में जब हम पढ़ रहे थे तो हमने कई शिलालेखों और ताम्रपत्रों के बारे में पढ़ा। इन्हीं लेखों से हमें उस समय के गांव व शहरों के बारे में कई बातें मालूम पड़ीं। उस समय के बारे में जानकारी हासिल करने में शिलालेखों ने हमारी खूब मदद की थी।

सल्तनत के बारे में हमें जानकारी कैसे मिलती है? तब इतने सारे शिलालेख या ताम्रपत्र नहीं खुदवाये गये थे। लेकिन सल्तनत के समय में इतिहास की कई पुस्तकें लिखी गईं थी, जिनमें हर सुल्तान के समय में क्या-क्या बातें हुईं, उनके विवरण हमें मिलते हैं।

अक्सर ऐसा भी होता है कि एक ही सुल्तान पर दो या तीन इतिहासकार अलग-अलग बातें बताते हैं। एक कहता है फलां सुल्तान बहुत अच्छा और नेक आदमी था, सारी प्रजा सुख शांति से रहती थी। दूसरा इतिहासकार उसी सुल्तान के बारे में बताता है कि वह बहुत बदमाश था और सारी प्रजा उससे दुखी थी। अब किसकी बातें हम सच मानें?

आज जब हम सल्तनत का इतिहास लिखते हैं तो हमें इस परेशानी से निपटना होता है। उदाहरण के लिये, मान लो हमें मुहम्मद तुग़लक नाम के सुल्तान के बारे में जानना है। हम उसके शासन के बारे में कैसे जान सकते हैं? मालूम करने पर हमें पता चलता है कि उसके शासन के बारे में उस समय के दो इतिहासकारों ने लिखा है, जिनके नाम ज़िया बरनी और एसामी हैं।

बरनी और एसामी की लिखी किताबों को पढ़कर पता चलता है कि सन् 1328 में मुहम्मद तुग़लक ने एक आदेश जारी किया था। उसने देहली के निवासियों को आदेश दिया कि वे देहली से दूर दक्षिण में दौलताबाद जाकर बसें।

सुल्तान मोहम्मद तुग़लक का आदेश रेखांकित करो।
पृष्ठ 171 के मानचित्र में देखो दौलताबाद और दिल्ली कहां पर हैं। (पाठ में जो और जगहों के नाम आयेंगे उन्हें भी इस नक्शे में ढूंढना)

सुल्तान मुहम्मद तुग़लक ने ऐसा क्यों किया? लोग जब देहली से दौलताबाद गये तो क्या-क्या हुआ? ये बातें बरनी ने अपनी किताब में लिखीं और एसामी ने भी अपनी किताब में लिखीं।

ज़िया बरनी

ज़िया बरनी ने अपनी पुस्तक 'तारीख-ए-फिरुज़शाही' में लिखा—

"एक योजना सुल्तान के दिल में आयी कि दौलताबाद को राजधानी बनाया जाए। यह इसलिये क्योंकि दौलताबाद उसके साम्राज्य के मध्य में है। देहली, गुजरात, लखनऊटी, तिलंग, माबर, द्वारसमुद्र तथा कम्पिला, इस शहर से लगभग समान दूरी पर स्थित हैं। इस विषय में उसने किसी से परामर्श नहीं किया। उसने आदेश दिया कि उसकी अपनी मां और राज्य के सारे बड़े अधिकारी व सेनापति अपने सहायक व विश्वासपात्रों के साथ दौलताबाद की ओर चलें। दरबार के हाथी, घोड़े, खज़ाना तथा बहुमूल्य वस्तुएं दौलताबाद भेज दी जायें। इसके पश्चात सूफी संत व आलिमों (इस्लामी ग्रंथों के अध्ययन करने वाले) तथा देहली के प्रतिष्ठित व प्रसिद्ध लोग दौलताबाद बुलाये गये। जो लोग दौलताबाद गये उन्हें सुल्तान ने खूब सारा धन इनाम में दिया।

एक साल बाद सुल्तान देहली लौटा। उसने आदेश दिया कि देहली तथा आस-पास के कस्बों के निवासियों को काफिलों में दौलताबाद भेजा जाए। देहली वालों के घर उनसे मोल ले लिये जाएं। इन घरों की कीमत खज़ाने से दौलताबाद जाने वालों को दे दी जाए। ताकि वे वहां जाकर अपने लिए घर बनवा लें।

शाही आदेशानुसार देहली तथा आसपास के निवासी दौलताबाद की ओर भेज दिये गये। देहली शहर इस प्रकार खाली हो गया। कुछ दिन तक देहली के सारे दरवाज़े बन्द रहे, शहर में कुत्ते बिल्ली तक न रह पाये।

देहली के निवासी जो वर्षों से वहां रहते चले आ रहे थे, लम्बी यात्रा के कष्ट से रास्ते में ही मर गये। बहुत से लोग, जो कि दौलताबाद पहुंचे अपनी मातृभूमि से बिछड़ने का दुख सहन नहीं कर सके। वे वापस होने की इच्छा में ही मर गये। यद्यपि सुल्तान ने देहली से जाने वाली प्रजा को अत्यधिक इनाम दिये, वह परदेस व कष्टों को सहन न कर सकी।

इसके बाद दूसरे प्रदेशों से आलिमों, सूफियों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों को लाकर देहली में बसाया। मगर इस प्रकार लोगों के लाने से देहली आबाद न हो सकी।

लगभग पांच छः साल बाद सुल्तान ने आदेश दिया कि जो भी दिल्ली लौटना चाहता है वह लौट सकता है। कुछ लोग लौट गए मगर बहुत से परिवार दौलताबाद में ही बस गये।"

पुराने समय के इतिहासकार बरनी का यह वर्णन पढ़ कर तुम्हें सुल्तान मोहम्मद तुग़लक कैसा राजा लगा- अत्याचारी/ लोगों पर संदेह करने वाला/ बदला लेने की इच्छा रखने वाला/ राज्य के हित में सोच समझ के योजना बनाने वाला/ किसी की सलाह लिए बग़ैर काम करने वाला।

सुल्तान मुहम्मद तुग़लक ने अपनी राजधानी देहली से दौलताबाद क्यों हटाई— क्या कारण नज़र आता है? क्या सुल्तान यह चाहता था कि लोगों को देहली से निकालते समय तरह-तरह के कष्ट पहुंचाये जाएं?
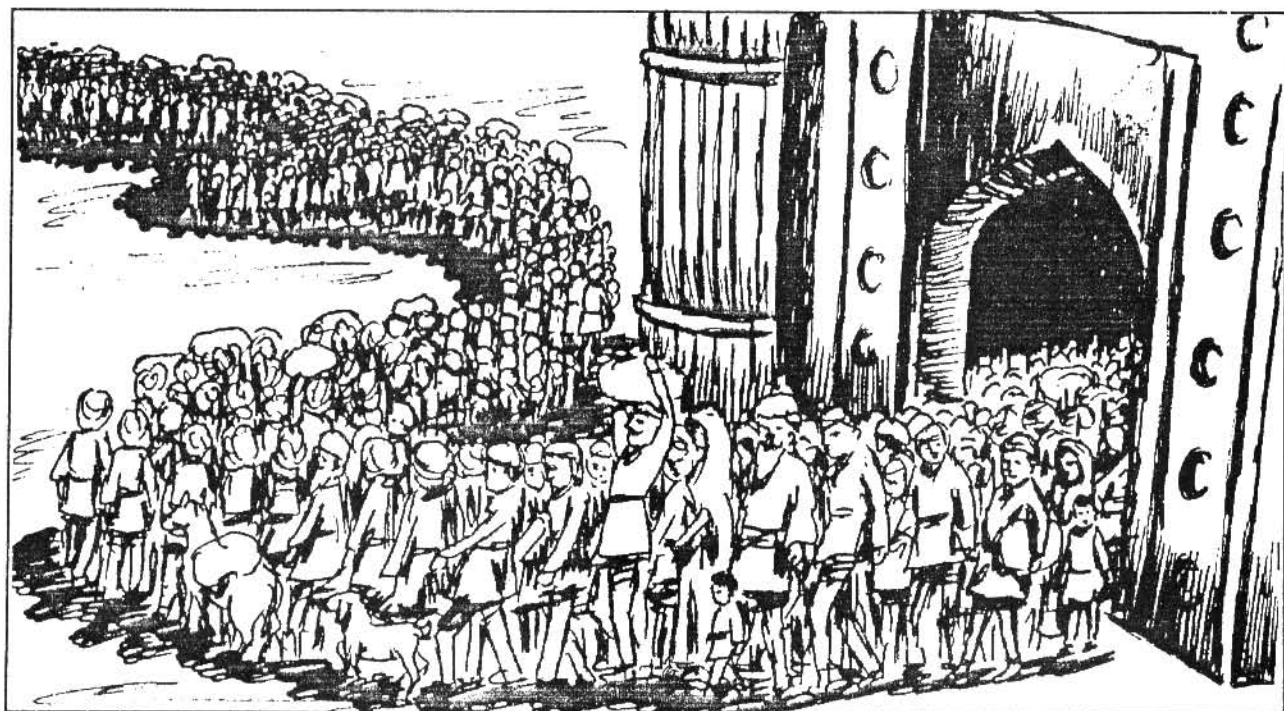
एसामी

एसामी ने अपनी किताब "फुतुह उस सालातिन" में लिखा–

"सुल्तान को देहली वालों पर संदेह था और वह उनके लिए मन में विष छिपाये रहता था। उसने गुप्त रूप से एक कुत्सित योजना बनाई कि एक महीने में देहली का विनाश कर दिया जाये। उसने सूचना कराई कि- "जो कोई सुल्तान का हितैषी हो वह दौलताबाद की ओर प्रस्थान करे। जो कोई इस आज्ञा का पालन करेगा उसे अत्यधिक संपत्ति मिलेगी, जो कोई इसका पालन न करेगा उसका सिर काट डाला जाएगा।"

उसने आदेश दिया कि देहली में आग लगा दी जाए और सभी लोगों को नगर से बाहर निकाल दिया जाए। परदेवाली स्त्रियों तथा एकांतवासी सूफियों को उनके घरों से बाल पकड़कर निकाला गया। इस प्रकार वे लोग देहली से निकले।

मेरे दादा भी उसी शहर में रहते थे। उनकी उम्र 90 वर्ष थी और वे एकांतवासी संत थे। वे कभी अपने घर से नहीं निकलते थे। वे पहले पड़ाव में ही मर गये। उन्हें वहीं दफन कर दिया गया।

सभी बूढ़े, युवक, स्त्री तथा बालक यात्रा करने के लिए विवश थे। बहुत से बालक दूध बिना मर गये। अनेकों लोगों ने प्यास के कारण प्राण त्याग दिये। उस काफिले में से अत्यधिक कठिनाई सहन करके केवल दसवां भाग ही दौलताबाद पहुंच सका। सुल्तान ने इस तरह एक बसा हुआ शहर नष्ट कर डाला।

जब देहली में कोई न रह गया तो सारे द्वार बन्द कर दिये गये। सुना जाता है कि कुछ समय बाद उस नीच और अत्याचारी बादशाह ने आसपास के गांवों से लोगों को बुलाकर देहली को बसवाया। तोतों और बुलबुलों को बाग से निकालकर कौओं को बसा दिया।

न जाने सुल्तान को किस प्रकार उन निर्दोष लोगों पर संदेह उत्पन्न हो गया कि उसने उनके पूर्वजों की नींव उखाड़ डाली और आज तक उनकी सन्तानों के विनाश में तल्लीन है।"

पुराने समय के इतिहासकार एसामी का यह वर्णन पढ़ कर तुम्हें सुल्तान मोहम्मद तुग़लक कैसा राजा लगा- अत्याचारी/ संदेह करने वाला/ लोगों का भला चाहने वाला/ राज्य के हित में सोच समझ के योजना बनाने वाला/ किसी की सलाह लिये बगैर काम करने वाला।

सुल्तान मुहम्मद तुग़लक ने अपनी राजधानी दिल्ली से दौलताबाद क्यों हटाई - क्या कारण नज़र आता है?

क्या सुल्तान यह चाहता था कि लोगों को दिल्ली से निकालते समय तरह-तरह के कष्ट पहुंचाये जाएं?

तुमने बरनी का अंश पढ़ कर मुहम्मद तुग़लक के बारे में अपनी राय बनाई थी– कि वह कैसा राजा था और क्या चाहता था।

अपनी राय को एक बार फिर से पढ़ो। यह बताओ कि एसामी को पढ़ने के बाद तुमने अपनी राय क्या बदल दी? अगर हां तो बताओ कि तुमने अपनी राय क्यों बदली?

तुम्हारे ध्यान में यह बात आ गई होगी कि मुहम्मद तुग़लक की योजना के बारे में कुछ बातें ऐसी हैं जिन्हें बरनी भी कहता है और एसामी भी। जैसे सुल्तान ने लोगों को देहली से दौलताबाद जाने का आदेश दिया। यह बात दोनों की किताब में लिखी है।

पर देहली से दौलताबाद जाने की घटना के बारे में बरनी कई ऐसी बातें लिखता है जो एसामी नहीं लिखता। जैसे बरनी लिखता है कि सुल्तान अपने राज्य की राजधानी, बीचों बीच बनाना चाहता था, इसलिए उसने लोगों को दौलताबाद भेजा।

पर एसामी के अनुसार सुल्तान के मन में ऐसा विचार नहीं था। एसामी के अनुसार सुल्तान लोगों को कष्ट देना चाहता था। इसलिए उसने देहली खाली करवाई।

यह हमारे लिए परेशानी की बात है। अब हम यह कैसे जानें कि सुल्तान के मन में वास्तव में क्या विचार था? इस विषय में हम बहुत पक्की तरह से कुछ नहीं कह सकते हैं। ऐसी कठिनाई बहुत बार हमारे सामने आती है।

नीचे कई बातें लिखी हैं। तुम उन्हें ध्यान से पढ़ो और बताओ कि कौन सी बातें वे हैं जिन्हें बरनी भी कहता है और एसामी भी–

और कौन सी बातें वे हैं जो दोनों में से कोई एक जना ही कहता है:

1. जो लोग दौलताबाद गए उन्हें सुल्तान ने इनाम दिया।

2. देहली से दौलताबाद जाने में लोगों को काफी कष्ट

हुआ।

3. सबसे पहले सुल्तान के परिवार व प्रशासन के लोगों को भेजा गया। फिर सूफी सन्तों और विद्वानों को भेजा गया, फिर एक साल बाद आम जनता को भेजा गया।

4. जिसने जाने से इनकार किया उसे मार डाला गया।

5. जो जाने को राज़ी था उसका घर खरीद लिया गया।

6. देहली में कई पीढ़ियों से रहने वाले पुराने लोगों को भेजा गया।

7. देहली को नए लोगों से बसाया गया।

सात में से कितनी बातें दोनों कहते हैं? उन बातों को कोई विद्यार्थी एक साथ पढ़ दे।

जो बातें दोनों जने लिखते हैं उनके बारे में तो हम सोच सकते हैं कि वे ज़रूर हुई होंगी। पर जो बातें एक ही व्यक्ति कह रहा है उनके बारे में हम झट से पक्की तरह नहीं कह सकते कि वे ज़रूर हुई होंगी।

कोई विद्यार्थी उन बातों को भी पढ़ दे जो बरनी या एसामी में से एक इतिहासकार ही कह रहा है।

बीते हुए समय के बारे में जब इतिहासकार आज लिखते हैं तो वे अक्सर इस कठिनाई से जूझते हैं। बीते समय के बारे में कुछ बातें तो पक्की तरह से कही जा सकती हैं, पर बहुत सी बातों के बारे में पक्की तरह से नहीं कहा जा सकता।

16. पुरानी इमारतें

लकड़ी से पत्थर तक

शिकारी मानव की तो गुफाएं थीं। पर, खेती की शुरुआत के समय लकड़ी व मिट्टी की झोपड़ियां थीं और सिन्धु घाटी के शहरों में ईंट के मकान थे। मनुष्य की इमारतें बनाने की कोशिश के ये उदाहरण तुमने देख लिए हैं।

सिंधु घाटी के शहरों के नष्ट होने के बाद बहुत लम्बे समय तक ईंट की इमारतें नहीं बनीं। लोग लकड़ी और मिट्टी से ही घर व इमारतें बनाते थे। लकड़ी के होने के कारण ये घर व इमारतें समय के साथ सड़ कर खत्म हो गईं। इनके बहुत कम निशान मिलते हैं। फिर भी जो निशान मिलते हैं उनसे जान पड़ता है कि जनपदों के समय में लकड़ी से बने घर, बागुड़ और तोरण द्वार का दृश्य कुछ ऐसा दिखता था – (चित्र-1)
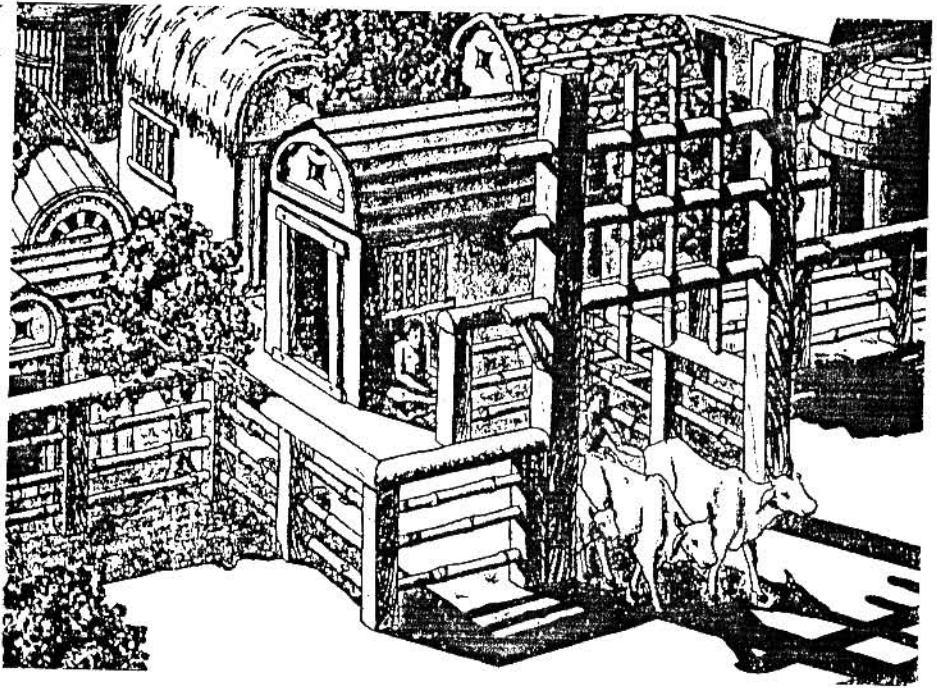
चित्र 1. लकड़ी का घर, बागुड़ और तोरण

तोरण द्वार व बागुड़ बनाने के लिए लकड़ियां कैसी जोड़ी गईं हैं– चित्र देखकर समझो। तुम आस-पास के पेड़ की डाली व टहनी जुटा कर ऐसा द्वार व बागुड़ (यानी रेलिंग) बनाओ।

बुद्ध की मृत्यु के बाद जगह-जगह उनकी अस्थियों के ऊपर स्तूप या गुम्बद बनाए गए। स्तूप मिट्टी की कच्ची ईंटों से या पत्थर के टुकड़ों से बने।

सांची का स्तूपः यह भोपाल से विदिशा जाने के रास्ते में पड़ता है। राजा अशोक के समय में यानी आज से 2300 साल पहले यह स्तूप बना था। भारत में जिन सबसे पुरानी इमारतों को हम आज भी देख सकते हैं उनमें से एक है सांची का स्तूप।

स्तूप अन्दर से खोखला नहीं है– ठोस है। उसके चारों तरफ रेलिंग (यानी बागुड़) और तोरण द्वार हैं- पर ये पत्थर के बने हैं। अब इमारत बनाने वाले कारीगर पत्थर से इमारतें बनाने की कोशिश करने लगे थे। पर
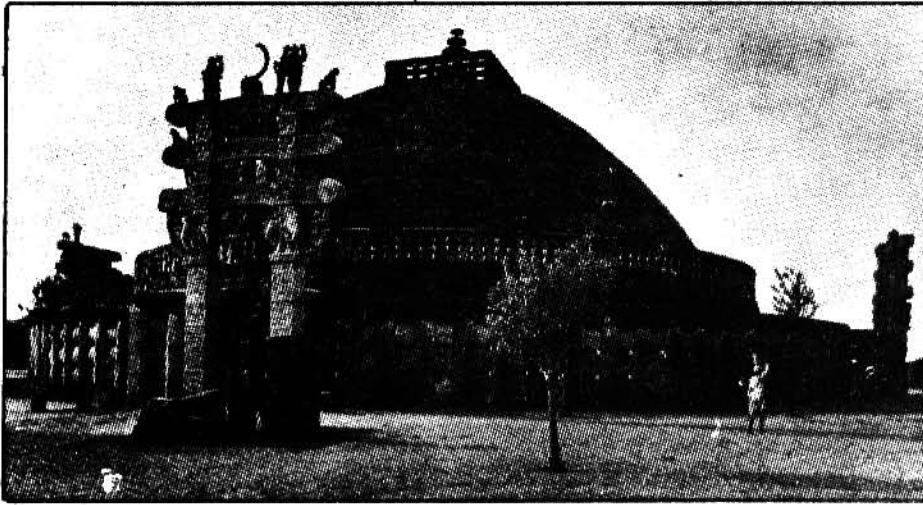
चित्र 2. सांची स्तूप

उन्हें लकड़ी के द्वार, बागुड़ आदि बनाने का ही ज़्यादा अभ्यास था। इसलिये शायद शुरू में उन्होंने लकड़ी के द्वार व बागुड़ की नकल करके ही पत्थर के द्वार व बागुड़ बनाए।

सांची के स्तूप के द्वार व बागुड़ का यह पास का दृश्य देखो। यह पहचानो कि पत्थर के टुकड़ों को उसी तरह जोड़ा है जैसे लकड़ी के द्वार व बागुड़ को जोड़ा गया था। यह क्या तरीका था? क्या जोड़ने के लिए सीमेन्ट चूने आदि का इस्तेमाल हुआ लगता है?

गुफा मंदिर

उन दिनों यद्यपि रहने के लिए तो इमारतें लकड़ी से ही बनती रहीं- ऐसे बड़े-बड़े महल तक लकड़ी से ही बनाए जाते थे– (चित्र-3) पर लकड़ी की बजाए पत्थर से इमारतें बनाने की कोशिश जारी रही। खास कर धार्मिक इमारतों को पत्थर से बनाने की कोशिश रही ताकि वे लंबे समय तक नष्ट न हों।
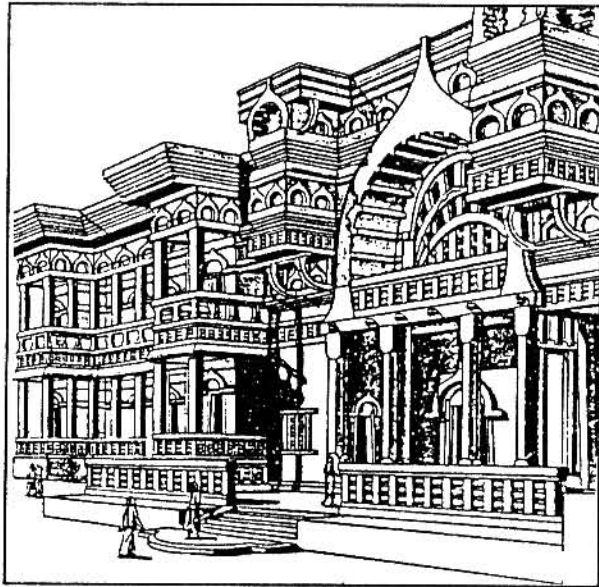
चित्र 3. लकड़ी का महल
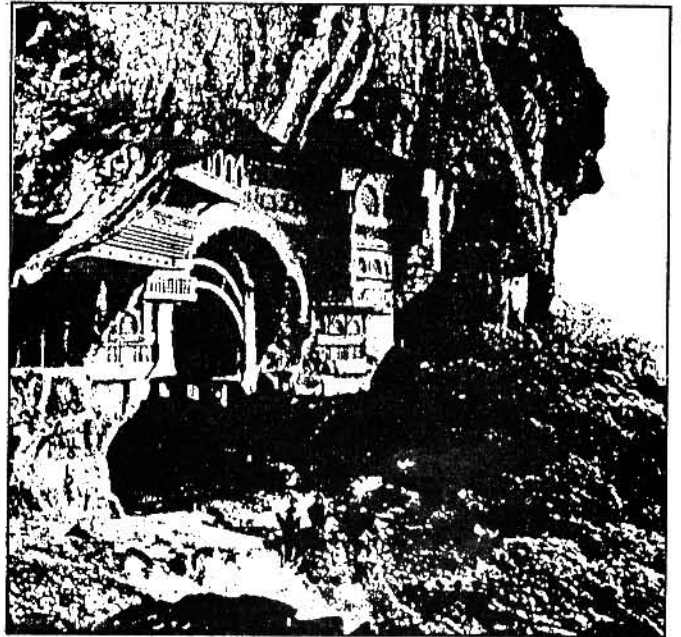
चित्र 4. भाज की गुफा

पर कैसे बनाएं पत्थर से इमारतें? कैसे पत्थर को निकाले, फोड़ें, काटें- क्या करें? उन दिनों कारीगर इस तरह अपना दिमाग बहुत लड़ाते होंगे। और देखो उन्होंने पत्थर से इमारतें बनाने की क्या तरकीब निकाली- हां पहाड़ ही खोद डाला। चट्टान खोद कर गुफा बनाई और उसी में अपनी छैनी हथौड़ी से खम्भे, दरवाजे, आले तराश दिए। जैसा घर वे लकड़ी से बनाते थे वैसा घर उन्होंने पहाड़ काट कर बनाने की कोशिश की। (चित्र-4) इस गुफा का चित्र तुम्हें लकड़ी के महल के चित्र जैसा दिख रहा है न?
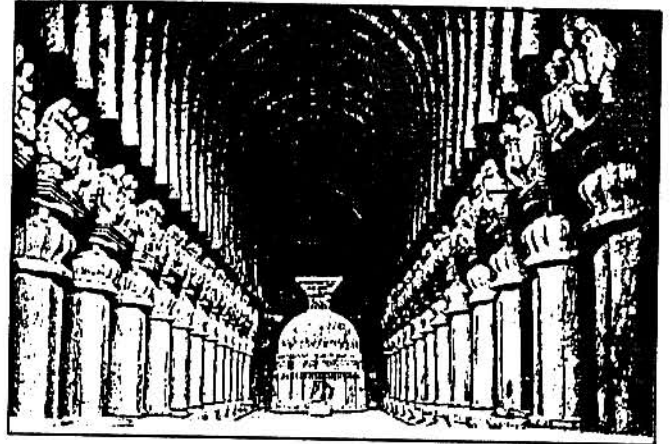
चित्र 5. कार्ले का चैत्य

सैकड़ों ऐसी गुफाएं बनाई गईं। बहुत सुन्दर गुफाएं। किन्हीं में बौद्ध भिक्षु रहते थे, किन्हीं में जैन मुनि रहते थे और किन्हीं में ब्राह्मण। ये गुफाएं विहार कहलाती थीं। फिर जब देवताओं की मूर्तियां बनने लगीं तो इन गुफाओं में मूर्तियां भी बनाई जाने लगीं। बौद्ध भिक्षुओं ने बड़ी गुफाएं कटवा कर उनके अन्दर स्तूप बनवाए। वे गुफा में स्तूप के सामने बैठकर प्रार्थना करते थे। इसे चैत्य कहा जाता था। ऐसे गुफा मंदिर व चैत्य व विहार तुम इन जगहों पर देख सकते हो- विदिशा के पास उदयगिरि, औरंगाबाद के पास अजिंठा, एल्लोरा और पुणें के पास कार्ले। अजिंठा गुफाओं के अन्दर वे रंगीन चित्र भी सुरक्षित हैं जो हज़ारों साल पहले किन्हीं चित्रकारों ने बनाए थे। उनमें अभी भी रंग दिखता है। पर तुम तो 10-20 हज़ार साल पुराने शिकारी मानव के बनाए चित्र भी देख चुके हो। कितनी पुरानी चीज़ें बची रहतीं हैं - हमसे अपने समय की बातें कहती रहती हैं।

पहाड़ काट-काट कर मंदिर और चैत्य बनने लगे थे- पर हर जगह पहाड़ नहीं हैं। क्या वहीं मंदिर आदि बनेंगे जहां पहाड़ हैं? क्या पत्थर से किसी भी जगह पर इमारत खड़ी नहीं की जा सकती?

चित्र 6 अजिंठा की गुफाओं का चित्र

चित्र 7. शुरू-शुरू के मंदिर - सांची स्तूप के पास

तरह-तरह के मंदिर

समय के साथ कारीगरों ने ऐसा सोचा होगा। और यह भी सोचा होगा कि चट्टानों के टुकड़े काट-काट कर उनसे इमारत खड़ी तो की जा सकती है, पर पत्थर एक के ऊपर एक कैसे खड़े रहेंगे? कुछ समय में ही लुढ़क-लुढ़का गए तो? जो भी डर व झिझक उनके मन में रही हो पर उन कारीगरों ने इस दिशा में कोशिश तो की।
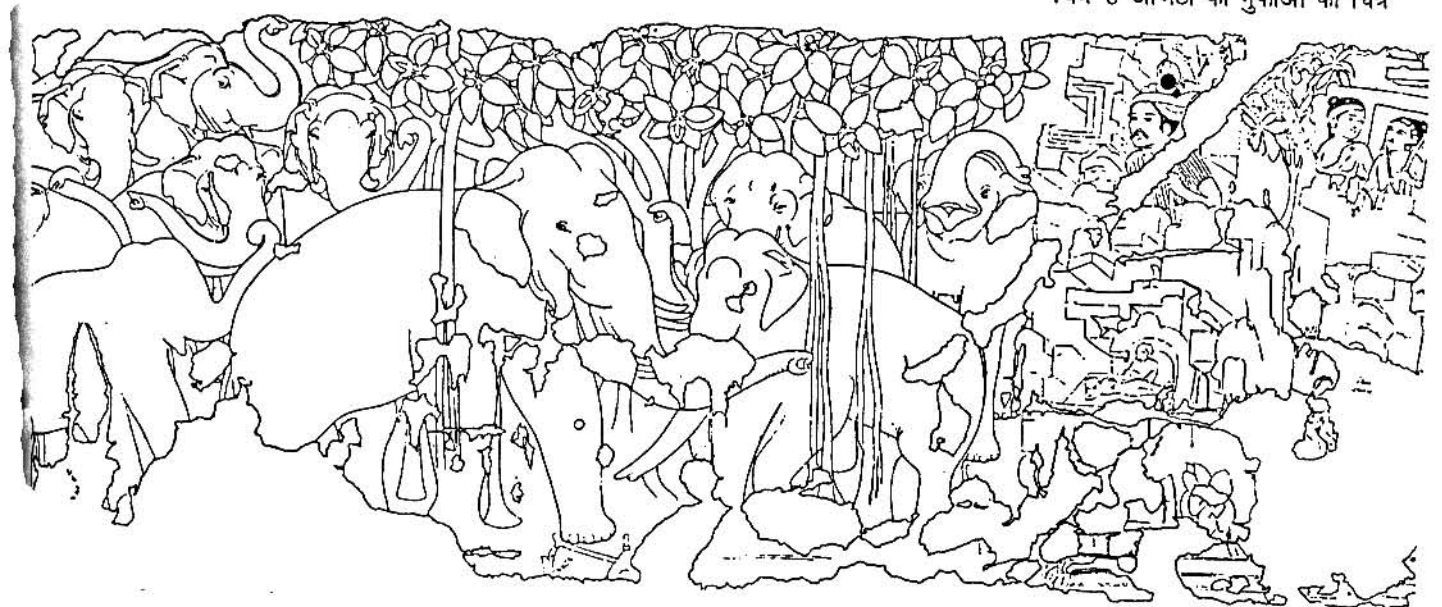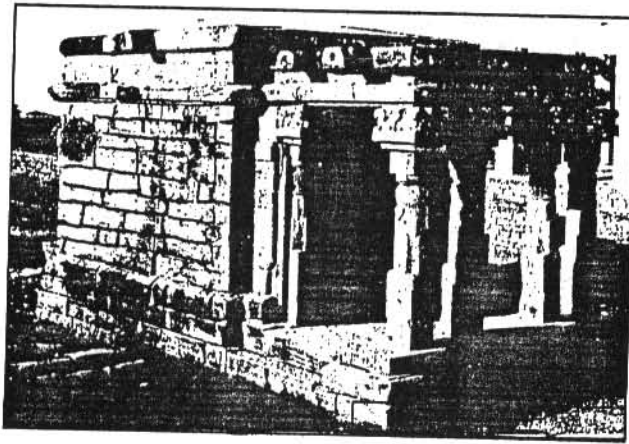
पहले छोटी और सरल सी इमारत बनाई। चित्र-7 देखो- यह मंदिर सांची में बुद्ध की मूर्ति रखने के लिए बनाया गया था। सबसे शुरू के मंदिर ऐसे बने थे। पत्थर की शिलाएं काट कर एक के ऊपर एक बड़ी सावधानी से रखी हैं। जिससे उनका संतुलन बना रहे- वे लुढ़क न जाएं, खिसक न जाएं। पत्थर को चूने व गारे के घोल से मज़बूती से जोड़ने की विधि उन दिनों के कारीगर इस्तेमाल नहीं करते थे। इस विधि क बग़ैर ही पत्थर इस तरह एक के ऊपर एक चढ़ाते जाते थे जिससे वे वर्षों तक टिके रहेंगे। एक दूसरे के भार से ही ये पत्थर सैकड़ों सालों तक सधे रहे हैं। आज भी तुम कई ऐसे मंदिर देख सकते हो। कभी देखने का मौका मिले तो ध्यान देना कि कैसे बहुत बड़ी-बड़ी इमारतें भी पत्थर के टुकड़ों को एक के ऊपर एक टिका कर खड़ी की गई हैं।

चित्र 8. उड़ीसा का एक मंदिर

चित्र 9. तमिलनाडु का एक शिव मंदिर

पर इन मंदिरों में अचम्भे और आश्चर्य की सिर्फ यह बात नहीं है। पत्थरों पर तराशी गई मनुष्य और जानवरों की आकृतियां, फल, बेल-बूटे, और तरह-तरह के सुन्दर डिज़ाईन आदि बताते हैं कि उस पुराने समय के कारीगर कितने मंजे हुए कलाकार थे।

अब जब कहीं भी मंदिर आदि बनाए जा सकते थे, तो वाकई भारत के हर क्षेत्र में कई सुन्दर मंदिर बने। हर क्षेत्र के कलाकारों ने और राजाओं व सामन्तों ने अपनी पसन्द की शैली में मंदिर बनवाए।

यहां तुम उड़ीसा, खजुराहो और तमिलनाडु के मंदिरों की अलग-अलग बनावट पर ध्यान दो। यह भी देखो कि समय के साथ कारीगर पहले की तुलना में बहुत सुंदर और मुश्किल इमारतें बनाने लगे थे।

चि6 10. खजुराहो का कंडरिया महादेव मंदिर

शुरू-शुरू के सरल व छोटे मंदिर की तुलना में बाद के इन मंदिरों में अधिक कमरे व बरामदे हैं। शुरू के मंदिर में सिर्फ एक कमरा था जिसमें मूर्ति रखी जाती थी– (इसे गर्भ गृह कहा जाता है) और उसके आगे खम्भों वाला एक खुला बरामदा था। मंदिर की छत सपाट थी। चित्र में इन बातों पर ध्यान दो। इन बाद के मंदिरों में गर्भगृह (मूर्ति कक्ष) के सामने एक और कमरा बनने लगा- यह मण्डप कहलाता था- और उसके आगे फिर खम्भों वाला बरामदा बनता था। यह अर्द्धमण्डप कहलाने लगा। बाद के मंदिरों की छतें भी सपाट नहीं रहीं।

चित्र 11. (क)

कुशल व साहसी कारीगरों ने पत्थर की शिलाओं को इस तरह रखने की तरकीब निकाल ली थी कि छत के ऊपर एक शिखर उठता जाए। बिना चूने की जुड़ाई के इतना ऊंचा शिखर उठाना बहुत जोखिम का काम था। पर उन कारीगरों ने यह जोखिम उठाने का साहस ही नहीं किया, उन्होंने इस शिखर को तराश कर खूबसूरती से सजाया भी।
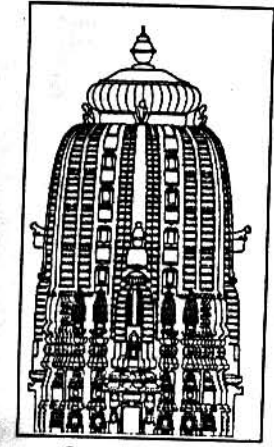
तुमने तमिलनाडु, उड़ीसा और खजुराहो के मंदिरों के जो चित्र देखे हैं उनमें शिखर की बनावट पर खासतौर से गौर करो। शिखर बनाने की शैली तीनों में अलग है। देखें तुम इन तीन शैलियों को अलग-अलग पहचान सकते हो या नहीं.....

चित्र 11. ख

तुम्हारे आसपास जो पुराने मंदिर हैं उनकी बनावट किस शैली से मिलती जुलती है?

क्या उन मंदिरों में गर्भगृह (— कक्ष) मण्डप व अर्द्धमण्डप, तीनों बने हुए हैं?

चित्र 11. ग

चित्र 12. गुंबद

चित्र 13. मेहराब

चित्र 14. मीनार
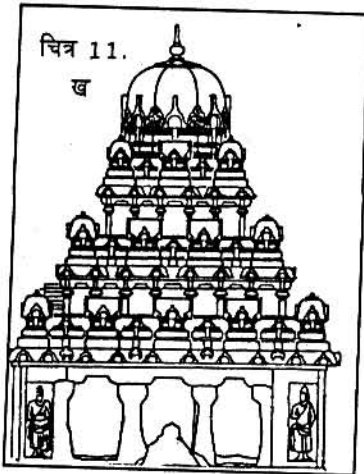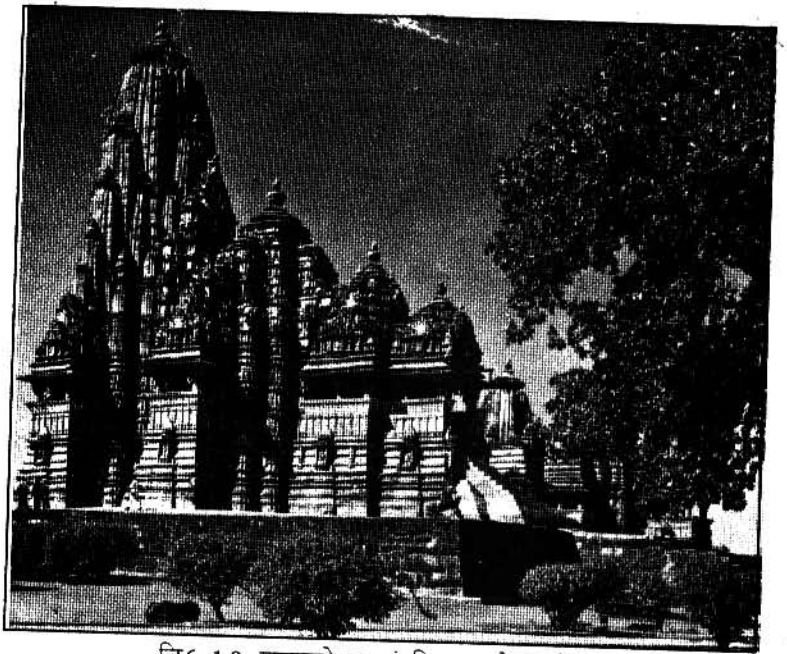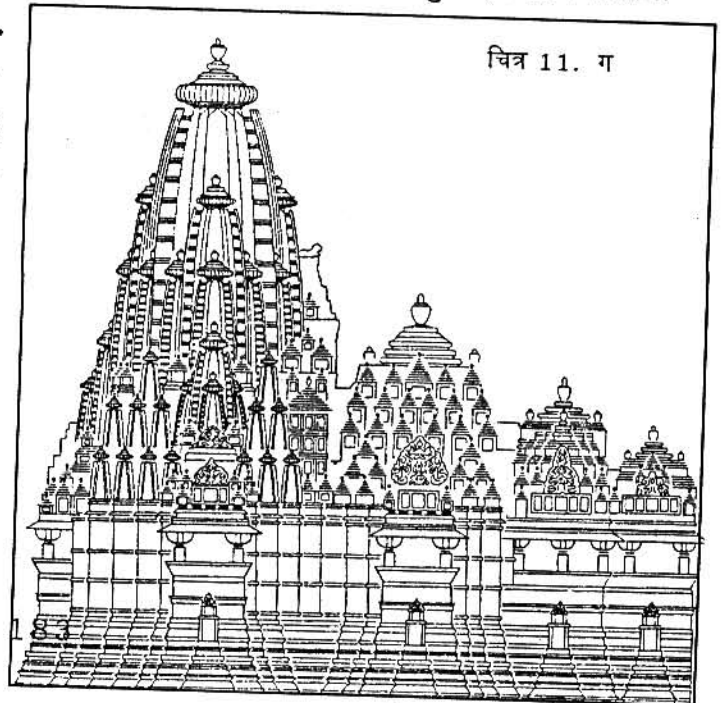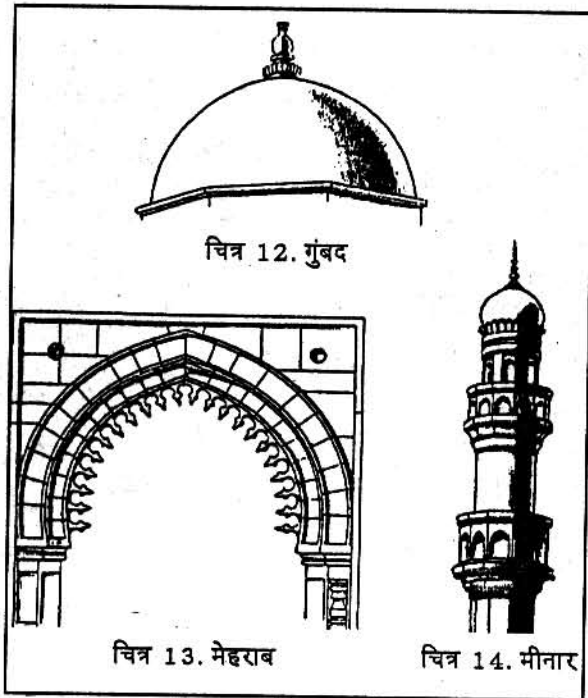
इस्लामी इमारतें

ईरानी व ईराकी कारीगर जब भारत आए तो अपने साथ इमारत बनाने की एक नई विधि लेते आए। वे अपनी इमारतें कैसे बनाते थे– उनके चित्र तुम पिछले पाठों में देख चुके हो।

क्या कोई ऐसी बातें नज़र आईं जो स्तूपों, मंदिरों में तुमने देखी ही नहीं थीं?

मुसलमानों की इमारतों की तीन खास बातें थीं। मेहराब, गुम्बद और मीनार। मेहराबें, गुम्बद व मीनारें उनकी सब इमारतों में देखे जा सकते हैं।

मस्जिद में मीनार से क्या किया जाता है, याद आया?

चूने और गारे के घोल से पत्थर या ईंट की मज़बूत जुड़ाई कर के ही मेहराबें व गुम्बद बनाए जा सकते हैं। ये चित्र एक मेहराब के पत्थरों को दिखाता है– देखो कि पत्थर कैसे एक दूसरे से जोड़े गए हैं। चूने की जुड़ाई के बिना क्या मेहराब का ऊपरी हिस्सा बनाया जा सकता है?

इसी तरह ये गुम्बद ठोस नहीं है। अन्दर से खोखला है। ठोस गुम्बद तो चट्टान को काटकर बनाया जा सकता है। या पत्थर के टुकड़ों को एक के ऊपर एक रख के भी गोल स्तूप बनाया जा सकता है। पर अन्दर से खोखला गुम्बद बनाने के लिए जुड़ाई के बिना काम नहीं चलेगा। ईरान व ईराक के कारीगर ईंट या पत्थर के टुकड़ों को चूने से जोड़-जोड़ कर ऐसे गोल गुम्बद बनाते थे।
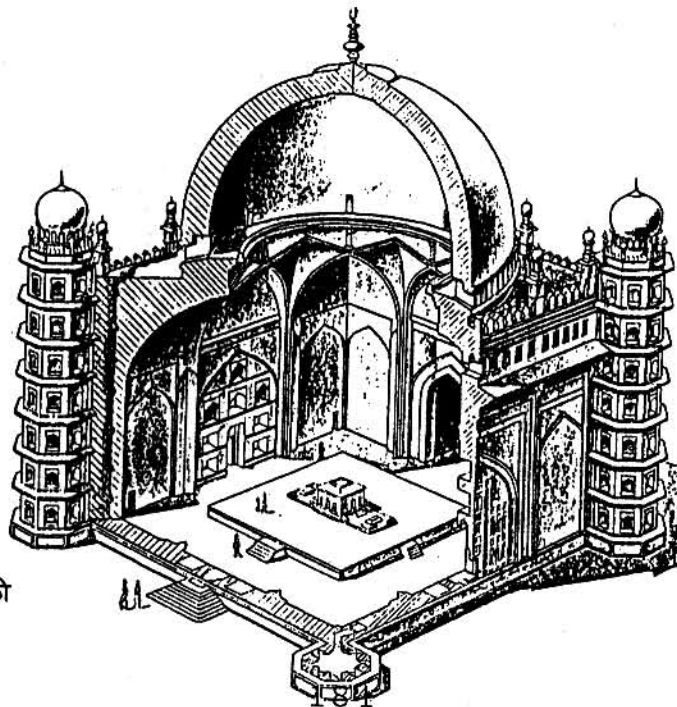
चित्र 15. अंदर से देखो गुंबद को

चित्र 16. सोनगढ़ के मंदिरः इनमें मीनार, गुंबद और मेहराब पहचानो
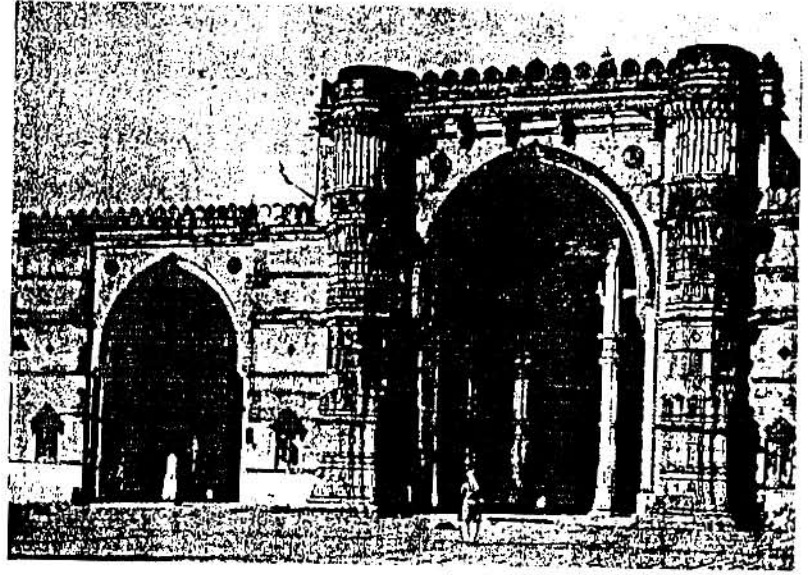
चित्र 17. अहमदाबाद की मस्जिद में खंभे

मिली-जुली शैलियां

ईरानी व ईराकी कारीगरों से ये बातें भारत के कारीगरों ने सीखीं। उन कारीगरों ने भी भारत के कारीगरों के हुनर सीखे। मंदिरों में मेहराबें व गुम्बद बनने लगे। और कई मस्जिदों में पत्थर पर पत्थर रख कर तराशे हुए खम्भे बनने लगे। पिछले पाठों में तुमने तुर्कों के आने के बाद बनी मस्जिद आदि के चित्र देखे थे। उनमें मीनारें, मेहराबें और गुम्बद पहचानो।

तुम्हारे आस-पास जो मंदिर व मस्जिद हों उनमें भी इन चीज़ों को पहचानो।

अभ्यास के प्रश्न

1. सही-सही जोड़ो–

सबसे पहले	-	चूने की जुड़ाई से मेहराबें, गुम्बद, मीनारें,
फिर	-	लकड़ी की इमारतें
उसके बाद	-	गुफा रूपी इमारतें
उसके बाद	-	पत्थर के टुकड़ों से बनीं इमारतें।

2. सामन्तों के समय के कारीगर मंदिरों में मेहराबें और गुम्बद क्यों नहीं बनाते थे?
3. लकड़ी का महल और भाज की गुफा बनाने में कारीगरों ने एक चीज़ बदली–एक चीज़ पहले जैसी रही। जानते हो क्या? सही विकल्प चुनो - इमारत बनाने की विधि/इमारत की बनावट।
4. "एक पुराना शहर" पाठ में जो मंदिर बना है उनमें ये चीज़ें पहचानो- शिखर, गर्भगृह, मण्डप, अर्द्धमण्डप।